अनुक्रम

भूमिका

पुश्किन के बारे में कुछ शब्द

जीवन और सृजन के चरमोत्कर्ष पर मारे जानेवाले पुश्किन अपने सभी अनुगामियों और उस महान साहित्य के सभी साधकों-महारथियों के लिये, जिनमें लेव तोलस्तोय भी शामिल हैं, मूर्धन्य और सबसे अधिक मेधावी बने रहे, चाहे उन्होंने उनसे कितना ही अधिक लम्बा जीवन क्यों न पाया हो। हम सबके लिये भी वे आज ऐसे ही हैं। सच कहा जाये तो कुछ बढ़कर ही हैं, क्योंकि हमारे समय के पुश्किन उस पुश्किन से अधिक महान हैं जिनसे हमारे पहले की पीढ़ियां उनसे परिचित थी।

विस्सारिओन बेलीन्स्की ने लिखा है –

"पुश्किन उन चिरजीवी और चिर गतिशील व्यक्तियों में से हैं, जो उसी बिन्दु पर स्थिर होकर नहीं रह जाते, जिसपर मृत्यु उन्हें छीन ले जाती है, बल्कि जो समाज की चेतना में निरन्तर विकासमान रहते हैं।"

जिस महान रूसी साहित्य के विश्वव्यापी महत्व को बहुत पहले ही स्थायी तथा निर्विवाद रूप से स्वीकार कर लिया गया है, उसके जन्मदाता और प्रवर्तक, ऐसे कलाकार, जिनकी सृजन प्रतिभा का अब हमारे शत्रु भी कम मूल्यांकन करने का प्रयास नहीं करते, हमारे महान बहुजातीय देश के सबसे लोकप्रिय, चहेते और सबसे अधिक पढ़े जानेवाले कवि हैं।

पुश्किन का चमत्कार तो इस बात में भी है कि वह बुरा लिख ही नहीं सकते थे – उनकी प्रारम्भिक, अनुकरणात्मक कवितायें भी ऐसे स्तर पर रची गयी हैं, बहुधा उन साधनों की सीमा से कहीं आगे हैं जो रूसी काव्यकला को उस समय उपलब्ध थे।

पुश्किन साहित्य के स्वर्णकोश में क्या कुछ जमा हुआ है, इसका अनुमान लगाना आसान नहीं है। इसमें 'येव्गेनी ओनेगिन', 'बोरिस गोदूनोव', 'मछुए का पुरस्कार', प्रेम तथा दार्शनिक विषयों से ओतप्रोत कविताएं, लघु नाटिकाएं, गीत काव्य, 'कप्तान की बेटी' और अन्य गद्य रचनाएं ही नहीं, बल्कि समालोचनात्मक लेख और यात्रा विवरण, इतिहास सम्बन्धी शब्द चित्र और बहुत ही चुस्त शैली में लिखे गये पत्रों के अलावा न जाने और क्या कुछ सम्मिलित है।

जब हम पुश्किन के कृतित्व की चर्चा करते हैं तो 'चमत्कार' शब्द का उपयोग भी अनुचित प्रतीत होता है। "जादू" कहीं अधिक उपयुक्त लगता है, क्योंकि हम भली भांति यह जानते हैं कि "इन देवियों के इस प्रेम पात्र" को हमें स्तम्भित कर देनेवाली कला-चमत्कार प्राप्त करने के लिये निरन्तर कितना अधिक श्रम एवं कड़ी साधना करनी पड़ी होगी।

जब हम पुश्किन की सर्वश्रेष्ठ रचनाओं से रस-विभोर होते हैं, त सचमुच हमारे लिये यह कल्पना करना कठिन होता है कि उन्हें लिख गया है, अर्थात् वे अलग-अलग बिखरे हुए ऐसे शब्द और पंक्ति हैं, जो किसी कलाकार की इच्छा से ही एक स्थान पर खिंच आ है और उन्होंने ऐसा सुन्दर रूप धारण कर लिया है। नहीं, ह ऐसा लगता है मानो ये रचनायें स्वयं जीवन और प्रकृति में इसी तरह विद्यमान थी और उन्हे ज्यों का त्यों वहां से ले लिया गया है।

पुश्किन की आत्मा का वर्तमान की तुलना में भविष्य से कुछ कम सू नहीं जुड़ा हुआ था, वह भविष्य की ओर ललकती थी। वह अप समय में, अपने समकालीनों और अपने वातावरण में जिये, किन्तु सा ही दूसरी पीढ़ियों के साथ भी जीते रहे, हमारे साथ भी जी रहे हैं औ उनके साथ भी जियेंगे, जो हमारा स्थान लेंगे।

पुश्किन की साहित्यिक धरोहर का मूल्यांकन कठिन है। यह अकेली बेनाव बहुत भव्य ही चोटी नही, बल्कि अनेक शिखरो तथा असंख्य ऊंचे उभारोंवाली शक्तिशाली शृंखला है।

अलेक्सान्द्र त्वार्दोव्स्की

कविताएं

चादायेव के नाम

बहला सके न बहुत समय तक
प्यार, ख्याति के भ्रम औ' आशा,
ये यौवन के रंग छूटे यों
जैसे सपना, भोर-कुहासा।
किन्तु निठुर-निर्मम सत्ता के
जुए तले भी हृदय धधकता
उत्कट चाह, लिये विह्वलता
वह आह्वान राष्ट्र का सुनता।
बेचैनी से राह देखते
आज़ादी के पावन क्षण की,
जैसे करे प्रतीक्षा प्रेमी
प्रिय से निश्चित मधुर मिलन की।
हममें जब तक मुक्ति-ज्वाल है
मन में गौरव का स्पन्दन है,
मेरे मित्र, करें अर्पित सब
राष्ट्र, तुम्हें, जीवन, तन-मन है।
साथी, तुम विश्वास करो यह
चमक उठेगा सुखद सितारा,
रूस नींद से जागेगा ही,
खंडहर पर तानाशाही के
लोग लिखेंगे नाम हमारा।
१८१८

* * *

धीरे-धीरे लुप्त हो गया दिवस उजाला,
नील कुहासा सन्ध्या का छाया सागर पर,
आये आये पवन झकोरा, लहर उछाला
औ' लहराओ तुम उदास-से विह्वल सागर।
दूर कहीं पर साहिल नजर मुझे है आता,
मुझपर जादू करनेवाली दक्षिण धरती,
मैं अनमन बेचैन उधर ही बढता जाता,
स्मृतियों की सुख-लहर हृदय को व्याकुल करती।
अनुभव होता मुझे – भरी हैं आखे फिर से
हृदय डूबता और हर्ष से कभी उछलता,
मधुर कल्पना चिर परिचित फिर आयी घिर के
वह उन्मादी प्यार पुराना पुन मचलता,
आती याद व्यथाये, मैंने जो सुख पाला,
इच्छा-आशाओ की छलना, पीडित अन्तर
आये आये पवन झकोरा, लहर उछाला,
औ' लहराओ तुम उदास-से विह्वल सागर।
उडते जाते पोत, दूर मुझको ले जाना
इन कपटी, सनकी लहरों को चीर भयकर,
किन्तु न केवल करुण तटो पर तुम पहुचाना
मातृभूमि है जहा, जहा है धुध निरन्तर,
वहीं कभी तो धधक उठी थी मेरे मन मे
प्यार-प्रणय, भावावेशो की पहली ज्वाला,
कला-देविया छिप-छिप मुस्कायी आगन मे
था यौवन को मार गया तूफानी पाला,
जहा खुशी तो लुप्त हुई थी कुछ ही क्षण मे
हृदय चोट ने दर्द सदा को ही दे डाला।
तभी-तभी तो मातृभूमि तुमसे भागा था
नये-नये अनुभूति-जगत का मैं दीवाना,
भागा तुमसे दूर हर्ष-सुख के अनुगामी
यौवन मित्रो मे था जिनको कुछ क्षण जाना,

जिनकी मुस्कियो, रग-रलियो के चक्कर मे पड
अपना सब कुछ, प्यार हृदय का चैन लुटाया,
खोयी अपनी आजादी, यश, मान गवाया
छला गया जिन रूपसियो से, उन्हे भुलाया,
मेरे स्वर्णिम यौवन मे जो लुक-छिप आयी
उन सखियो की स्मृतियो का भी चिह्न मिटाया
किन्तु हृदय तो अब भी पहले सा घायल है
मिला न कोई मुझको दर्द मिटानेवाला,
मरहम नही किसी ने रखा, इन घावो पर
आये आये पवन झकोरा, लहर उछाला
औ' लहराओ तुम उदास-से विह्वल सागर।
१८२०

* * *

उडते हुए जलद , दल-बादल बिखरे जाते सारे
ओ सतप्त, उदास सितारे, ओ सध्या के तारे!
रजत-रुपहले मैदानो को किरण तुम्हारी करती
काले शृगो मे, खाडी मे रग रुपहला भरती।
ऊचे नभ मे तेरी मद्धिम लौ है मुझे सुहाती
सोये हुए हृदय मे मेरे चिन्तन, भाव जगाती,
याद उदय-क्षण मुझे तुम्हारा, नभ दीपक पहचाने
उस धरती पर जहा हृदय बस, सुख-सुषमा ही जाने,
जहा घाटियो मे अति सुन्दर, सुघड चिनार खडे है
जहा ऊघती कोमल मेहदी, ऊचे, सरो बडे हैं,
जहा दुपहरी मे लहरो का मन्द, मधुर कोलाहल
वही, कभी पर्वत पर अपना हृदय लिये अति आकुल,
भारी मन से मैं सागर के ऊपर रहा टहलता
नीचे, घाटी के प्रकाश को तम जब रहा निगलता,
तुम्हे ढूढने को उस तम मे युवती दृष्टि घुमाये
तुम उसके हमनाम यही वह सखियो को बतलाये।

१९२२

रात

तेरे लिये रसीली, प्रेम-पगी वाणी मेरी
अर्ध-रात्रि का मौन, निशा जो मेंढे अंधेरी,
निकट पलग के मोम गल रहा, जलती है बाती
झर-झर झर-झर निर्झर-सी कविता उमडी आती,
डूबी हुई प्रणय मे तेरे, बहती सरिताये
चमक लिये तम मे दो आखे सम्मुख आ जाये,
वे मुस्काये, और चेतना सुनती यह मेरी
मेरे मीत, मीत प्यारे तुम प्यार करू... मैं हू तेरी... हू तेरी

१९२३

सागर मे

ओ, आज़ाद तरंगित सागर, विदा, विदा !
मुझे दिखाते हो तुम अन्तिम रूप-छटा,
अपनी नीली लहरें मेरी ओर बढा
झलमल करते हो गर्वीली सुन्दरता।

एक मित्र की तरह दुखी तेरी मरमर
और विदा क्षण मे मानो मनुहार मधुर,
शोकाकुल कोलाहल, तेरा शोर प्रबल
बार आखिरी सुनता हू यह गरज प्रवल।

अपने मन मे मैं असीम-सी चाह लिये
तीर-तटो पर तेरे घूमा हू अक्सर,
धुधले-धुधले भावों से ले व्याकुल उर
और कसकते सपनों की पीडा लेकर।

बहुत भली लगती थी तेरी हुकारें
दबी-घुटी-सी ध्वनिया औ' स्वर अतल गहन,
सन्ध्या के घिर आने पर नीरवता भी
और क्रोध मे आने पर गर्जन-तर्जन।

मामूली-सी नाव किसी मछियारे की
तेरी इच्छा औ' अनुकम्पा के बल पर,
बडे मज़े से बहे तरगो मे, जल मे,
पर सहसा यदि मचलो गुस्से मे आकर
कितने ही जलयान डुबो डालो पल मे।

चाहा तेरे सूने, इस निश्चल तट को
छोड़ू सदा सदा को, किन्तु न कर पाया,
तुझे बधाई दू मन के उद्गारो मे,
तेरी तुग तरगो को शोभित कर दू
अपनी कविता, रचना के उपहारो से।

तू ने देखी राह, पुकारा ... मैं जजीर न तोड सका
बहुत हृदय ने चाहा व्यर्थ हृदय हुलसा,
किसी प्रबल अनुराग मोह मे बधा-बधा
मैं तो सागर तट पर ही बस, खडा रहा।

मैं इसका अफसोस करू क्यो ? और किधर
अब मेरी आजाद, मस्त किस ओर डगर ?
तेरे इस नीले-नीले वीराने मे
एक चीज ने बाधा मेरा हृदय, मगर।

है इसमे चट्टान, समाधि है एक अमर
जहा सो रही शीतल निद्रा मे दबकर,
वे स्मृतिया जो छू आयी थी ख्याति-शिखर
हुआ जहा पर नेपोलियन का खत्म सफर।

वहा यातनाओ मे उसने दम तोडा
और कुछ समय बाद घिरा तूफान नया,
एक अन्य मेधावी ने हमको छोडा
एक बडा युग-चिन्तक जग से चला गया।

उसके शव पर बेहद रोई आजादी
विजय-मुकुट वह जग मे छोड गया नायक,
ऊचा गर्जन करो, व्यथित होकर चीखो
ओ सागर, वह तेरी लहरो का गायक।

तेरा बिम्ब हृदय पर उसके अकित था
और आत्मा उसने तेरी ही पाई,
तेरी तरह प्रबल, वह बन्धन मुक्त रहा
तेरे जैसी मिली भिन्नता, गहराई।

शून्य हुआ सागर   कहा तुम अब मुझ को
बोलो सागर, कहा मुझे ले जाओगे ?
लोगो का है भाग्य एक सा सभी जगह,

धुंधला-धुंधला हरम हुआ था रोशन औ' उजला जिसमें
क्या उसको भी गया भुलाया, दिया गया है यहा विम
या कि मारीया, जारेमा थे बिल्कुल झूठे हैं जिस्में
या कि रचा था उन्हें किसी ने मधुर कल्पना पल-पल

या कि सुखद सपने ने मानो अन्धकार के मन्थन में
कोई बिम्ब बनाया, कोई कल्पित चित्र किया तैयार,
कोई परछाईं या छाया जिसको मिटना हो पल में
वह धुंधला आदर्श रूप था जिसमें कोई सत्य न सार?

१८२४

*** के नाम

मुझे याद है वह अद्भुत क्षण
जब तुम मेरे सम्मुख आईं,
निर्मल, निश्छल रूप छटा-सी
जैसे उड़ती-सी परछाईं।

घोर उदासी, गहन निराशा
जब जीवन में कुहरा छाया,
मन्द, मृदुल तेरा स्वर गूंजा
मधुर रूप सपनों में आया।

बीते वर्ष, बवंडर टूटे
हुए तिरोहित स्वप्न सुहाने,
किसी परीक्षा रूप तुम्हारा
भूला, वाणी, स्वर पहचाने।

सूनेपन, एकान्त-तिमिर में
बीते, बोझिल, दिन निस्सार,
बिना आस्था, बिना प्रेरणा
रहे न आंसू, जीवन, प्यार।

लाया घातक राल और वह शाखायें भी
जिन पर पत्ते सूखे-सूखे, मुरझाये थे,
और दास के पीले-पीले विकृत मुख पर
ठण्डे स्वेद कणों के झरने वह आये थे।

ले आया, लेकिन दुबलाया और कुटी में
फटी दरी पर, जा बिल्कुल बेजान गिरा वह,
चरणों में ही उस अजेय स्वामी के अपने
तड़प-तड़प कर ऐसे ही असहाय मरा वह।

उस राजा ने, उस स्वामी ने उसी जहर से
जहरीले औ' आज्ञाकारी तीर बनाये,
और मृत्यु के दूत बने थे जो शर घातक
निकट, दूर, सब ओर, सभी वे तीर चलाये।

१८२८

• • •

जार्जिया के गिरि-टीलों को रात्रि-तिमिर ने घेरा है
औ अरागवा नदी सामने कल-छल शोर मचाती है
बेशक दुख में डूबा-डूबा, पर हल्का मन मेरा है
क्योंकि तुम्हारी याद उदासी लाती मन तड़पाती है।
एक तुम्हारे सिर्फ तुम्हारे कारण व्यथा उदासी है
और न कोई पीड़ा मुझको, चिन्ता नहीं सताती है
फिर से मेरी तप्त आत्मा पुनः प्यार की प्यासी है
क्योंकि प्यार के बिना रह सके हाय, न यह कर पाती है।

१८२९

और सुबह की इसी बर्फ पर स्लेज बढ़ाये
मेरी प्यारी, खूब तेज घोड़ी दौड़ाये,
जाये हम सूने खेतो मे, मैदानो मे
कुछ पहले जो बहुत घने थे, उन्ही वनो मे,
पहुचे ऐसे वहा, जहा है नदी-किनारा
मेरे मन की ललक, मुझे जो बेहद प्यारा।

१८२६

• • •

मैंने प्यार किया है तुमको और बहुत सम्भव है अब भी
मेरे दिल मे इसी प्यार की सुलग रही हो चिंगारी
किन्तु प्यार यह मेरा तुमको और न अब बेचैन करेगा
नही चाहता इस कारण ही अब तुम पर गुजरे भारी।

मैंने प्यार किया है तुमको, मूक-मौन रह आस बिना
हिचक, झिझक तो कभी जलन भी मेरे मन को दहकाये
जैसे प्यार किया है मैंने सच्चे मन से डूब तुम्हें
हे भगवान, दूसरा कोई, प्यार तुम्हें यो कर पाये!

१८२६

• • •

चाहे घूमू मै सडको पर कोलाहल मे
चाहे जाऊं मैं गिरजे मे भीड़ जहा पर
चाहे बैठू मस्त युवाजन की टोली मे
कुछ विचार तो सदा लिये रहते मन मे घर।

मै कहता हू खुद से वर्ष उड़े जाते है
लोग यहा पर हमको जितने पड़े दिखाई
सबको ही तो जाना होगा यम के द्वारे
और किसी की घड़ी निकट है अन्तिम आई।

इसी तरह सारी अनुभूति को कातुर करती है
विद्रोही नर इसान मन से मना की लिए जाते हैं,
इसी तरह से आज और कारोबार पीड़ा सहन करे
और तमाशा तुम्हें विवश आते कष्टों पर सहन करें।

१८२६

शोक-गीत

रंग-रलियों के वे उन्मादी वर्ष न अब तो शेष रहे
उतरा नशा खुमार बचा, मन पर धुंध, बोझ अपार रहे,
किन्तु पुरानी मदिरा जैसे और तेज हो जाती है
उसी तरह बीते अतीत की पीड़ा अधिक सताती है,
है उदास जीवन-पथ मेरा, दुख-दर्दों से नाता है
अधिक भयानक बन भविष्य का सागर झलक दिखाता है।

सुनो दोस्तो, किन्तु न फिर भी, चाह मृत्यु का मैं वन्दन
जीना चाहू, ताकि सहू दुख, करू हृदय मन्थन, चिन्तन,
और जानता हू मैं इतना, व्यथा, कष्ट, चिन्ताओं में
हर्ष और सुख मुझे मिलेगा, जीवन की विपदाओं में,
और अभी सुख-स्नान कभी हो मैं मस्ती में गाऊगा
मधुर कल्पना-स्वप्न सजोकर, उनपर नीर बहाऊगा,
यह सम्भव है, करुण अन्त जब निकट बहुत आ जायेगा
मुझे विदा कहने को फिर से प्रेम-प्रणय मुस्कायेगा।

१८३०

* * *

सुघड सुडौल सुन्दरी तुमको
मैं जब बाहों में भरकर,
हुलस प्यार के शब्द मधुरतम
कहता हू भावुक होकर,

मूक-मौन रह, भुज-बन्धन से
मुक्त लचीला तन करती,
व्यंग्यपूर्ण मुस्कान लिये तब
दूर तनिक मुझ से हटती।
बहुत बेवफ़ा कभी रहा हूं
किस्से ऐसे तुमको ज्ञात,
बड़ी बेरुखी से सुनती हो
इसीलिये तुम मेरी बात
कोसे बिना न मैं रह पाता
अपना अपराधी यौवन,
गुप-चुप रातों, बाग़ीचों में
विकल प्रतीक्षा, मधुर मिलन।
मैं रहस्यमय काव्य-सुरों को
कोसूं धीमे प्रेमालाप,
भोले मन की बालाओं का
प्रेम, अश्रु, फिर पश्चाताप।

१८३०

• • •

क्या रखना है अर्थ तुम्हारे लिये नाम मेरा?
डूबा हुआ उदासी में लहरों का विह्वल स्वर
कहीं दूर के तट पर जैसे जाता हहर बिखर
गूंजे वन में रात्रि समय ध्वनि खो जाती जैसे
मेरा नाम तुम्हारी स्मृति में मिटे कभी वैसे

लिखे गये हों स्मृति के पट पर जैसे कुछ अक्षर
उस भाषा में जिसे समझना, पढ़ना हो दुष्कर
उसी तरह से मुड़े-मुड़ाये, जर्जर कागज पर
चिह्न नाम छोड़ेगा मेरा धुंधला-सा नश्वर।

क्या रखा है उसमें ? जिसकी स्मृति ने सिरजा
नयी भावना, नये प्यार का जब ही कुसुम खिला,
सा न सकेगा तेरे मन में यह स्मृति प्यारी
बन न सकेगी उससे कोमल, पावन चिनगारी।

किन्तु उदासी और व्यथा जब मन को आ घेरें
नाम याद कर लेना मेरा तुम धीरे-धीरे,
कहना खुद से — याद किसी को मैं अब भी आती
किसी हृदय में मैं बसती, स्मृति मेरी धड़काती।

१८३०

भूत-प्रेत

उमड़े बादल, घुमड़े बादल
रजनी धुंधली, नभ धुंधला,
उड़ते हिम को कुछ चमकाती
धुंधली-धुंधली चन्द्रकला।
घोड़ा-गाड़ी दौड़ी जाती
घण्टी बजती है टन-टन..
इन अनजाने मैदानों में
कांप-कांप उठता है मन।

"वाहक, घोड़े तेज करो तुम "
"साहब, इनमें शक्ति नहीं,
आंखें हिम से मुंदती मेरी
मार्ग न दिखता मुझे कहीं,
मैं बेबस हूं, हम पथ भटके
नहीं समझ में कुछ आता,
लगता कोई भूत-प्रेत ही
हमें सताता, भटकाता।

"वह देखो, वह करे तमाशे
फूक मार, थूके मुझ पर,
जहा खड्ड, विदवा घोड़े को
ले जाता है वही उधर,
वह पथ का खम्भा विशाल बन
क्षण भर को सम्मुख आया,
चिंगारी-सा चमका, तम में
लुप्त हुआ बनकर छाया।"

उमड़े बादल, घुमड़े बादल
रजनी धुधली, नभ धुधला,
उड़ते हिम को कुछ चमकाती
धुधली-धुधली चन्द्रकला।
चक्कर काट-काट हम हारे
बन्द हुआ घण्टी का स्वर,
घोड़े रुके "वहा क्या सम्मुख ?" –
'कौन कहे, वह ठूठ, भेड़िया ?
काम न करती जरा नज़र।

भीगे रोये बाल-बबरर
घोड़े नथुने फिरकाये,
भूत भागता मग में उगले
जलते नयन नज़र आये,
घोड़े फिर से लगे दौड़ने
घण्टी टन-टन बजती है,
लगता यह विस्तार बर्फ का
बस भूतों की बस्ती है।

क्षीण चादनी में चन्दा की
वे सब चीजें बिखराये,
पलभर वे उड़ते पर्णों सम
भूत प्रेत चक्कर खाये

क्यों मुझको ऐसी बेचैनी,
क्यों है ऐसा आकुल मन?
सूनी, ऊब भरी घूम घूम का
क्या मतलब है बतलाओ,
क्या बीते दिन की चुगली या
निन्दा, इतना समझाओ
क्या कुछ चाह रही हो मुझसे
क्या अनुरोध तुम्हारा है?
यह पुकार-आह्वान, कि भावी
कल की ओर इशारा है?
चाह यही है केवल मेरी, मैं
तो समझ तुम्हें पाऊं,
अर्थ निहित है जो कुछ तुममें
मैं उसकी तह तक जाऊं

१८३०

विदा

मन ही मन दुहरता हू मैं प्रिय बिम्ब तुम्हारा
ऐसा साहस करता हू मैं अन्तिम बार
हृदय-शक्ति से मैं अपनी कल्पना जगाकर
सहमे, बुझे-बुझे वे सुख के क्षण लौटाकर,
मधुरे, मैं करता हू याद तुम्हारा प्यार।

वर्ष हमारे आगे आते, बदल रहे है
बदल रहे वे हमको, सब कुछ बदल रहा,
अपने मन के लिये लिये तुम तो ऐसे
मानों किसी वक्ष का मोह ग्रस जैसे,
और तुम्हारा मौन समय मे शून्य हुआ।

तुम अतीत को मित्र करो, स्वीकार करो
मेरे मन की कर लो अगीकार विदा,
विदा जिस तरह से हम विधवा को करते
बाहो मे चुपचाप मित्र को ज्यो भरते,
निर्वासन से पहले लेते गले लगा।

१८३०

कवि से

लोक-प्यार की ओर न देना तुम, मेरे कवि, कोई ध्यान
बहुत समय तक नही रहेगे ऐसे मधुर प्रशसा-क्षण,
नीरस जन-उपहास सुनेगे, कटु बाते भी तेरे कान
किन्तु तुम्हे तो दृढ रहना है, रखना है स्थिर अपना मन।

तुम तो हो सम्राट—अकेले रहो, राह पर मुक्त बढो
उसी दिशा मे, जिधर बुद्धि आज़ाद तुम्हारी ले जाये,
अपनी प्यारी सूझ-बूझ के अद्भुत, ऊचे शिखर चढो
तुम उदात्त श्रम का फल पाओ, भाव न यह मन मे आये।

पुरस्कार-फल तेरे भीतर और पारखी तुम्ही बडे
तेरे श्रम पर तेरी ही तो सबसे पैनी नज़र पडे,
ओ कठोरतम कलाकार, क्या तुमको खुद से है सन्तोष?

तुमको है सन्तोष? बला से, कला तुम्हारी अगर खले
कोई उस वेदी पर थूके, दीप तुम्हारा जहा जले,
या फिर कोई चचल मन से व्यर्थ तुम्हे ही दे कुछ दोष।

१८३०

प्रतिध्वनि

सूने वन-जगल मे कोई रोये-चीखे जब हैवान
गूंज उठे यदि तुरही कोई या आये भारी तूफ़ान,
कही किसी टीले के पीछे गाये युवती मधुमय गान –
सब ध्वनियों का शून्य पवन मे
निर्मल-निर्मल नील गगन मे,
तुम देती उत्तर, प्रतिदान।

गूंज-गरज मेघो की सुनती, जिनमे बहरे होते कान
वात-बवडर को सुनती हो, लहरो की हलचल, तूफ़ान
तुम गावो के चरवाहो की हाक, शोर, सुनती आह्वान –
तुम सबको ही देती उत्तर
किन्तु नही पाती प्रत्युत्तर,
तेरा, कवि का भाग्य समान[1]

१८३१

पतझर

कुछ अंश

क्या क्या भाव न तब आते है ऊंघ रहे मेरे मस्तक मे?

देर्जाविन

१

अक्तूबर आरम्भ हो गया, पातहीन शाखाओं से
गिरा रहे है अन्तिम पत्ते वृक्षों के झुरमुट जगल,
छोड़ी ठण्डी सास शिशिर ने, राह-बाट ठिठुरी, सिकुडी
चक्की के पीछे नद-नाला, अब भी बहता है छल-छल
किन्तु जम गयी ताल-तलैया, और पड़ोसी अब मेरा
जल्दी-जल्दी तैयारी कर, वह शिकार को है जाता,
दूर-दूर तक धरती कापे, इस उन्मादी मौज मे
शोर, भूक से कुत्तों की जगता व्याकुल वन, वनांता।

२

यह मेरे मन की ऋतु प्यारी; नहीं मुझे मधुमास रुचे
जब हिम गलता, जब बदबू औं' सभी ओर कीचड फैले,
मैं रोगी-सा, अति उदास-सा, सूनेपन की तुलना मे
जाडे की सुखमय स्मृतियो मे बरबस मन मेरा डूबे,
मुझे धवल हिम अच्छा लगता और चादनी खिली हुई
साथ स्लेज मे बैठी प्रेयसी, घोडा हो मानो उडता,
फर मे लिपटी, नर्म-गर्म-सी देह सटी प्यारी-प्यारी
और कापता हुआ दहकता हाय स्पर्श उसका करता!

३

बडा मजा आता है तब तो स्केट पहन नद-नदियो की
दर्पण जैसी सतहो पर जब मुग्ध भाव से हम फिसले,
सचमुच बडी अनूठी, सुखमय शान-बान है जाडो की
फिर भी अच्छा होगा मन से हम स्वीकार अगर कर ले,
बर्फ रहे छ मास, माद का भालू भी उससे ऊबे
नही निरन्तर सैर-सपाटे सुन्दरियो सग कर सकते,
या कि दोहरे शीशोवाली खिडकी के पीछे बैठे
तापे अगीठी औं' मन मे सूनापन अनुभव करते।

४

अरी, ग्रीष्म ऋतु सुन्दर! तुझको मैंने प्यार किया होता
अगर न होती उमस, धूल, मक्खी-मच्छर के दल-बादल,
दिल-दिमाग की सभी शक्तियो का रस सोख सकल लेती
हमे सताती, जैसे प्यासी धरती पीडित हो बिन जल,
प्यास बुझा ले किसी तरह, कर ले अपने को ताजादम
केवल भाव यही हमको करता रहता विह्वल प्रतिपल,
आता जाडा याद, सुरा, पूडो से जिसको विदा किया
आइसक्रीम खा, ठण्डा जल पी, श्राद्ध मनाते तृषा-विकल।

५

अन्तिम शिशिर दिनों को बहुधा लोग-बाग कोसा करते
मेरे प्यारे पाठक मुझको, पर प्यारी लगती पतझर,
शान्त-शान्त सौन्दर्य और हल्की-हल्की-सी रूप छटा
किसी कुटुम के बाल उपेक्षित-सी लगती मुझको मनहर,
साफ-साफ कहता मैं तुमसे, मुझे वर्ष की ऋतुओं में
केवल पतझर ही रुचती है बहुत सुखद है, वह सुखकर,
मैं तारीफो के पुल बाधू, नही मुझे इसकी आदत
किन्तु पा लिया मैने इसमें कुछ मन के अनुरूप, मधुर।

६

यह ऋतु क्यो है मुझे सुहाती कैसे यह समझाऊ मैं?
शायद जैसे कभी यक्ष्मा की रोगी लडकी जचती,
निश्चित उसकी मृत्यु, मगर वह क्रोध-रोष के बिना सतत
चुप रह अपने अन्त समय की मानो राह रहे तकती,
उसके मुरझाये होठो पर स्मित-रेखा भी खिल उठती
मुह बाये कर रही प्रतीक्षा, कब्र, न वह अनुभव करती,
उसके गालो पर तो हमको अब भी है लाली दिखती
वह जिन्दा है आज, अचानक अगले दिन, लेकिन, मरती।

७

मौसम ऊब-उदासी के तुम! तुम नयनाभिराम बडे!
तेरी मधुर विदा-सुषमा यह मेरे मन पर छा जाती,
प्यारी लगती मुझे विपुल मुरझाती जाती प्रकृति छटा
लाल-सुनहरे परिधानो मे वन-शोभा मन भरमाती,
पवन-झकोरे वन छाया मे और ताजगी सासो की
लहर-लहरियेदार कुहासा, जब सारे नभ को ढकता,
विरली किरण सूर्य की दिखती, जब पहला पाला पडता
दूर अभी जो जाडा उसका भय कुछ आतंकित करता।

११

साहस से तब भाव उमड़ कर आन्दोलित मस्तिष्क करे
और तुकें भी उनमे मिलने को मानो दौडी आती,
अगुलिया लेखनी छूती और लेखनी कागज को
बीते क्षण औं काव्य-पक्तियां मानो धारा बन जाती,
ऐसे ही गतिहीन पोत गतिहीन तरगो मे ऊघे,
किन्तु, अरे लो! सहसा हलचल नाविक वहा दौड आये
दौड-धूप हो नीचे-ऊपर, पाल हवा मे लहराये
और चीरता प्रबल तरगे पोत सतत बढता जाये।

१२

बढता जाये। हम लेकिन किस ओर बढे?

१८३३

• • •

मेरी प्यारी, वह क्षण आया, चैन चाहता मेरा मन,
बीत रहे घण्टो पर घण्टे, सतत उडे जाते हैं दिन,
और इन्ही के साथ हमारा, खत्म हो रहा है जीवन,
हम दोनों जीने को उत्सुक, किन्तु आ रहा निकट निधन,
इस जग मे सुख-खुशी नही है, किन्तु चैन है, चाह यहा,
एक जमाने से मन मेरा, मुझे खीचता दूर, वहा—
जहा बैठकर सृजन करू मैं और चैन मन का पाऊ,
दास सरीखा थका हुआ मैं, सोचू, भाग कही जाऊ।

१८३४

बादल

वात-बवडर बिखर चुका है, गगन हुआ निर्मल,
नीले नभ मे दौड रहे अब एक तुम्ही बादल,
हर्षमगन हो उजला-उजला दिन है मुस्काया,
उसपर केवल डाल रहे हो, तुम ही दुख-छाया।

कुछ पहले नभ ओर-छोर तक, तुम ही थे छाये
कड़क, कौंध बिजली की तेरी तुमको धमकाये,
थी रहस्य से भरी हुई तब तेरी घन-वाणी
तप्त धरा की प्यास बुझायी, बरसाकर पानी।

बस, काफी है, अब तुम जाओ! वह क्षण बीत गया
धरती सरस हुई, झंझा का, अब बल रीत गया,
और पवन जो मन्द-मन्द, तरु, पत्ते सहलाये
शान्त गगन से तुझे उड़ा निश्चय ही ले जाये।

१८३५

• • •

खोया-खोया-सा ख्यालों में दूर नगर से जब जाता
कब्रिस्तान आम लोगों का, नज़र सामने तब आता,
जंगले, स्मरण-शिलायें, दिखती वहां कई सुन्दर कब्रें
जहां राजधानी के मुर्दे, धीरे-धीरे गले, सड़े,
और पास ही दलदल में हैं, जैसे-तैसे सटे हुए
मानो थोड़े से भोजन पर ढेरों पेटू डटे हुए,
व्यापारी, नौकर सरकारी, वहां मकबरे हैं उनके
घटिया-सी नक्काशी, सज्जा ऐसे लक्षण हैं जिनके,
उनके ऊपर गद्य-पद्य में लिखा हुआ विस्तृत वर्णन
उनके काम-काज, पद-रुतबे, उनकी नेकी का अंकन,
कामदेव की मूर्ति बहाती नीर नारियों के छल पर
वहां कलश गायब स्तम्भों से, हुए चोर सम्पत लेकर,
और पास में नूतन कब्रें, राह देखती मुंह बाये
अगले दिन कोई अवश्य ही, उनमें रहने को आये,
देख सभी यह, धुंधले-धुंधले भाव हृदय में कुछ आते
घोर उदासी, शोक-रोष यों हावी मुझपर हो जाते—
जी में आता थूकूं यहां पर, दूर कहीं मैं जाऊं भाग
किन्तु दूसरी ओर मुझे है तब कितना अच्छा लगता

पतझर की सन्ध्या में छाई होती है जब नीरवता,
तभी घूमने मैं जाता हूँ, जहाँ गाँव का कब्रिस्तान
मृतक चैन से जहाँ सो रहे, पाकर चिर निद्रा वरदान,
बिना सजावट की कब्रें हैं और वहाँ पर है विस्तार
रात्रि-तिमिर में सहमे-सहमे, वहाँ न आते चोर-चकार,
काई ढके पुराने पत्थर, पाषाणों के निकट, पास में
गुजरे जब देहाती कोई, करे प्रार्थना औं' उसाँस ले,
वहाँ सजावट, नहीं कलश भी सिर-शिला के आडम्बर
बिना नाक की कन्या-देवियाँ, परी-मूर्ति टूटी, जर्जर,
उनकी जगह बलूत बड़ा-सा, छाया कब्रों के ऊपर
मन्द पवन में हिलता-डुलता, करता रहता है मरमर

१८३६

• • •

Exegi monumentum*

निर्मित किया स्मारक अपना, नहीं रचा, पर हाथों से
इसकी ओर सदा लोगों की भीड़ उमड़ती आयेगी,
वहीं शान से वह गर्वीला अपना शीश उठाये है
और विजय-मीनार सिकन्दर की उससे शर्मायेगी।

नहीं पूर्णतः कभी मरूँगा, मेरी पावन वीणा में
जीवित रहे आत्मा मेरी, तन, मिट्टी सड़ जाने पर,
जब तक होगा इस दुनिया में, कहीं एक कवि या शायर
तब तक मेरी ख्याति रहेगी, इस धरती पर अजर-अमर।

विस्तृत रूस देश में मेरी, दूर-दूर चर्चा होगी
और यहाँ की हर भाषा में, गूँज उठेगा मेरा नाम,
गर्वीले स्लावों के बेटे, फिन, औं' अब अनपढ़ तुंगुस
याद करेंगे मुझको कल्मिक, स्तेपी में जिनका घर, धाम।

---

* "स्मारक बनाया मैंने" (लातीनी)। – सं०

इसीलिये होगा युग-युग तक लोगो में मेरा सम्मान
क्योंकि सदा अपनी वीणा पर छेड़ी प्रेम-प्यार की तान,
क्योंकि हमारे निर्मम युग में गाया आज़ादी का गान
और किया निर्दोषों के हित क्षमा-याचना का आह्वान।

विजय-माल की चाह न करना, आघातों से मत डरना
केवल ईश्वर की इच्छा पर केन्द्रित करना अपना ध्यान,
लोक-प्रशंसा और भर्त्सना, मत इस चक्कर में पड़ना,
मूढ़-मूर्खों की बातों पर कभी न देना अपना कान।

१८३६

खंड-काव्य
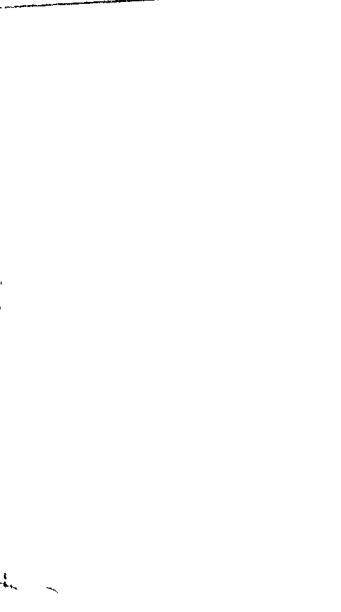
जिप्सी

एक भीड़-सा शोर मचाता जाता है
बेसाराबिया में, वह यायावर जिप्सी-दल
फटे तम्बुओं में सब डेरा डालेंगे
वहाँ, जहाँ पर नदी बह रही है कल-कल।
आज़ादी-सा खुशी भरा यह रात्रि-शिविर
नींद शान्त है इनकी नीले गगन तले,
कालीनों से अर्ध-ढकी गाड़ियाँ खड़ी
और उन्हीं के बीचोंबीच अलाव जले
यहाँ बड़ा परिवार जमा, भोजन पकता
घोड़े चरते, वहीं, निकट मैदान हरा,
तम्बू के ही पास पालतू भालू भी
आज़ादी से, मस्त धूल में लोट रहा।
स्तेपी में तो जैसे जीवन धड़क रहा
यहाँ सुखी जिप्सी परिवारों की हलचल,
सुबह बढ़ेंगे ये आगे, ललनायें गायें,
बच्चे चंचल शोर मचाते जायेंगे
ठोक-पीट कुछ होगी, घन गुंजायेंगे,
किन्तु अभी खानाबदोश इन लोगों पर
हुआ नींद का जादू, सन्नाटा
गहरी नीरवता में
और हिनहिनाना
नहीं कहीं -

1

चलता,

बूढ़ा

मैं सुन, गान सिखाओ तुम इस लाबू मे
सुबह, शाम सब, यहीं, हमारे ही सग मे
फिर तुम जैसा भी चाहो निर्णय करना
रहना चाहो रहना, जाना तुम करना।
रूखा-सूखा जो हम खायें, तुम खाओ
मिले हमें जो कपड़ा-लत्ता, तुम पाओ,
हो यदि निर्णय रहो हमारे ही सग मे
हो जाना सम्पन्न हमारे जीवन से
निर्धनता, आवारापन, बिन बन्धन से,
किन्तु सुबह, शाम, जी चाहे हम चल देंगे
साथ हमारे, तुम भी सब के सग चलना
जो भी चाहो, तुम अपना धंधा चुनना
गाने गाओ, टूट-फूट जोड़ा गढ़ना
या ले भालू गाव-गाव मे तुम फिरना।

अलेको

साथ रहूगा तुम लोगो के यह निर्णय।

ज़ेम्फीरा

मेरा बनकर सदा रहेगा अब यह तय
नहीं छीन पायेगा कोई प्रियतम, मीत प्रणय,
किन्तु हो चुकी देर दूज का चाद ढला,
मैदानों के ऊपर सब दिशि तम फैला,
और नींद अब मुझको बरबस रही सुला

निर्जन जो मैदान हुआ था अब फिर से
उसे अनेको ताक रहा था दुखी-दुखी,
क्यो उदास मन उसका, दुख का क्या कारण
पूछे मुद से, किन्तु न यह हिम्मत उसकी,
कृष्णलोचनी जेम्फीरा थी सग उसके
वह बिल्कुल आज़ाद, मुक्त था बन्धन से,
प्यारा-प्यारा सूर्य रश्मिया मधुर, सुखद
लुटा रहा था ऊपर से, नभ-आगन से,
क्यो उदास है क्यो व्याकुल उसका मन है ?
किस चिन्ता मे डूबा, वह यो अनमन है ?

विहग रहे आज़ाद, न चिन्ता, श्रम करता
जहा देर तक बसे, न ऐसा घर रखता,
लम्बी राते, सो शाखा पर सुख पाता
और सुबह जब सूर्य गगन मे आ जाता,
तब मानो आदेश ईश का वह सुनकर
चौक जागता और चहक गाना गाता।
जब वसन्त की सुन्दरता, सुषमा लुटती
लुप्त ग्रीष्म की तपिश, उमस जब हो जाती,
कुहर-कुहासा, बूदा-बादी, धुध, घटा
मौसम बुरा-बुरा, जब पतझर ले आती—
लोग उदासी, सूनापन अनुभव करते
किन्तु विहग तब दूर कही उड जाता है,
नील समुन्दर पार, क्षेत्र मे गर्म कही
वह वसन्त आने तक समय बिताता है।

वह स्वतन्त्र, निश्चिन्त विहग के ही जैसा
वह मौसम का पक्षी, वह निर्वासित था,
नही कही पर पाया नीड भरोसे का
बधे, टिके जीवन से रहा अपरिचित था।
जिधर चल पडा, उसी दिशा मे राह बनी
जहा रात आ घिरी, बसेरा वही किया,

सुबह हुई, जागा तो ईश्वर इच्छा को
उसने अपना वह सारा दिन सौंप दिया,
उसके मन का चैन और आराम उस का
जीवन-चिन्ता से अनजाना बना रहा,
किन्तु कभी तो दूर कहीं जगमग करता
ख्याति-सितारा, प्यारा मन भरमाता था,
कभी-कभी सुख-वैभव का, रंग-रलियों का
बरबस भाव उमडकर मन में आता था।
लेकिन उसके एकाकी जीवन-नभ पर
मेघ, बवंडर भी घिर आते थे अक्सर,
पर वह बरखा-बारिश में भी उसी तरह
सोता था निश्चिन्त कि जब निर्मल अम्बर,
वह किस्मत की अंधी, कपटी ताकत की
करता हुआ उपेक्षा, जीता जाता था,
पर मेरे भगवान, आत्मा में उसकी
चाहों का कैसा रेला बल खाता था,
उसके व्यथित हृदय में, उसके अन्तर में
आवेशों का था कैसा तूफान भरा।
बहुत समय से, बहुत दिनों तक क्या उनको
वश में किया? नहीं, जागेंगे, ठहर जरा!

जेम्फीरा

मेरे मित्र, कहो, क्या तुमको रंज नहीं
उसका, जो कुछ सदा-सदा को छोड़ दिया?

अलेको

लेकिन मैंने क्या छोड़ा?

ज़ेम्फ़ीरा

अपना वतन, लोग अपने, औ शहर-नगर
यह सब कुछ ही, कम है क्या?

अलेको

दुख इसका क्या हो सकता?
काश जान तुम यह सकती,
काश, कल्पना कर सकती!
कैसी घुटन वहा पर है, उन नगरो मे!
रेल-पेल लोगो की, औ भारी जमघट
नही पहुचता उन तक मधुमय मधुर पवन
पुष्प-सुरभि जब फूले सुन्दर वन-उपवन
उन्हे प्यार से लज्जा, चिन्तन मे डरते
और तिजारत आजादी की वे करते,
अपने आराध्यो के सम्मुख झुक जाये
बदले मे धन-दौलत, जजीरे पाये
क्या कुछ छोडा और तजा है क्या मैने?
बस, विश्वासघात की पीडा, मन-बन्धन
दौड-धूप का, धक्का-पेल का पागलपन
चमक-दमक से ढका हुआ लज्जित जीवन।

ज़ेम्फ़ीरा

किन्तु वहा पर ऊचे-ऊचे महल खडे
रग-बिरगे, जहा-तहा, कालीन पडे,
खेल-तमाशे वहा, दावते क्या कहने!
वहा लडकिया कपडे भी बढिया पहने!

अनेको

ऐसे जलनों और खुशी के क्या माने ?
मज़ा भला क्या, लोग प्रेम में अनजाने,
और लड़कियो तुम सो ही सबसे बढ़कर,
बिना हार-सिंगार, बिना भूषण सुन्दर
बिना मोतियों के तुम मोती-सी मनहर।
मेरे मन की मीत, दगा तुम मत करना
बस, इतना अनुरोध, कपट, छल से डरना,
सुख-दुख, प्यार-मुहब्बत में साथी रहना
महज बनेगा निर्वासन का दुख सहना।

बूढ़ा

बेशक तुमने धन-दौलत में जन्म लिया
फिर भी हममें रमे, प्यार करते हमको,
किन्तु चैन के, सुख के होते आदी जो
नहीं रास आती आज़ादी, उन सब को।
क़िस्सा एक सुना, वह तुम्हें सुनाता हूं
गर्म देश से निर्वासित कोई आया
"छोड़ो देश" यही राजा ने फ़रमाया,
नाम भला-सा था, पर याद न अब आता
याद अगर आ जाता, वह भी बतलाता।
था वह बूढ़ा, उसकी खासी उम्र ढली
पर जवान दिल, और आत्मा बहुत भली,
गाने का गुण उसे मिला अद्भुत, अनुपम
थी आवाज़ कि जैसे निर्झर स्वर, सरगम।
यहां, इसी डेन्यूब नदी पर रहता था
कभी न कड़वी, बुरी बात वह कहता था,
लोग हमारे, सभी प्यार उसको करते
उसकी बातों पर, क़िस्सों पर वे मरते,

नही किसी को कभी सताया, ठुकराया
बच्चे-सा भोला, भेंपू, दुर्बल काया,
लोग पराये उसे खिलाते, बहलाते
उसके लिये शिकार, मछलियां ले आते,
जाडा आता और नदी जब जम जाती
तेज हवा चलती, हिम-आंधी जब आती,
रोयोंवाली खालें उसको पहनाते
देव-तुल्य बूढ़े को ऐसे गर्माते,
किन्तु न इस जीवन का आदी हो पाया,
नही राम निर्धनता का जीवन आया,
हुआ सूखकर कांटा, मुख भी मुरझाया,
और यही कहता, कुछ मैंने बुरा किया
इसीलिये ईश्वर ने दिन यह दिखलाया,
आशा करता रहा, मिलेगी मुक्ति उसे
मुक्त कभी होगा निर्वासित जीवन से,
रहा तड़पता, याद वतन की वह करता
अश्रु बहाता रहा और आहें भरता,
इस डेन्यूब नदी-तट पर दुख बहुत सहे
याद वतन की कभी न भूले, बनी रहे,
कहा मृत्यु से पहले—मेरा व्याकुल शव
दुखी हड्डियां दक्षिण को तुम ले जाना
वही, गर्म धरती में उनको दफनाना,
नही परायी धरती उसको रुची कभी
क्या जीने की बात, न चाहा मरना भी।

अलेको

बुरा भाग्य था ऐसा तेरे बेटों का
अरे रोम, जिसका दुनिया में नाम बड़ा,
जिसने गीत मुहब्बत, देवों के गाये
अर्थ ख्याति का क्या, यह कोई बतलाये!

यह जिप्सो की धुन, बनजारा के गाने
जो पीढी-दर-पीढी जाते पहचाने?
जिनका था यह लोग गवाते कभी जहाँ
घूमे भरे सम्मू में जिप्सी जिसे कहे?

बीत गये दो साल घूमते यो इनके
बहुत चैन जिप्सी जीवन में था मन को
मांगो के मन गिनते, जब जिप्सी आते
बीत मजे में इनके भी यो दिन जाते,
तोड सभ्यता की सब कडिया, सब बन्धन
था स्वतन्त्र, आजाद अनेको का जीवन.
पश्चाताप न कोई चिन्ता थी मन मे
बडा लुत्फ था मस्त, घुमक्कड जीवन में.
वह था पहले जैसा, औ' परिवार वही
मन अतीत के लिये न होता दुखी कभी,
बजारो के जीवन का अभ्यस्त हुआ
डेरो, रैन-बसेरो में मन मस्त हुआ,
नही हडबडी यहा न थी अफरा-तफरी
चैनभरी जिन्दगी बडी इनकी सफरी,
भाषा इनकी थी विपन्न, सगीतमयी
वह भी अब उसके मन के अनुकूल हुई।
भालू, माद, गुफा का जो रहनेवाला
उसके सग ही अब उसने डेरा डाला,
मोल्दावी लोगो के घर के पास कही
किसी गाव मे, या स्तेपी मे दूर कही,
बज उठती डुगडुगी, भीड होती विह्वल
वहा नाचता मोटा भालू उछल-उछल,
बीच-बीच मे गला फाड चिल्लाता वह
गुस्से मे आकर जजीर चबाता वह,

मै यह भी कहा
मेरा बाका जवा
मेरे बुड्ढे खसम मेरे बूढे मिया।

अलेक्को

चुप रहो, गीत ऐसे न भाये मुझे
बोल फूहड़ तुम्हारे जलाते मुझे।

जेम्फीरा

तुम को भाते नही? तो बताती हू यह—
गीत अपने लिये मैं तो गाती हू यह।

आग मे झोंक दो
चाहे टुकडे करो,
मैं तो कुछ न कहू
मैं तो चुप ही रहू,
कौन है वह, न होगा तुम्हे यह गुमा,
मेरे बुड्ढे खसम, मेरे बूढे मिया।

है बहारो से उसमे अधिक ताजगी
गर्म दिन से अधिक दिल मे गर्मी रमी,
उसमे साहस बहुत, वह तो बाका जवा
प्यार उस जैसा मुझको मिलेगा कहा?
मेरे बुड्ढे खसम, मेरे बूढे मिया
रात खामोश थी
प्यार करती रही,
अपनी बाहो मे मैं उसको भरती रही
तेरी, खूसट की खिल्ली भी उडती रही,
फब्तिया तुझपर हमने कसी थी वहा,
मेरे बुड्ढे खसम, मेरे बूढे मिया।

अलेको

बस, खामोश रहो ज़ेम्फ़ीरा! बहुत हो चुका

ज़ेम्फ़ीरा

अर्थ गीत का मेरे तुमने समझ लिया क्या?

अलेको

ओ ज़ेम्फ़ीरा!

ज़ेम्फ़ीरा

बुरा मनाओ अगर चाहते बुरा मनाना
मेरे ही बारे में गाती हूँ यह गाना।

(गाते हुए जाती है : 'मेरे बूढ़े सजन, मेरे बूढ़े पिया ... आदि)

बूढ़ा

हाँ, हाँ, मुझको याद आ गया, याद आ गया
वक्त हमारे में यह गाना रचा गया था,
लोगों का दिल इससे बहलाया जाता
जहाँ-तहाँ पर यह यों ही गाया जाता,
रहते थे हम तब कागुला के तट पर
और रात जब जाड़े की आती घिर कर,
मारीऊला मेरी, गीत यही गाती
बिटिया को भी मन भुलाती वह जाती,

ज़ेम्फ़ीरा

आग प्यार की बुझी, न वह अब मुझे सुहाये
अनुभव होती ऊब, हृदय आज़ादी चाहे.
मैं तो ... लेकिन चुप! क्या तुमने ध्यान दिया है?
किसी और का उसने अब तो नाम लिया है

बूढ़ा

किसका नाम लिया है उसने?

ज़ेम्फ़ीरा

तुम सुनते हो? वह कैसे आहें भरता है
दांत पीसता! ओह मेरी, जी डरता है!
मैं तो उसे जगा देती हूं

बूढ़ा
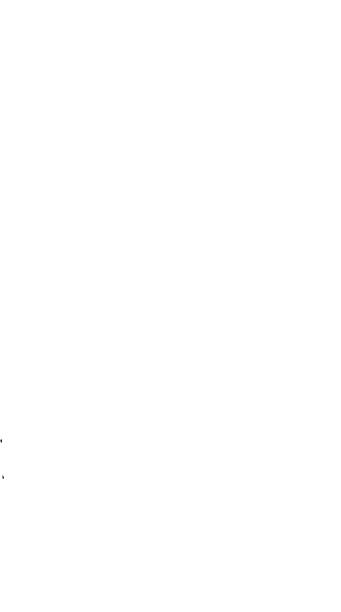
नहीं, नहीं, मत उसे जगाओ
भूत-प्रेत को नहीं भगाओ,
अपने आप चला जायेगा

ज़ेम्फ़ीरा

लेकिन उसने करवट ली है, जाग गया है
मुझे बुलाया, मुझे पुकारा नाम लिया है,
मैं जाती हूं पास उसी के, तुम सो जाओ
है थकान दिन भर की, सोकर उसे मिटाओ।

अलेको

बतलाओ, तुम कहां गयी थी?

के सग बैठी थी मैं, पास, यही थी।
प्रेत था शायद जिसने तुम्हे सताया
। मैं था जिसने तुमको विकल बनाया,
· चीखने और रहे तुम मुझे बुलाते
नी बेचैनी मे मुझको रहे डराते।

अलेको

तुमको ही देखा सपनो मे,
ऐसे लगा कि बीच हमारे
क्या बतलाऊ, बहुत बुरे थे सपने सारे।

ज़ेम्फीरा

सपने झूठे होते मत विश्वास करो [illegible]

अलेको

मर ना विश्वास सभी डगमगा गये [illegible]
सपना मे क्या मीठी बातो मे मै [illegible]
नही भरोसा तेरे दिल का भी मै क[illegible]

बूढ़ा

[illegible]

अलेको

बापू, मुझको अब वह प्यार नहीं करती है।

बूढ़ा

वह बच्ची है, धीरज से तुम काम तनिक लो
नहीं घुनाओ तुम अपने को व्यर्थ दुखी हो,
भाग प्यार की तेज तुम्हारे दिल में जलती
नारी का मन, चपल तबीयत रहे मचलती,
देखो, दूर गगन में कैसे मुक्त वहाँ पर
चाँद अकेला बड़े मजे से घूम रहा है,
सभी जगह पर प्रभा, चाँदनी को छिटका कर
धरती के कण-कण को मानो चूम रहा है।
भाव एक बदली से जगमग उसे कर दिया
बदली आई और, अब से उसे भर लिया,
नभ में उसकी जगह, कौन उसको दिखलाये –
"यहीं रुके रहना", यह उसको कौन बताये!
इसी तरह युवती को कोई कह दे कैसे
प्रेम इसी से करना, मत तुम और किसी से?
काम तनिक लो, तुम धीरज से।

अलेको

कितना प्यार मुझे करती थी!
सिर्फ़ मुहब्बत का मेरी ही दम भरती थी,
बड़े प्यार से मेरे साथ चिपक जाती थी,
शून्य रात में, वीराने में इसी तरह से
घण्टों जाते बीत, नहीं वह उकताती थी,
उमग-उमग कर, वह बच्चों-सी मचल मचलकर
मुझसे प्यारी बातें करती रहती अक्सर,

या बौछार चुम्बनों की मुभपर कर देती
मेरे मन की पीड़ा, सब चिन्ता हर लेती,
क्या सचमुच? मेरी जेम्फीरा रही न वैसी
आग प्यार की बुझी, नही वह पहले जैसी!

बूढ़ा

सुनो ध्यान से — किस्सा तुमको एक सुनाऊ
किस्सा ही क्या, अपनी बीती तुम्हे बताऊ।
बात पुरानी, मास्को का डेन्यूब क्षेत्र मे
नही जरा भी डर था, तनिक न भय मडराना,
(देखो, बीता हुआ दर्द-दुख
याद पुन अब आता जाता।)
तुर्कों का सुलतान, उसी से हम घबराते
उससे बेहद डरते थे, हम दहशत खाते,
राज उस समय था बुजाक पर पाशा करता
ऊचे अकरमान से वह था हुक्म चलाता।
मैं जवान था और आत्मा मे तब मेरी
बडी उमगो, खुशियो का सागर लहराता,
काले-काले मेरे घुघराले बालो मे
नही सफेदी नजर जरा भी तब आती थी,
थी सुन्दरिया बहुत, एक तो मेरे दिल पर
ऐसे करती घाव, छुरी ज्यो चल जाती थी,
बहुत समय तक रहा दूर से जान छिडकता
रहा याद मे उसकी घुलता और तडपता,
किसी तरह भी दिल उसका मैं जीत न पाया
लेकिन मेरी बनी कि आखिर वह दिन आया।

हाय, जवानी जल्दी से यो मेरी बीती
आसमान मे चमक दिखा ज्यो टूटे तारा!

बूढ़ा

पर किसलिए? किस मे भी आनन्द आता है
कैद देन में किसको और कहाँ पर प्यार?
घट बढ़ सुख जो बारम्बार सब पाते किन्तु
गुज़रा जो पल नहीं वह फिर से मिलता।

अलेको

लेकिन मैं वह नहीं कि यह अधिकार छोड़ दूँ
अपने जीवन-सुख का यों आधार छोड़ दूँ,
और नहीं कुछ, तो बदले का सुख तो लूँगा
तड़पाऊँगा मैं दुश्मन को, दुख तो दूँगा।
मिल जाता यदि दुश्मन मुझको सागर तट पर
सोया हो गहरी निद्रा में सुध-बुध खो कर,
तो मर्द मानो, ध्यान न आये दया-धर्म का
दुविधा पास न फटके, कहता तुम्हें कसम खा,
सोते को ही मैं पानी में धक्का देता
वह चिल्लाता सहसा, खूब मज़ा मैं लेता,
और विषैले, क्रुद्ध ठहाके मैं गुँजाता
उसके मन को बींधे, ऐसे तीर चलाता
बहुत समय तक दृश्य याद ये मुझको आते –
गोते खाना, चिल्लाना, सब मन बहलाते।

जवान जिप्सी

एक और चुम्बन बस दे दो..

ज़ेम्फ़ीरा

समय हो गया – जलन, आग है बहुत मिया में, तुम यह समझो।

जिप्सी

चुम्बन एक, बड़ा लम्बा-सा, और विदा लो।

जेम्फीरा

यही गैर, जो अभी न आया, तुम जाने दो।

जिप्सी

अब कब होगा मिलन हमारा?

जेम्फीरा

आज रात को, जब शशि चमके प्यारा-प्यारा
वहां कब्र के पीछे, टीले पर आ जाना

जिप्सी

धोखा मत दे देना! बुद्धू नहीं बनाना।

जेम्फीरा

आऊंगी, विश्वास करो तुम! नहीं करूंगी तुमसे कोई कपट, बहाना।

निद्रामग्न अलेको था, उसके मस्तक में
स्वप्न भयानक घूम रहा था धुंधला-धुंधला,
अन्धकार में चीखा, जागा घबराया-सा
हाथ बढ़ाने लगा तिमिर में, चकराया-सा,
किन्तु हाथ रुक गया वहीं पर बढ़ा-बढ़ाया
उसने जब बिस्तर को सूना, ठण्डा पाया
नहीं निकट थी, पास कहीं, पत्नी की छाया

बूढ़ा

यह किसलिये? विहग से भी आज़ाद जवानी
कैद प्रेम ने किसकी और कहा पर मानी?
यह वह सुख, जो समय-समय पर सबको मिलता
मुरझाने पर फूल नही यह फिर से खिलता।

अलेको

लेकिन मैं वह नही कि यह अधिकार छोड़ दू
अपने जीवन-सुख का यो आधार छोड़ दू,
और नही कुछ, तो बदले का सुख तो लूगा
तड़पाऊगा मैं दुश्मन को, दुख तो दूगा।
मिल जाता यदि दुश्मन मुझको सागर तट पर
सोया हो गहरी निद्रा मे सुध-बुध खो कर,
तो सच मानो, ध्यान न आये दया-धर्म का
दुविधा पास न फटके, कहता तुम्हे कसम का,
सोते को ही मैं पानी मे धक्का देता
वह चिल्लाता सहसा, खूब मजा मैं लेता,
और विपीते, कुछ ठहाके मैं गुजाता
उसके मन को बीधे, ऐसे तीर चलाता
बहुत समय तक दृश्य याद ये मुझको आते —
गोते खाता, चिल्लाता, सब मन बहलाते।

जवान जिप्सी

[illegible] और [illegible] दुश्मन कम है [illegible]

जेम्फीरा

[illegible] मिला म [illegible]।

जिप्सी

चुम्बन एक, बडा लम्बा-सा, और विदा लो।

जेम्फीरा

यही खैर, जो अभी न आया, तुम जाने दो।

जिप्सी

अब कब होगा मिलन हमारा?

जेम्फीरा

आज रात को, जब शशि चमके प्यारा-प्यारा,
वहा कब्र के पीछे, टीले पर आ जाना

जिप्सी

धोखा मत दे देना! बुद्धू नही बनाना।

जेम्फीरा

आऊगी, विश्वास करो तुम! नही करूगी तुमसे कोई कपट, बहाना।

निद्रामगन अलेको था, उसके मस्तक मे
स्वप्न भयानक घूम रहा था धुधला-धुधला,
अन्धकार मे चीखा, जागा घबराया-सा
हाथ बढाने लगा तिमिर मे, चकराया-सा,
किन्तु हाथ रुक गया वही पर बढा-बढाया
उसने जब बिस्तर को सूना, ठण्डा पाया,
नही निकट थी, पास कही, पत्नी की छाया

इसे सहन कर भी ध्वनियों पर कान लगाता
सभी ओर सन्नाटा — हुंकार सहसा छाई
दूरे गमीन और भुरभुरी उसको आई,
उठा और आगे डेरे से आया बाहर
सभी ओर छलके थे बहुत दिवस का अन्तर,
थी नीरवता, शेष पड़े थे गोरे गोरे
था अंधेरा, चाह चांदनी सम में गोरे,
सारे इक्का सा प्रकाश बस दिखलाते थे
नजर ओस पर चिह्न पार के कुछ आते थे,
बेचैनी से उसी दिशा में कदम बढ़ाता
वह टीले की ओर विस्मय सा बढ़ता जाता।

जहां डगर का अन्त, वहीं पर एक कब्र थी
दूरी पर बस, वहीं सफेदी-सी दिखती थी,
टांगें देती थीं जवाब, थे ख्याल बुरे-से
घुटने कांप रहे थे, उसके होंठ कांपते,
बढ़ता जाये, लेकिन देखो यह क्या, यह क्या
यह सच्चाई या फिर कोई स्वप्न बुरा-सा ?
दो परछाइयां उसे पास ही पड़ी दिखाई,
खुसर-फुसर भी उसे निकट ही पड़ी सुनाई
हाय, कब्र की ऐसी दुर्गति शर्म न आई।

पहली आवाज

वक्त हो गया

दूसरी आवाज

जरा ठहर जा!

पहली आवाज

वक्त हो गया, मेरे प्यारे।

दूसरी आवाज

नहीं, नहीं, कुछ रुक जाओ तुम,
सूरज निकले,
औ' छिप जाये चाद, सितारे।

पहली आवाज

अच्छा नहीं, देर अब करना।

दूसरी आवाज

प्यार करो, तो फिर क्या डरना,
रुको जरा तो!

पहली आवाज

नहीं कहीं की रह जाऊंगी, इतना समझो।

दूसरी आवाज

जरा रुको तो!

पहली आवाज

जाग गया पति, तब क्या होगा?
इतना सोचो!

अलेको

कोई बात नहीं,
अब इसमे इनक लडाओ।

ज़ेम्फीरा

बहुत डर चुकी अब तक तुमसे नहीं डराओ!
व्यर्थ धमकियां ये सब तेरी, ज़रा न डरती
तू हत्यारा, बहुत घृणा मैं तुझसे करती

अलेको

मरना होगा अब तुमको भी!

(वार करता है)

ज़ेम्फीरा

जान मुहब्बत में मैंने दी।

पौ फटती थी, पूरब में हो रहा उजाला
टीले से कुछ दूर, खून से लथपथ खंजर
लिये हाथ में वहीं कब्र पर
बैठा रहा अलेको बुत-सा बना रात भर।
दो शव अब निर्जीव पड़े थे उसके सम्मुख
बहुत भयानक हत्यारे का लगता था मुख,
सहमे-सहमे जिप्सी, आते थे बजारे,
घबराये से उसको ताके, दुख के मारे
कब्र खोदने जाते थे वे एक किनारे।

दुख में डूबी हुई बीविया उनकी आये
दोनों मृतकों की आखों मे होंठ छुआये,
बाप अकेला ही बैठा था शीश भुकाये
उन दो लाशों पर ही अपनी नज़र टिकाये।
भारी दुख ने पत्थर मानो उसे बनाया
वह गुमसुम, गतिहीन, मौन, सकते में आया।
लोगों ने दोनों लाशों को साथ उठाया
दो जवानियों को धरती में सग लिटाया,
दूर-दूर से यह सब तकता रहा अकेलो
वैसे मिट्टी डाल, बन्द कर रहे क़ब्र को,
पडी आखिरी मुट्ठी, सिर तब तनिक भुकाया
वह पत्थर से लुढक घास पर नीचे आया।
बूढे ने तब आकर उसके पास कहा यह
"ओ गर्वीले जाओ, हम से तोडो नाता
हम जगल के लोग, तुम्हारा ढग न आता,
हम कानून, यातना, कोई दण्ड न जाने
खून बहायें, बदला लें, यह कभी न मानें,
दर्द, वेदना, हमें नही भाती हैं आहे
हत्यारे के साथ नही हम रहना चाहे
जगल की आज़ादी जीना तुम्हे न आये
केवल तुम खुद मुक्त रहो, यह तुम्हे सुहाये,
हमको तो आवाज़ तुम्हारी भी अखरेगी
उसको सुनने से मन पर भारी गुज़रेगी,
हम उदार मन, हम विनम्र, हम भोले-भाले
तुम हो क्रोधी, साहस से लड मरनेवाले,
कहता हू इसलिये, नही है साथ हमारा
सारी चाह, मगर रास्ता अलग तुम्हारा।"

उसने इतना कहा और बस, मेले उखड़ गये,
डेरे, रैन-बसेरे सब कुछ क्षण मे उजड गये,
शोर मचाते बंजारे, घाटी से दूर चले

तांबे का घुड़सवार

पीटर्सबर्ग का एक क़िस्सा

कुछ शब्द

इस क़िस्से में बयान की गयी घटना सच्चाई पर आधारित है। इसकी सारी तफ़सीलें तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं से ली गयी हैं। जिज्ञासु पाठक व० न० बेर्ख की इतिहास-पुस्तक में इनकी तुलना कर सकते हैं।

प्रस्तावना

खड़ा था शून्य तट पर वह निकट सुनसान लहरों के,
बहुत-से ख्याल मन में, स्वप्न थे ऊंचे विचारों के,
नज़र थी दूर तक जाती नदी के पाट चौड़े पर
दिखाई दे रही थी नाव एकाकी जहां जर्जर
नदी थी तेज़ तूफ़ानी, किनारों पर जमी काई
कहीं थे झोंपड़े-झुग्गी, कहीं दलदल, कहीं खाई,
घरौंदों, झोंपड़ों में थे ग़रीबों के लगे डेरे
कुहासे से ढके जंगल, वनों के दूर तक घेरे,
न किरणें घुस सकें जिनमें, न सूरज रास्ता पाये
जहां सब ओर सरसर, सब तरफ़ वन गूंजता जाये।

अचानक ख्याल यह आया –
स्वीडन को यहां से दे चुनौती हम डरायेंगे,
नया, अब इस जगह पर शहर हम अपना बसायेंगे
बड़े दम्भी पड़ोसी का यहां से मुंह चिढ़ायेंगे,

किया निर्णय प्रकृति ने, यह उचित, हम मान उ
कि यूरोप के लिए हम एक खिड़की अब यहां
समन्दर के किनारे पाव हम अपने जमायेंगे
नयी इस राह, लहरों पर अनेकों पोत आयेंगे
बहुत मेहमान होंगे और झण्डे फड़फड़ायेंगे
बड़ा विस्तार होगा, खूब मौजें हम मनायेंगे।

अभी सौ साल बीते पर, निखर यह तो गया
बहुत कम शहर दुनिया में कि जिनका रूप
अंधेरे थे वनों के, जिस जगह थी दलदलें ग
वहीं पर गर्व से ऊंचा खड़ा है रूप का प्रहरी
जहां नीचे तटों पर जाल टूटे फिन बिछाते
बहुत ही भाग्य-वंचित जो बुरा जीवन बित
वहीं पर, उन तटों पर जिन्दगी अब जगमगा
वहां निर्माण की शोभा छटा अनुपम दिख
वहां पर महल अब ऊंचे खड़े हैं, बुर्ज,
धनी तट, विश्व भर के पोत अब लंगर डा
कि नेवा पर चढ़ाया जा चुका है कवच प
अनेकों पुल बने बस में हुआ, धीरे बहे
अनेकों द्वीप थे इसमें जड़ीरे थे कई वि
वहां उपवन हरे उभरे चमन सुन्दर, नये
निराली शान है सम्मुख, नयी इस राज
नहीं तुलना किसी से हो सके इस राज-
पुराने मास्को का रंग बिल्कुल पड़ गया
बुढ़ापे पर विजय मानो हुई थी यह जवा

प्यार तुम्हें बेहद करता हूं, ओ तुम पीट
प्यारा मुझको रूप तुम्हारा सुन्दर धीर-
नेवा की मन्थर धारा भी
प्यारी पत्थर तट-कारा भी
प्यार सात के जंगले भी जिनपर भ
चिन्तन में डूबी रात भी

पारदर्श भुटपुटे शाम के
तम-प्रकाश की, मृदु घाते भी,
और चाद के बिना चमक जो छाई रहती है नभ पर,
अपने कमरे मे मैं इसमे बिना दीप के भी पढता
ऊचे-ऊचे भवन ऊघते, सड़के निर्जन, नीरवता,
मुझे स्पष्ट सब कुछ दिखता
और "एडमिरल्टी" के ऊपर इस्पाती छड-इड चमकता।
स्वर्णिम नभ पर तम की चादर, छाये तो कैसे छाये,
अपना चोला, रूप बदलती, उषा यहा आये, जाये
सिर्फ आध घण्टे तक नभ मे रात यहा रहने पाये।
मैं कठोर तेरे जाडे का, मैं ठण्डक का मतवाला
ठहरा-ठहरा पवन चले जब और कटे कसकर पाला,
चौडे नेवा तट पर स्लेजे तेजी से दौडी जाये
गाल युवतियो के गुलाब से भी बढकर रगत पाये,
नाच-रग की शामे, उनकी चमक-दमक प्यारी लगती
किसी छडे के यहा मजे की महफिल जब बढिया जमती,
भाग उडाते शेम्पेनो के जाम सामने जब आते
"पच मेली" के नीले शोले जब सब को रग मे लाते,
यह सेना का नगर, यहा का जीवट भी मुझको प्यारा
अच्छा लगता मुझे मार्स मैदान, वहा का नज्जारा,
घुडसवार भी जहा, जहा पर आये पैदल सेनाये
एक ढग की सभी परेडे, फिर भी वे मन को भाये,
वहा कतारे लगातार यो उनकी आगे बढती हैं
जैसे लहरे ऊपर चढती, नीचे कभी उतरती हैं,
कदम मिलाकर सैनिक चलते, और विजयध्वज फहराते,
शिरस्त्राण उनके ताबे के चमक अनोखी दिखलाते
उनपर चिह्न लडाई के, सूराख नजर ढेरो आते।
प्यारी लगती है तू मुझको, जगी, युद्ध-राजधानी
रुचे धुए के बादल तेरे, तोप गरज भी तूफानी,
बेटा राजमहल मे जिस दिन जनती है प्यारी रानी
या कि विजय पा आनेवाली सेना की हो अगवानी,

उस दिन रूस हमारा सारा फिर से जश्न मनाता है
सभी जगह पर हंसी-खुशी का तब आलम छा जाता है,
या वसन्त आ गया निकट, नेवा यह अनुभव करती है
तोड़ बर्फ की नीली पर्तें, वह सागर को बढ़ती है,
मस्ती में आ जाना इसका यह भी मुझे सुहाता है,
तरह-तरह से नगर तुम्हारा मेरा हृदय लुभाता है।

ओ पीटर के शहर और भी तुम चमको, सवरो, निखरो
जैसा है दृढ़ अटल रूस, बस, तुम भी वैसे अटल रहो,
रहे तुम्हारी ही मुट्ठी में कुदरत की अंधी ताक़त
कभी न टूटे आसमान से कोई बिजली या आफ़त,
नहीं पुराना गाना अब तो फिनलैंडी लहरें गायें
राग शत्रुता, बन्दीजन का, भूल सदा को वे जायें,
गहरी, मीठी निद्रा में इस जगह सो रहा है पीटर!
शान्त रहे यह शहर, नगर!

किन्तु घटी थी एक कारुणिक घटना इसके जीवन में
याद अभी तक बिल्कुल ताजा है सजीव इसकी मन में
प्यारे मित्रो, लिखू इसे, मैं अपनी कलम उठाता हू,
बेशक दर्द भरा यह किस्सा, फिर भी तुम्हें सुनाता हू।

पहला भाग

बुझा-बुझा था नगर, उदासी का सा आलम छाया था
मास नवम्बर, पतझर की ठण्डक ने रंग दिखाया था,
नेवा की लहरें पाषाणी घाटों से टकराती थी
गुस्से में फुकार रही थी, भीषण शोर मचाती थी,
नेवा थी बेचैन इस तरह जैसे बिस्तर में रोगी
दायें-बायें करवट बदले जैसे व्याकुल दुख-भोगी।
रात लगी थी ढलने, था सब ओर अंधेरा तमस तिमिर,
वर्षा गुस्से में झमाझम करती थी मानो खिड़की पर
हवा जोर से चीख रही थी, दर्द भरा था उसका स्वर।
इसी समय येव्गेनी दावत से वापस घर में आया

इस जवान नायक का मेरे मन को नाम यही भाया,
प्यारा लगता है कानो को और नाम यह चिर जाना,
मेरी कलम जानती इसको, यह उसका चिर पहचाना।
नही जरूरत मैं उसका कुलनाम आपको बतलाऊ
वेशक इसके बारे मे मैं फिर भी इतना कह पाऊ,
शायद इसने किसी समय मे ऊचा नाम कमाया था
करामजीन की पुस्तक मे कुलनाम कभी यह आया था
लेकिन अब ऊचे समाज ने यह कुलनाम भुलाया है
इसके ऊपर पडी हुई अब तो विस्मृति की छाया है।
कोलोम्ना मे रहता है वह
कही नौकरी करता है वह,
ऊचे बडे-बडे लोगो से कन्नी काटे, कतराये,
कभी बडा था कुल उसका, यह शोक नही दिल मे लाये
वह अतीत पर गर्व न करता और न उसपर इतराये।

तो घर पर आया येव्गेनी,
झाडा अपना कोट, उतारे कपडे, लेटा बिस्तर मे,
किन्तु देर तक किसी तरह भी नीद नही उसको आयी
तरह-तरह के ख्याल उमडते आते थे मस्तक, उर मे।
लेकिन वह क्या सोच रहा था?
सोच रहा था यही – गरीबी, निर्धनता का है मारा,
कठिनाई से, बडे जतन से, उसने कुछ आदर पाया
और गरीबी से भी उसने पाया है कुछ छुटकारा,
भाव कभी यह भी आता था, कृपा ईश की हो जाती –
बुद्धि अधिक यदि वह पा जाता, मिल जाता ज्यादा पैसा
आखिर तो कुछ नही अजब यह होता जीवन मे ऐसा,
ढेरो काहिल, सुस्त बहुत से, पर जिनकी तकदीर चढी,
अक्ल नाम की चीज गाठ मे कम है, फिर भी भाग्य-चढी
चमक रही, उनके जीवन मे सुख-वैभव है, मौज बडी।
सोच रहा था साल सिर्फ दो हुए काम उसको करते
देख रहा था घबराहट से तेवर मौसम के चढते,

आना था यह ख्याल – नदी में शायद पानी बहुत बढ़ा
नेवा के ऊपर से शायद लिये गये पुल सभी उठा।
अपनी प्रिय पराशा से अब भेंट नहीं हो पायेगी
कुछ दिन विरह-वेदना उनको अब तो, हाय, सतायें
बरबस निकली आह हृदय से, ख्याल जिस समय यह
कवि की तरह उड़ानों में तब मन को उसने उलझाया
"शादी कर लूं? या कि नहीं मैं? क्यों न क्यों ऐसा अ
यह सच ऐसा करने से कुछ गुज़रेगी भारी मुझपर,
लेकिन क्या है, मैं जवान हूं, ताक़त, हिम्मत रखता हू
दिन से लेकर बहुत रात तक मैं मेहनत कर सकता हूं,
जैसे-तैसे, मामूली-सा बन जायेगा घर-डेरा
वहां पराशा के संग रहकर सुख पायेगा मन मेरा,
साल एक-दो बीते शायद मुझे नौकरी और मिले
पांव कहीं पर जमें ढंग से, जीवन में सुख-कुसुम खिले –
सौंपू तभी पराशा को मैं घर भर की जिम्मेदारी
पाले-पोसे बच्चों को, हो उसकी यह चिन्ता प्यारी
अन्त समय के आने तक हम इसी तरह जीते जायें,
रहे हाथ में हाथ प्यार का हम जीवन भर सुख पायें
जब दुनिया से कूच करें तो पोते हमको दफ़नायें."

ऐसे सपने रहा सजाता, और बहुत था भारी मन
ऐसी थी यह रात कि उसको अखर रहा था सूनापन,
चाह रहा था यही – न ऐसे हवा दर्द से चिल्लाये
और न गुस्से से खिड़की से ऐसे बारिश टकराये
नींद भरी थी भारी पलकें, आंख लगी उसकी आखिर
धीरे-धीरे छटा अंधेरा, रात बुरी बीती आखिर,
फीका-फीका, दिन निकला मुरझाया-सा
बहुत भयानक, दुख की गहरी छाया-सा।
नेवा सारी रात रही थी तूफ़ानों से टकराती
किसी तरह पहुंचे सागर को, पार न, पर, वह पा पाती,
बीते प्रबल थपेड़ों को वह ऐसा उसने नहीं हुआ .

गरज रहा तूफान वायु से, गूंज रही सभी जगह है
कहीं से सन्दूक और ताब तिरते नज़र पड़ते है,
कोप ईश्वर का वे देख, नगर निवासी मे सभी डरे
इधर अभी था और मिलेगा, क्या दुर्दिन भय और कां
नाश नगर अनाथ हो रहा, हाय! कहा से पायेंगे?
उजड़ गये घर-बार जो इतने सारे, कहा से आयेंगे?
बार भागकर उसी वर्ष थी। जार कि अब जो नहीं रहा
दुख मे डूबा, परेशान-सा, छज्जे मे आ खड़ा हुआ,
और कहा उसने लोगों से—"ईश्वर जैसा, जो चाहे
उसकी इच्छा के सम्मुख तो नहीं जार कुछ कर पाये।"
बैठ गया उदास-सा सोचा, दूर दृष्टि थी दर्द भरी
देख रहा था। सभी ओर से कैसी दुख की घटा घिरी,
जितने थे मैदान दूर तक, वे सब बने बड़ी झीलें
सड़कें नद-नालों में बदली, जो झीलों मे बढ़ी मिलें,
एक द्वीप-सा घिरा हुआ जल मे था केवल महल खड़ा
वह एकाकी, सूना-सूना, शोकग्रस्त-सा दुखी बड़ा,
देखा ऐसा दृश्य जार ने निर्णय मन मे तुरत लिया
बड़े अफसरों और जनरलों को उसने झट हुक्म दिया,
जहा बाढ़ का ज़ोर अधिक था, वे खुद पानी मे उतरें
जहा-जहा जोखिम, खतरा था, वे लोगों की मदद करें,
जो बैठे थे छिपे घरो मे, बाहर आते डरते थे
उन्हें बचाने वे बढ़ते थे, उनकी रक्षा करते थे।

इसी समय की बात, चौक पीटर मे घटना यही घटी
जहा एक कोने मे ऊची, नयी इमारत एक खड़ी,
और बगल मे जिसकी केवल थोड़ी-सी ऊचाई पर
पजे ऊपर किये, खड़े दो सन्तरियों से शेर-बब्बर,
एक शेर पर पत्थर के था येव्गेनी बैठा चढ़कर
सीने पर हाथों को बाधे था बेचारा, नगे सिर,
चेहरे का रग उड़ा हुआ था और न वह तो हिले-डुले
किन्तु न अपनी चिन्ता उसको, अपने दुख मे नही घुले,

—

उसे नहीं थी इतनी सुध भी, कैसे भूखी लहर उछल
सराबोर कर गयी कभी की उसके जूते उसके नल
उसके मुह पर बारिश कैसे कोड़े-से बरसाती थी
हवा थपेड़े मार रही थी, गुस्से में चिल्लाती थी
टोप उड़ा कब हवा ले गयी, उसे न यह भी पता चला
इसकी क्या चिन्ता हो सकती, क्या इसकी परवाह भला।
उसकी परेशान नजरें थीं एक दिशा में जमी हुई
बांध टकटकी देख रही थीं आंखें मानो थमी हुई
वहां धधकती गहराई में जैसे टीलों-सी लहरें
ऊपर उठे गरजतीं मानो वे गुस्से से उबल पड़े,
था तूफान वहां पर भारी, थे मकान गिरते जाते
उनके टुकड़े जहां-तहां थे पानी में बहते आते
हे प्रभु मेरे, हे ईश्वर!
अत्याचार न इतना कर!
हाय, निकट पागल लहरों के हाय, निकट उस खाड़ी के
जहां बाड़ है बिना रंग की
निकट बेद की झाड़ी के
है छोटा-सा एक घरौंदा, रहती वहीं पराशा है
वही कल्पना, उसका सपना, उसकी जीवन आशा है
विधवा मां, बेटी उस घर में... यह सब सच है या सपना
या कि हमारा जीवन ही है मानो झूठा स्वप्न बना?
इस धरती पर व्यंग्य गगन का यह तो जैसे बात-बना?

येव्गेनी पर तो जैसे था जादू-टोना किया गया
उसे संगमरमर में जैसे गारा या जड़ दिया गया
वह बुत बना हुआ बैठा था, नदी कर रही मनमानी
उसके चारों ओर न कुछ भी, था केवल पानी पानी
लेकिन उसकी ओर पीठ कर, अडिग अटल ऊंचाई पर
जहां न नेवा पहुंच पा रही गुस्से से उन्मत्त, विकल
कांसे के घोड़े पर अपना हाथ उठाये बैठा था
भला देवता को क्या चिन्ता, यदि था पानी चढ़ा हुआ।

दूसरा भाग

सभी ओर कनखनी करके जुट हुई मेरा अफ़ीमार
बेनामी के हंगामों से पूर हुई बढ़ मों सजकर,
मृग होली आने लगे पर कर्लीस बढ़ चौकी जाये
मार पूर का जटा-जटा पर बेड़ी में बिखराये,
जैसे पूर, पूटे-टाट, किसी गांव में घुस आये,
मोड़े-तोड़े, मारे-काटे, गरे दबाये, चिल्लाये,
गाली बके, डराये सबको, जुल्म करे वे घमकाये,
मान मूट का लेकर भागे, किन्तु हृदय में घबराये
पीछा करनेवाले पहुंचे, कहीं न वे पकड़े जाये,
इसीलिये हड़बड़ी करे औ भागे जाये तावड़ तोड़,
मान मूट का जो गिर जाये, देवे उसे वहीं पर छोड़।

उतर गया जब थोड़ा पानी सड़क लगी कुछ-कुछ दिखने
येक्नोती सब जल्दी-जल्दी भागा नदी तट को बढ़ने,
आशा और निराशा मन में, थी शंका, दिल धड़क रा
हालत क्या मां-बेटी की है, क्या दोनों ने कष्ट सहा?
नदी शान्त कुछ हुई, किन्तु थी अभी विजय में मदमा
अभी क्रुद्ध लहरों में वह थी अपना गुस्सा दिखलाती,
लहरों के नीचे तो जैसे अब भी ज्वाला जलती थी
अब भी आपे से बाहर थी, ढेरों झाग उगलती थी,
बुरी तरह से हांफ रही थी, सांस न टिककर ले पाये
उस घोड़े-सा दम फूला था, भाग युद्ध से जो आये।
सभी ओर येक्नोती देखे, नाव नजर उसको आई
भागा उसकी ओर कि जैसे कोई निधि उसने पाई,
तुरन्त पुकार लिया माझी को, जो दिलेर था मस्त, निड
दस कोपेक ले नाव बढ़ा दी उसने पागल लहरों पर।
बहुत अनुभवी माझी ने, तूफ़ानी लहरों से डटकर,
बड़ी देर तक लिया मोर्चा, उसे भरोसा था खुद पर
कभी लहरों में दबती, आती ऊपर कभी उभर,

उसे निगलने को व्याकुल था, हर क्षण, हर पल, उर्मि-उदर
किन्तु नाव, नाविक, येब्गेनी पहुंच गये तट पर आखिर।

परिचित सडक सामने उसके, दौडा वह दुख का मारा
जानी-पहचानी जगहो को, देखे, घूरे बेचारा,
वह उनको पहचान न पाये, सचमुच दृश्य भयानक था
खण्डहर और तबाही मे, सब बदला यहा अचानक था,
कुछ पानी के साथ बह गया, कुछ था इधर-उधर बिखरा
कोई घर था टेढा-मेढा, कोई बिल्कुल टूट गिरा,
कुछ तो बिल्कुल लुप्त हो गये, शेष न उनका नाम-निशान
खिसक गये कुछ तो नीवो से, कैसे हो उनकी पहचान,
सभी ओर शव पडे हुए थे, जैसे हो यह रण-आगन
येब्गेनी को होश न कुछ भी, बहुत विकल था उसका मन,
व्यथित यातना से था इतना, वह सन्नाटे मे आया
मूक, मौन, सुध-बुध बिसराये, भागा जाये घबराया,
उसी दिशा मे, जहा भाग्य ने रेखा गुप्त बनायी थी
मुहरबन्द खत मे क्या जाने कैसी खबर छिपायी थी,
नगर-छोर पर जो बस्ती थी उसी तरफ भागा जाये
यह खाडी, घर यही निकट था, नजर न लेकिन वह आये
कहा गया वह?. कोई इतना बतलाये
रुका ठिठककर
पीछे गया, लौटकर आया वह तो इसी जगह पर फिर,
यहा-वहा देखे बढ जाये फिर से देखे इधर-उधर
यही जगह है, ठीक यही है, जहा खडा था उनका घर,
सरपत की झाडी तो यह है। फाटक था इस जगह यहा
शायद वह बह गया बाढ मे, पर मकान भी गया कहा?
सभी तरह के उलटे-सीधे ख्याल बुरे मन मे आये
इधर-उधर वह चक्कर काटे लिये हृदय मे चिन्तायें,
ऊचे-ऊचे मन समझाये, किसी तरह से बेचारा
सहसा माथा ठोका उसने, हसा जोर से दुखियारा।
सहमे हुए नगर पर रजनी की काली चादर छाई

निर्धन कवि को भाडे पर घर उसने अपना चढा दिया।
लेने को सामान वहा से कभी न येव्गेनी आया
वह अजनबी बना जग के हित, सब ने उसको ठुकराया।
पैदल इधर-उधर वह दिन भर आवारा घूमा करता
सोता कहीं घाट पर, टुकडे माग पेट अपना भरता।
तन पर फटे-पुराने कपडे चिथडे होते जाते थे
नीच, दुष्ट बच्चे पीछे से पत्थर भी बरसाते थे,
बढ़ा चला जाता सडको पर, ध्यान न उसको रहता था
कोचवान, गाडीवानो के वह चाबुक भी सहता था
बाढ और तूफान भयानक दिल में बैठा था जो डर
वही निरन्तर शोर गूजता, उसे न जग की तनिक खबर।
किसी तरह से बीत रहे थे बहुत दुखी थे उसके दिन
नही दरिन्दो का जीवन था और न मानव का जीवन
वह दुनिया से दूर नही था, किन्तु न था जग का वासी
वह जीवित, मृत, भूत-प्रेत भी और नही था सन्यासी

एक बार क्या हुआ, घाट पर नेवा के था नीद मगन
वह येव्गेनी। गर्मी बीती, पतझर के दिन, तेज पवन
एक बडी दीवार कि लहरे ऐसे तट से टकराये
चढे घाट पर, करे शिकायत और भाग वे बिखराये
चिकनी-चिकनी घाट-पैडिया उनसे यो मारे टक्कर
जैसे कोई सिर पटके न्यायालय के निर्मम दर पर
किन्तु अदालत ध्यान न दे, न ले दुखिया की सार खबर।
जागा येव्गेनी बेचारा। थे मौसम के चिह्न बुरे
घोर उदासी, पानी टपके और हवा भी बैन करे
रात्रि-तिमिर मे कही दूर से, पवन-रुदन के उत्तर मे
पहरेदार, सन्तरी कोई, चिल्लाता ऊचे स्वर मे
जगा चौककर जब येव्गेनी, स्मृतिया सभी सजीव हुई
बडी भयानक यादे आखो के सम्मुख सब घूम गयी
जल्दी से उठ खडा हुआ, वह चला कदम ले चले जिधर
किन्तु देखने लगा ध्यान से एक जगह सहसा रुककर

कथाएं

क़िस्सा मछली मछुए का

नीले-नीले सागर तट पर
घास-फूस की कुटी बना कर,
तैंतीस वर्षों से उसमें ही
बूढ़ा-बुढ़िया रहते थे,
बुढ़िया बैठी सूत कातती
बूढ़ा जल में जाल बिछाता,
एक बार जो जाल बिछाया
वह बस काई लेकर आया,
बार दूसरी जाल बिछाया
वह बस जल-झाड़ी ही लाया,
बार तीसरी जाल बिछाया
मछली एक फाँसकर लाया,
किन्तु नहीं साधारण मछली
बनी हुई सोने से असली।
मानव की भाषा में बोली —
"बाबा, मुझको जल में छोड़ो
बदले में जो चाहो, ले लो,
क्या इच्छा, तुम इतना बोलो।"
बूढ़ा चकित हुआ, घबराया
उसने वापस जाल बिछाया,

मछली सागर बैठ गयी
जहाँ कहीं भी जल गहरा था।
छोड़ दिया उसको पानी में
और कहा मीठी वाणी में –
भला करे भगवान तुम्हारा
तुम और सागर में जाओ
नहीं चाहिये मुझको कुछ भी
तुम घर जाओ मौज मनाओ।'

बूढ़ा जब वापस घर आया
बुढ़िया को सब हाल सुनाया –
आज जाल में आयी मछली
नहीं आम सोने की असली
हम जैसी भाषा में बोली –
बाबा मुझको जल में छोड़ो
बदले में जो चाहो ले लो
क्या इच्छा तुम इतना बोलो।'
मांगू कुछ, यह हुआ न साहस
यों ही छोड़ दिया जल में, बस।
बुढ़िया बूढ़े पर झल्लायी
उसे करारी डाट पिलायी –
"बिल्कुल बुद्धू तुम, उल्लू हो!
कुछ भी नहीं लिया मछली से
नया कठौता ही ले लेते
घिसा हमारा, नहीं देखते।"

कान दबा वह तट पर आया
कुछ बेचैन उसे अब पाया।
मछली को जा वहां पुकारा
वह तो तभी चीर न

आयी पास और यह बोली –
"बाबा क्यों है मुझे बुलाया ?"
बूढ़े ने झट शीश झुकाया –
"सुनो बात तुम, जल की रानी
तुम्हें सुनाऊ व्यथा-कहानी,
मेरी बुढ़िया मुझे सताये
उसके कारण चैन न आये,
कहे कठौता घिसा पुराना
लाओ नया, तभी घर आना।"
दिया उसे मछली ने उत्तर –
"दुखी न हो, बाबा, जाओ घर
पाओ नया कठौता घर पर।"
बूढ़ा वापस घर पर आया
नया कठौता सम्मुख पाया।
बुढ़िया और अधिक झल्लायी
और ज़ोर से डाट पिलायी –
"बिल्कुल बुद्धू तुम, उल्लू हो,
मागा भी तो यही कठौता
कुछ तो और ले लिया होता।
उल्लू, फिर सागर पर जाओ,
औ' मछली को शीश नवाओ,
तुम अच्छा-सा घर बनवाओ।"

बूढ़ा फिर सागर पर आया
कुछ बेचैन उसे अब पाया,
स्वर्ण मीन को पुन पुकारा
मछली तभी चीर जल-धारा,
आयी पास और यह पूछा –
"बाबा क्यों है मुझे बुलाया ?"

बीता हफ्ता, बीत गये दो,
आग बबूला बुढ़िया ने हो
फिर से बूढ़े को बुलवाया,
उसको यह आदेश सुनाया –
"जा मछली को शीश नवाओ
मेरी यह इच्छा बतलाओ,
बनना चाहूँ मैं अब रानी
ताकि कर सकूँ मैं मनमानी।"
बूढ़ा डरा और यह बोला –
"क्या दिमाग तेरा चल निकला?
तुझे न तौर-तरीका आये
हँसी सभी से तू उड़वाये।"
बुढ़िया अधिक क्रोध में आयी
औ' बूढ़े को चपत लगायी –
"क्या बकते हो ऐसी जुर्रत?
मुझसे बहस करो, यह हिम्मत?
तुरत चले जाओ सागर पर
वरना ले जायें घसीटकर।"
बूढ़ा फिर सागर पर आया
और विकल अब उसको पाया,
स्वर्ण मीन को पुनः पुकारा
मछली तभी चीर जल-धारा,
आयी पास और यह पूछा –
"बाबा, क्यों है मुझे बुलाया?"
बूढ़े ने झट शीश झुकाया –
"सुनो व्यथा मेरी, जल-रानी
तुम्हें सुनाऊँ दर्द कहानी,
बुढ़िया फिर से शोर मचाये
नहीं इस तरह रहना चाहे,

ऐसी गलती कभी न करना
बहुत बुरी बीतेगी वरना।"

बीता हफ्ता, बीत गये दो,
सनक नयी आयी बुढ़िया को,
हरकारे सब दिशि दौड़ाये
ढूंढ़, पकड़ बूढ़े को लाये,
बुढ़िया यों बोली बूढ़े से—
"फिर से सागर तट पर जाओ
औ' मछली को शीश नवाओ,
नहीं चाहती रहना रानी,
अब यह मैंने मन में ठानी
करूं सागरों में मनमानी,
जल में हो मेरा सिंहासन
सभी सागरों पर हो शासन,
स्वर्ण मीन खुद हुक्म बजाये
जो भी मांगू लेकर आये।"

हुई न हिम्मत कुछ समझाये
वह बुढ़िया को अक्ल सिखाये,
गया वह नील सागर पर
सागर में तूफान भयंकर,
लहरें गुस्से में बल खायें
उछलें, कूदें, शोर मचायें,
स्वर्ण मीन को तुरत पुकारा
मछली पास चली आ [illegible],
[illegible] [illegible], और वह पूछी—
"[illegible] क्या है मुझसे [illegible]"
बूढ़े ने [illegible] [illegible] [illegible]—

सोने का मुर्गा

किसी राज्य मे, किसी देश मे
किसी अजाने से प्रदेश मे,
जार ददोन राज करता था
जिससे हर राजा डरता था,
बडा भयकर था यौवन मे
बडा सूरमा रण-आगन मे,
बडे मोर्चे उसने मारे
उससे लड सब दुश्मन हारे।
वक्त बुढापे का जब आया
मिले चैन, यह दिल ने चाहा,
किन्तु तभी तो आस-पास के
राजा दुश्मन जो हताश थे,
हर दिन उसको लगे सताने
अपनी ताकत, अकड दिखाने।
सीमाओं की रक्षा के हित
सेना दौडानी पडती नित,
सेना-नायक वीर गवाने
फिर भी दुश्मन बाज न आते,

पूरब में थी उसकी मंजिल
क्या बीतेगी, डरता था दिल।

चले रात को दिन को लगकर
सैनिक चूर हुई सब थककर,
वहीं न कोई लड़ा मरा था
नहीं किसी का खून गिरा था,
दिया न कहीं पड़ाव दिखाई
कब्र एक भी नज़र न आई,
सोचे जार और घबराये
नहीं समझ में कुछ भी आये,
यह था सचमुच अजब तमाशा
कभी न की थी जिसकी आशा।
दिवस आठवां डूबे दिनकर
सेना तब पहुंची पर्वत पर,
घाटी में चदवा रेशम का
दिखा जार को, यह किस्सा क्या?
सभी ओर अद्भुत सुन्दरता
गहरा सन्नाटा, नीरवता,
सेना सारी कटी पड़ी थी
यह क्या घटना यहां घटी थी?
जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाये
जार निकट चदवे के जाये,
और वहां पर उसे अचानक
दिया दिखाई दृश्य भयानक,
दोनों बेटे मरे पड़े थे
तन में बरछे तेज गड़े थे,
भाई ने भाई को मारा
एक-दूसरे का हत्यारा।

वक्त लौटने का तब आया
औ' चलने का हुक्म सुनाया,
संग लिये शहजादी सुन्दर
जार चला वापिस अपने घर।
उसके आगे, पर अफवाहें
झूठी सच्ची उड़ती जायें,
बड़ी भीड़ ने नगर-द्वार पर
स्वागत किया, दिखाया आदर,
जार, हसीना थे जिस रथ में
लोग पिसे जायें उस पथ में,
जार करे सब का अभिवादन
बहुत उल्लसित था उसका मन,
नजर सफेद पगड़ी तब आई
और भीड़ में दिया दिखाई
उसे नजूमी परिचित सहसा
जो लगता था श्वेत हंस सा,
"मैं अभिवादन करूं तुम्हारा
तुमने ही तो मुझे उबारा,
आओ निकट हाल बतलाओ
बोलो, क्या तुम मुझसे चाहो?"
"याद तुम्हें जो वचन दिया था?
वादा मुझसे कभी किया था?
'जो चाहोगे, वह ही दूंगा
पूरा अपना क़ौल करूंगा।'
दो शहजादी यह जारीना
लाये हो जो साथ हसीना।"
यह सुन जार बहुत चकराया
वह तो बस सकते में आया,
"क्या कहते हो? बुद्धि [illegible]

बात कर रहे बिना विचारे,
वचन दिया, यह मैंने माना
किन्तु न तुमने इतना जाना,
तुम किसके यों मुंह लगते हो?
किससे यों बातें करते हो?
हूं मैं ज़ार, न इसे भुलाओ
मत सीमा से बाहर जाओ।
लो धन-दौलत, ऊंची पदवी
चाहे शाही, घोड़ा अरबी,
राज तुम्हें आधा दूं, चाहो
शहज़ादी की बात भुलाओ।"
"मुझे चाहिये सिर्फ हसीना
यह शहज़ादी, यह ज़ारीना।"
ज़ार बहुत गुस्से में आया
थूका उसने औ' चिल्लाया –
"यही ज़िद, भाड़ में जाओ
और न कुछ भी मुझसे पाओ
भागो, अपनी जान बचाओ
इस बुड्ढे को दूर हटाओ।"
बहस करे बूढ़े ने चाहा
ज़ार और भी तब झल्लाया,
लोहे का भुज-दण्ड उठाकर
दे मारा बुड्ढे के सिर पर,
बुड्ढा तो बस वहीं गिर गया
प्राण पखेरू दूर उड़ गया।
भीड़ सहम सारी थर्रायी
हंसी हसीना को, पर आयी,
हा – हा – हा – हा – ही – ही – ही – ही
उसे न कुछ भी शर्म-हया थी,
परेशान था ज़ार बहुत ही
किसी तरह मुस्काया फिर भी,

बढ़ा नगर को अब रथ सत्वर
हुई इसी क्षण हल्की सरसर,
देखे सब ही नजर जमाये
मुर्गा नीचे उड़ता आये,
आया, और ज़ार चंदिया पर
बैठ गया वह पाँव जमाकर,
टाँग मारकर पंख हिलाये
कहाँ गया वह, कौन बताये?
रथ से नीचे ज़ार गिर गया
आह भरी बस, और मर गया।
लुप्त हुई शहज़ादी ऐसे
था उसका अस्तित्व न जैसे।
किस्सा झूठा, गढ़ा गया है
फिर भी इसमें सत्य बड़ा है।

१८३४

नाटिकाएं

कंजूस सूरमा

पहला दृश्य

(बुर्ज में)

(एल्बर्ट और इवान)

एल्बर्ट

चाहे कुछ भी हो जाये, लेकिन मैं तो
प्रतिस्पर्धी से लोहा लेने जाऊगा,
दिखलाओ तुम शिरस्त्राण मुझको मेरा।

(इवान उसे शिरस्त्राण देता है)

यह तो बिल्कुल टूट गया है
किसी काम का नहीं रहा,
इसे पहनना अब तो सम्भव नहीं रहा,
लेना होगा मुझे नया।
उफ, था कैसा वार किया
बहुत बुरा हो उसका
काउंट देलोर्ज का!

इवान

किन्तु आपने कसर न छोडी
उसको मजा चखा दिया,
घोडे से ही उसको नीचे दिया गिरा, धूल चटा दी,
दो दिन तक वह मुर्दे जैसा पडा रहा,
नही जरा भी हिला-डुला।

एल्बर्ट

फिर भी वह तो कुछ घाटे मे नही रहा
कवच वेनिसी
रक्षा उसकी छाती की जो करता है
पूरी तरह सलामत है,
नही एक कौडी भी उसकी खर्च हुई,
नया कवच तो जाकर नही खरीदेगा।
शिरस्त्राण क्यो उसके सिर से उसी समय
मैंने नही उतार लिया?
कर लेता मैं ऐसा ही लेकिन मुझको
शर्म आ गयी,
वहा उपस्थित थी महिलाये, ड्यूक स्वय।
बहुत बुरा हो उस काउट का!
अच्छा होता सिर ही मेरा
टुकडे-टुकडे वह कर देता।
शिरस्त्राण ही नही, मुझे तो
बढिया सी पोशाक एक दरकार बहुत है,
पिछली बार याद है मुझको
सभी सूरमा और सभी सरदार वहा पर
रेशम औ' मखमल पहन थे,
वहा ड्यूक की दावत मे; मै सिर्फ अकेला
पहने हुए कवच बैठा था,

मैं केवल संयोग-योग से आ पहुंचा हूं
इस मुकाबले के आंगन में। किन्तु कहूंगा क्या अब उनमें ?
हाय, गरीबी हाय गरीबी !
कैसे वह सम्मान-मान पर
करती है आघात भयानक।
देलोरज ने अपने भारी बर्छे से जब
शिरस्त्राण को मेरे बींधा
और बगल में जिस क्षण मेरी
फरांटे से आगे निकला,
मैंने उस क्षण तभी फिर ही
थी अमीर को एड़ लगायी,
तूफानी गति से तब उसको दौड़ाया था
बीस क़दम की दूरी तक यों
काउंट को मैंने लुढ़काया
मानो वह छोटा-सा कोई नौकर-चाकर।
तब सारी महिलायें भय से कांप
उठी थी, उछल पड़ी थी
और स्वयं क्लोटील्डा भी तो
मुंह ढककर चिल्लायी बरबस।
भाटों और चारणों ने तब मेरे ऐसे प्रबल वार का
जी भरकर गुण-गान किया था।
किन्तु किसी ने शायद उस क्षण
नहीं तनिक भी यह सोचा था,
मेरी अद्भुत शक्ति वीरता की तह में क्या राज छिपा था ?
राज यही था – शिरस्त्राण के बिंध जाने पर
खण्ड-खण्ड हो गिर जाने पर,
गुस्से से हो आग-बबूला मैं झपटा था
मेरी शूर-वीरता में बस,
पैसे ही का मोह छिपा था,

मेरी कजूसी न हो तो
मुझको यह बल प्रबल दिया था।
और छूत भी इसकी मुझको कजूसी की
आसानी से लग सकती है
पास पिता के एकसाथ
घर में रहने पर।
यह बतलाओ, हाल बेचारे घोडे का
मेरे कैसा है?

इवान

वह तो अब भी लगड़ाता है।
उसपर नही सवारी आप अभी कर सकते।

एल्बर्ट

नही रास्ता कोई मुझको अब दिखता है
मैं खरीद कुम्मैती लूगा,
नही दाम भी बहुत मागते!

इवान

यह सच, दाम न बहुत मागते
किन्तु हमारे पास नही है बिल्कुल पैसे।

एल्बर्ट

उस नालायक सालोमन ने
क्या जवाब मे तुम्हे कहा है?

वह कहता है रहन बिना मैं
और नही अब ऋण दे सकता।

एल्बर्ट

रहन चाहिये! भला कहा से
लाऊ मैं वह? शैतान कही का!

इवान

मन उसको यह मजबूरी भी बतलायी।

एल्बर्ट

फिर क्या उत्तर मे वह बोला?

इवान

हाय-वाय की, रोना रोया,
अपने दुख का पोथा खोला।

एल्बर्ट

नही कहा क्यो उससे तुमने
मेरा बाप अमीर बहुत है,
किन्तु यहूदी के समान ही
वह पैसे का पीर बहुत है,
फिर भी देर-सबेर
विरासत में मुझको धन बहुत मिलेगा।

मैं विनम्र सेवक हुज़ूर का!

एल्बर्ट

मेरे प्यारे मित्र, अरे तुम!
नीच यहूदी, तुम सम्मानित सालोमन हो,
आओ, आओ! यह क्या मैंने सुना,
नहीं तैयार मुझे तुम ऋण देने को?

यहूदी

मेरे मेहरबान सूरमा, मेरे मालिक,
सच कहता हूं
और कसम भी मैं खाता हूं,
बड़ी खुशी से ऐसा करता
यदि होती सामर्थ्य, अगर यह सम्भव होता।
किन्तु कहां से पैसा लाऊं?
मैं बिल्कुल लुट गया इस तरह
सभी सूरमा-सरदारों की
मदद सदा मन से करता हूं,
मगर न कोई पैसे मेरे लौटाता है,
यही आपसे आज पूछना चाह रहा हूं
नहीं आप लौटा सकते हैं
मेरे ऋण का एक भाग ही?

एल्बर्ट

चोर, लुटेरे!
जेब भरी यदि मेरी होती,
भला लगाता मुंह मैं तेरे जैसों को तब? बस, काफ़ी है

नहीं क्या तुम [illegible],
मेरे प्यारे सालोमन, अब
सौ मुहर कहीं से मिल रहा,
नहीं — न [illegible] सो [illegible]!

यहूदी

भाग की सौ मुहर गिन हूँ!
कब थी मेरे पास एक सौ मुहर, मालिक?

एल्बर्ट

बात सुनो तो, नहीं करोगे
मदद दोस्तों की तुम दुख में,
शर्म न आती?

यहूदी

सच कहता हूँ और कसम भी मैं खाता हूँ।

एल्बर्ट

बस, काफी है!
रेहन चाहते हो तुम मुझसे?
यह कैसी बकवास भला क्या!
क्या मैं तुम्हें रेहन दे सकता?
अपने कुल का चिह्न, यही बस?
मेरे पास अगर कुछ होता मूल्यवान तो
बेच कभी का देता उसको!
या फिर वचन सूरमा का ही बहुत नहीं है
तुम जैसे कुत्ते को जो विश्वास दिया है।

यहूदी

वचन आपका ?
जब तक जीवित आप, बहुत ही मूल्यवान है।
सब से बडी तिजोरी भी तो खुल सकती है
उसके जादू सम प्रभाव से,
किन्तु आप यदि मुझ गरीब को
दे देते हैं वचन और फिर
इस दुनिया से चल देते है
(हे भगवान न ऐसा करना !)
तो यह वचन आपका
कुछ ऐसा ही होगा,
जैसे मजूषा की चाबी,
जो समुद्र मे फेकी जाये !

एल्बर्ट

तो क्या मेरा बाप बहुत दिन, मुझसे ज्यादा वक्त जियेगा ?

यहूदी

कौन भला यह कह सकता है ?
मरना-जीना नही हमारे हाथों में है,
जो जवान है आज वही कल मर सकता है
और चार बूढे ही उसको
झुके हुए कन्धों पर अपने
गाड कब्र में पहुचाते है।
पिता आपके हृष्ट-पुष्ट है
ईश्वर ने यदि चाहा,
तो दस, बीस, तीस सालों तक
जिन्दा वे तो रह सकते है।

एल्बर्ट

अरे यहूदी, झूठ बको मत!
तीस साल के बाद
स्वय मैं भी पचास का हो जाऊगा,
उन पैसो का क्या अचार मैं तब डालूगा?

यहूदी

पैसे? पैसे तो हर वक्त
उम्र हो चाहे कोई, काम हमारे वे आते हैं,
पर जवान उनको उत्साही सेवक माने
तरस न खाये जहा-तहा उनको दौड़ाये
औ' बूढे के लिये भरोसे के वे साथी,
उन्हें आख की पुतली समझे
बड़े जतन से उन्हें सहेजे!

एल्बर्ट

लेकिन मेरे बाप, पिता के
लिये न वे तो सेवक, साथी,
उसके लिये बने वे स्वामी
और स्वय वह उनका सेवक।
सो भी कैसा सेवक है वह?
किसी दास-सा, वह गुलाम-सा।
वह जंजीर-बंधे कुत्ते-सा
उस ठिठुर दुनाघर म ही रहता है,
पानी पीता, रूखा-सूखा टुकड़ा खाता,
सारी सारी रात जागता,
इधर उधर भागा करता है
और भौंकता भी रहता है।
जीवन भर वह सड़ म

यहूदी

इस उपाय की–
बूढ़ा जाना-पहचाना है मेरा, एक यहूदी,
दवा बेचता वह ग़रीब-सा ..

एल्बर्ट

सूदख़ोर है?
वह ईमानदार कुछ तुमसे
या कि तुम्हारे जैसा ही है?

यहूदी

नहीं, नहीं, मालिक, तोबी तो
काम दूसरा ही करता है–
बहुत ग़ज़ब की दवा बनाता, ऐसी बूंदें,
जो कमाल का असर दिखायें।

एल्बर्ट

लेकिन मुझको उनसे क्या लेना-देना है?

यहूदी

सिर्फ़ तीन बूंद ही काफ़ी,
उनको पानी के गिलास में डाल दें,
उनका कोई रंग न होगा, नहीं ज़ायका,
और पेट में उनसे लेकिन न ऐंठन होगी,
है, उबकाई तक न आती, दर्द न होगा,
और आदमी इस दुनिया से चल बसता है।

एल्बर्ट

तो यह बूढ़ा दोस्त तुम्हारा जहर बेचता,
ऐसा ही धंधा करता है।

यहूदी

हां, हां, ऐसा भी करता है।

एल्बर्ट

क्या इसका यह मतलब समझूं,
सोने की मुहरों के बदले
मुझे जहर की शीशी का
ऋण देना चाहो? ऐसा ही है?

यहूदी

क्यों मजाक करते हैं, मालिक?
ऐसा नहीं हुजूर सोचिये,
मैंने चाहा मैंने सोचा, शायद आप
अब निजात पाये बैरन की रूह,
वक्त वह शायद आया।

एल्बर्ट

क्या मतलब है? अपने हाथों
जहर पिता को अपने दे दूं?
बेटे से ऐसा कहने की
जुर्रत करते ऐ इवान

पकड़ लो इसको! मुझसे
ऐसा कहने की हिम्मत करता हो!
नीच यहूदी, काले नाग, कमीने कुत्ते!
अभी तुझे अपने फाटक पर सूली दूंगा।

यहूदी

मैं कुसूरवार हूं, मेरे मालिक!
हुजूर से माफी चाहूं
यों ही जरा मजाक किया था!

एल्बर्ट

ऐ इवान, जरा तुम रस्सी लेकर आओ!

यहूदी

मैंने मैंने जरा मजाक किया था।
मैं हुजूर, पैसे लाया हूं।

एल्बर्ट

भाग, दफा हो नीच, कमीने!

(यहूदी बाहर चला जाता है)

मेरे इस कजूस बाप ने कैसी हालत कर दी मेरी!
ऐसी हिम्मत करे, कहे यह
मुझसे ऐसा नीच यहूदी।
एक गिलास सुरा का लाओ,
सिर से पैरों तक देखो, मैं कांप रहा हूं।
लेकिन पैसों की आवश्यकता
वह तो फिर भी बनी हुई है,

जाओ, जरा भागकर जाओ,
उसी कमीने के पीछे जा
सोने की मुहरे ले आओ!
और सुनो तुम,
कलम-दवात, मुझे कागज दो,
उसी नीच के नाम जरा मैं हुडी लिख दू,
यहा, सामने मेरे, मत तुम
उसको लाना, नीच यहूदी को भूले से!
लेकिन नही, जरा तुम ठहरो,
उसकी सोने की मुहरो से
विष की ऐसे बू आयेगी
जैसे उसके पुरखो से
बू चादी की आया करती थी
तुम शराब ले आओ, मैने तुम्हे कहा था।

इवान

किन्तु हमारे यहा नही है एक बूद भी।

एल्बर्ट

कहा गयी वह, जो उपहार रूप मे आई यहा स्पेन से,
जिसको भेजा था रेमोन ने?

इवान

अन्तिम बोतल दे आया था
कल लुहार को
मैं, रोगी को।

[illegible]

[illegible]

दूसरा दृश्य

(तहखाना)

बैरन

जैसे कोई इश्क-मुहब्बत का दीवाना
नौजवान यह इन्तजार करता रहता है,
किसी शोख ऐयार हसीना के आने को
या उसके छल-छन्दों में फस जानेवाली किसी मूर्ख
मुलाकात आखिर कब होगी,
वैसे ही बेचैनी से सारा दिन मैं भी
राह देखता रहा
कि कब जाऊगा आखिर
अपने गुप्त, छिपे तलघर मे,
वफादार सन्दूक जहा पर बडे-बडे है।
आज बहुत अच्छा, शुभ दिन है,

अभी न पूरी तरह भरा जो
छठे, बड़े सन्दूक, उसी मे
मुट्ठी भर वह सोना
अब मैं डाल सकूगा,
जमा किया जो मैंने अब तक।
लगता है, यह बहुत नही है
लेकिन थोडा-थोडा करके ही तो भरे खजाने।
याद मुझे आता है, मैंने कही पढा था,
एक जार ने कही सैनिको को यह अपने
हुक्म दिया था,
एक जगह पर मुट्ठी भर भर
सभी डालते जाये मिट्टी,
इसी तरह से
टीला एक बना था ऊचा –
जार बहुत खुश हो तब मन मे
उस टीले की ऊचाई से
घाटी को देखा करता था
श्वेत तम्बुओ से जो थी सारी ढकी हुई,
सागर को भी जिसमे द्रुतगति पोत और जलयान तैरते।
इसी तरह से मैं भी मुट्ठी भर भर लाया
तहखाने मे थोडा-थोडा सोना जब-तब,
ऊचा होता चला गया यो मेरा टीला –
इसकी ऊचाई से मैं भी
दृष्टि वहा दौडा सकता हू,
जो कुछ अब मेरे अधीन है।
मेरे नही अधीन भला क्या ?
मैं दानव की तरह
इशारो पर ससार नचा सकता हू।
यदि चाहू, तो महल खडे हो जाये सम्मुख
अनुपम बाग-बगीचो से वे घिर-घिराये,
परियो की भी भीड यहा भारी लग जाये

क्या [illegible] आई,
मुझमें क्या गुण है सभी बड़ाई,
और चमत्कार देखो, जानो
सब [illegible] [illegible]
और नदियों की गहराई,
भेदों के पुंज, तारों की
[illegible] के [illegible]
बड़े [illegible]
[illegible] भाव में राह ताकत,
पुरस्कार कब मुझको पाव,
या मेरा महल हरी-भरी, महमी-महनी
रक्त-रंजिता बड़ी-बुराई
सिर पर ताज धरे आयेगी,
मेरा हाथ चूमकर
मेरी आँखों में वह तो ताकेगी
मेरी इच्छा के चिह्नों को
वह बरबस उनमें ढूँढेगी,
मेरा हुक्म बजायेंगे सब,
लेकिन नहीं किसी का मैं तो।
मैं हूँ मुक्त सभी इच्छाओं,
सभी कामनाओं से मैं तो, और शान्त हूँ;
ज्ञान मुझे अपनी ताक़त का,
हूँ सन्तुष्ट चेतना से मैं
इस ताकत की ..

(अपने सोने पर नज़र दौड़ाता है)

लगता है, यह बहुत नहीं है,
पर कितनी मानव-चिन्ताओं
छल-कपटों, आँसू-धाराओं,

विनय और अनुनय, शापो का
ठोस रूप यह भारी सोना!
कही फ़्रांस की एक पुरानी
सोने की मुद्रा रखी थी इसी जगह पर
यह रखी है,
इसे एक विधवा ने मुझको आज दिया है
पर, ऐसा करने के पहले
तीन बालको के सग अपने
वह मेरी खिडकी के नीचे
रही देर तक मिन्नत करती,
बारिश होती रही, थमी, बरसा फिर पानी,
पर वह ढोगी, नही वहा से हिली जरा भी,
अगर चाहता, तो मैं उसको
दूर भगा देता तत्क्षण ही,
किन्तु आत्मा मे मेरी यह कोई कहता था धीमे-से,
अपने पति का ऋण लौटाने आयी है वह,
नही जेल मे अगले दिन वह जाना चाहे।
औ' यह सिक्का?
टीबो ने ला दिया मुझे यह–
उस काहिल को और धूर्त्त को
भला, कहा मिल सकता था यह?
वह अवश्य ही इसे चुराकर लाया होगा,
या फिर उसने बडी सडक पर
वृक्षो के झुरमुट मे छिपकर
किसी व्यक्ति को लूटा होगा
अगर सभी वे आसू, सारा खून, पसीना,
जो इस सब के लिये बहाये गये
यहा पर जो सचित है,
अगर अचानक धरती तल से
फूट निकल यदि बाहर आये,
जल-प्रवाह फिर से हो जाये

और हुक्म चलाता मैं तो
निश्चित ही इस दुनिया में। पर कहाँ है!

(सन्दूक खोलना चाहता है)

चाहूँ जब सन्दूक खोलना
तब हर बार पसीना मुझको आ जाता है,
दिल धक-धक करने लगता है।
डर के कारण? (नहीं, नहीं, डर किसका
मुझको हो सकता है?)
मेरा खड्ग साथ में मेरे,
है इसका इस्पात बहुत ही बढ़िया, असली,
यह मेरे मान का रक्षक।
पर दबोचती दिल को मेरे
अनजानी, अज्ञात भावना..
हम चिकित्सक यह विश्वास दिलाते बहुधा
लोग इस तरह के भी होते,
हत्या करके जिन्हें दूसरों को सुख मिलता।
चाबी जब-जब मैं ताले में डाला करता,
ऐसा ही बस, अनुभव करता,
जैसा अनुभव करते होंगे लोग
दूसरों के तन में जो छुरा भोंकते,
खुशी और डर एकसाथ ही!

(सन्दूक खोलता है)

मेरा स्वर्गिक सुख है बस, यह!

(सिक्कों को उसमें डालता है)

बहुत दिनों तक दौड़-धूप कर ली दुनिया में
लोगों की चाहों-इच्छाओं को यों पूरा करते-करते।

अब इसमें आराम करो तुम
गहरी और चैन की निदिया अब सो जाओ,
उसी तरह से जैसे देव-लोक में सोये देव-देवता।
आज पर्व का रग जमाना यहा चाहता,
जितने भी सन्दूक यहा हैं
खोलूगा मैं सबके ताले
और जलाकर मोमबत्तिया
मैं सबके सम्मुख रखूगा,
इनके बीच खडे होकर खुद
चमचम करते इन ढेरो को
जी भर आज निहारूगा मैं।

(मोमबत्तिया जलाकर एक के बाद
एक सन्दूक को खोल देता है)

मैं राजा-अधिराज यहा का! कैसी जादू भरी चमक यह!
बहुत शक्तिशाली है यह तो
और सर्वथा मेरे वश मे।
मेरा सुख-सौभाग्य इसी मे,
मेरा यश भी, कीर्ति और सम्मान इसी मे
मैं राजा-अधिराज यहा पर
लेकिन मेरे बाद यहा का
कौन बनेगा सत्ता-स्वामी? मेरा वारिस?
जिसके सिर मे केवल भूसा?
खाऊ और लुटाऊ लम्पट,
आवारो का सगी-साथी?
मेरे प्राण-पखेरू के उडते ही वह तो
शान्त और इन मौन-मूक
मेहराबो के नीचे आयेगा,
सग लालची और खुशामद करनेवाले पिट्ठू लेकर,
मेरे शव से चाबी लेकर

अट्टहास कर सन्दूको को वह खोलेगा।
मेरे कोश-खजाने तब तो
बडे सुराखो-छेदोवाली
पहुच रेशमी जेबो मे जायेगे तत्क्षण।
चूर-चूर कर डालेगा वह
इन पवित्र पात्रों को मेरे,
सम्राटो, राजाओ की सुषमा-शोभा को,
धूल, गन्दगी पर न्योछावर वह कर देगा
सारी दौलत,
बेदर्दी से उसे उडा डालेगा वह तो,
लेकिन क्या अधिकार उसे ऐसा करने का?
क्या यह सब कुछ
आसमान से आ टपका है
या फिर जैसे सफल दाव चल कही जुआरी
दौलत ढेरो-ढेर जीतता,
मैने क्या यह ऐसे ही पाई है दौलत?
है किसको यह ज्ञात
कि कितनी चीजो से इन्कार किया है,
मैंने अपना मन मारा है,
अपनी कितनी इच्छाओ को
मैंने कुचला और दबाया,
कैसे-कैसे बोझल मन मे ख्याल बनाये,
दिन की चिन्ताओं को पाला
जाग-जागकर बहुत उनीदी रातो मे है
मैंने इसका मूल्य चुकाया?
या शायद फिर
बेटा मेरा, यही कहेगा,
मेरे दिल पर
मानो काई ही छाई थी,
चाह हृदय मे मेरे मानो जाग न लेती,
नहीं कभी धिक्कारा मुझको

मेरे अन्तर, या कि आत्मा ने फिर मेरी ?
मेरे अन्तर की ध्वनि वह तो
मानो खूनी पजोवाला एक दरिन्दा
हृदय खरोचे,
घायल कर दे
एक उबानेवाली सगिनी,
वह मेहमान बहुत अनचाहा,
वह ऋणदाता
जली-कटी जो मुझे सुनाये,
वह चुड़ैल है, वह पिशाचिनी
जो जाती है हडप चादनी,
करे नाक मे दम, कब्रो के
मुर्दे होते विवश वहा से निकले-भागे
नही, नहीं,
दुख-कष्ट सहनकर
तुम धन-दौलत जरा कमाओ,
तब देखेगे,
तुम किस्मत के मारे कैसे
दौलत बडी लुटाओगे वह,
खून-पसीना जिसे एक कर
बेटा, जिसे कमाओगे तुम ?
काश, लालची नजरो से मैं
छिपा अगर पाता यह अपना तहखाना!
काश, कब्र से निकल यहा पर मैं आ सकता
रक्षा करनेवाली मानो छाया बनकर
और जिस तरह अब बैठा हू
बैठ यहा सन्दूक-तिजोरी पर मैं अपनी
रक्षा करता
अपने प्यारे इसी कोश की!

तीसरा दृश्य

(महल में)

(एल्बर्ट और ड्यूक)

एल्बर्ट

आप करें विश्वास, बहुत दिन मैंने
कड़वे, विषमय घूंट पिये हैं,
सहा बहुत अपमान विषैला।
अगर न आती अति की सीमा
कभी नहीं सुन पाते मेरे
मुंह से शिकवा और शिकायत।

ड्यूक

करता हूं विश्वास, सूरमा, नेक सूरमा,
अगर न आती अति की सीमा
व्यक्ति आप-सा
कभी नहीं ठहराता दोषी पूज्य पिता को।
ऐसे पतित बहुत कम जग में...
आप रहें निश्चिन्त,
आपके पूज्य पिता को
मैं चुपके से
आज अकेले में यह सब कुछ समझा दूंगा।
देख रहा मैं राह उन्हीं की,
बहुत दिनों से नहीं मिले हम।
मेरे दादा के घनिष्ठ वे मित्र कभी थे।
याद मुझे है
जब मैं छोटा बच्चा ही था,

पिता आपके
मुझे बिठा लेते थे
वे अपने घोड़े पर,
रख देते थे मेरे सिर पर
शिरस्त्राण वह अपना भारी, घण्टे जैसा।

(ड्यूक खिड़की से बाहर झाकता है)

कौन, वहा वह इधर आ रहा?
नही आपके पिता, वही तो?

एल्बर्ट

जी हुजूर, हैं वही आ रहे।

ड्यूक

तो फिर आप उधर कमरे मे चले जाइये,
तभी आइये जब आवाज आपको मैं दू।

(एल्बर्ट जाता है और बैरन प्रवेश करता है)

ड्यूक

बहुत खुशी है मुझे आपको
स्वस्थ और सानन्द देखकर।

बैरन

है प्रसन्नता मुझे बहुत ही
मिला मुझे आदेश आपका
और उपस्थित हुआ यहा मैं।

बढ़िया, बढ़िया भोज-दावते,
मैं इन सब के लायक अब तो नही रहा हू।
हा, लेकिन यदि छिड़ी लड़ाई,
हाय-वाय करता तब तो मैं
फिर सवार हो जाऊगा अपने घोड़े पर
औं बटोर कर पूरी ताकत
सिर्फ आपकी खातिर ही मैं
काप रहे अपने हाथो से
खीचूगा तलवार म्यान से वही पुरानी!

ड्यूक

हमे ज्ञात है लगन आपकी,
जोश और उत्साह आपका,
रहे मित्र मेरे दादा के और पिता भी
बहुत आपका आदर सदा किया करते थे,
मैंने सदा आपको माना निष्ठावान सूरमा सच्चा,
कृपया यहा पधारे, बैठे,
हैं बच्चे तो? यह बतलाये।

बैरन

सिर्फ एक बेटा है मेरा।

ड्यूक

वह क्यो नही महल मे आता?
ऊब आपको अनुभव होती,
किन्तु उसे तो शोभा देता
आयु और बैरन की ऊची पदवी
के अनुसार यहा पर
उसका आना बहुत उचित है।

बैरन

पर हुजूर, उसको तो बिल्कुल नहीं सुहाता
शोर-शराबा, भोज-दावतें उसे न रुचतीं,
कुछ सनकी है, कटा-कटा-सा,
अलग-थलग-सा वह रहता है,
सिर्फ दुर्ग के गिर्द जंगलों में वह घूमे
युवा हिरन-सा।

ड्यूक

उसका ऐसे सनकी होना
हम लोगों से दूर भागना बुरी बात है,
बहुत जल्द ही
हम उसको अभ्यस्त बनायें
नाच-रंग का,
खेल-तमाशों औ' मुकाबलों की दुनिया का।
मेरे पास भेज दें उसको, उसके पद-अनुरूप
व्यवस्था आप करें सारी चीजों की
माथे पर बल पड़े आपके,
शायद आप थके-हारे हैं?
शायद सफर बहुत लम्बा था?

बैरन

नहीं हुजूर थका-हारा मैं,
लेकिन सुनकर बात आपकी
मुझे परेशानी ने घेरा।
नहीं चाहता था मैं उसकी
चर्चा कुछ आपके सम्मुख,
किन्तु आप तो विवश कर रहे वह कहने को,

जिसे गुप्त ही रखना मैं तो चाह रहा था।
यह मेरा दुर्भाग्य,
नही वह योग्य आपकी अनुकम्पा के।
अपना यौवन बिता रहा वह
सभी अधर्मी कृत्यो और कुकर्मो मे ही

ड्यूक

बैरन, ऐसा इसीलिये है,
क्योकि सभी लोगो से रहता दूर, कटा वह,
एकाकीपन, आलस ये तो
नष्ट युवा लोगो को करते।
उसे भेजिये पास हमारे,
उसे भूल जायेगी वे सब बुरी आदते,
एकाकीपन के ही कारण
जिनका जन्म हुआ है उसमे।

बैरन

क्षमा चाहता मैं हुजूर से,
किन्तु नही ऐसा कर सकता

ड्यूक

क्या कारण है?

बैरन

मुझ बूढे को करे नही मजबूर कि
खोलू मैं मुह अपना

ड्यूक

मैं करता हूं मांग, बनायें आप मुझे यह,
किस कारण इन्कार कर रहे।

बैरन

बहुत क्रुद्ध हूं मैं बेटे से।

ड्यूक

सो किस कारण?

बैरन

उसने एक कुकर्म किया है।

ड्यूक

क्या कुकर्म है, यह बतलायें।

बैरन

नहीं कर मजबूर, यही बस, अच्छा होगा

ड्यूक

अजब बात है,
शायद अब [illegible] उसका कारण?

बैरन

हा, हा, शर्म मुझे आती है

ड्यूक

ऐसा उसने किया भला क्या ?

बैरन

मेरी हत्या कर डाले, यह यत्न किया था।

ड्यूक

यत्न किया हत्या का उसने ?
दण्ड कड़ा मैं दिलवाऊंगा
इस काली करनी का उसको।

बैरन

दूंगा नहीं सबूत,
जानता हूं मैं बेशक,
वह तो पूरे मन से मेरी मौत चाहता
है मुझको मालूम कि कोशिश की है उसने

ड्यूक

कैसी कोशिश ?

बैरन

मुझ पर न, ऐसी कालिख।

(एल्बर्ट तेजी से कमरे में आता है)

एल्बर्ट

बिल्कुल झूठ बात यह बैरन!

ड्यूक

(एल्बर्ट से)

कैसे जुर्रत की यह तुमने!

बैरन

अरे, यहां तुम। ऐसे तुम अपमान कर रहे!
ऐसे शब्द पिता से अपने तुम कहते हो!
मैं झूठा हूं! ऐसा कहो ड्यूक के सम्मुख,
उनके सम्मुख, जो हैं स्वामी हम दोनों के!
मुझसे, मेरे बारे में ये शब्द
कह रहे.. याकि तुम्हें भ्रम,
शक्ति भुजाओं में अब मेरी शेष नहीं है
एक सूरमा जैसी ताकत।

एल्बर्ट

आप बहुत, बिल्कुल झूठे हैं।

बैरन

भी नहीं हुआ है इसपर
शान प्रभु न्याय-धर्म का!
तलवार करेगी निर्णय हम दोनों का!
मैं फेंक रहा दस्ताना।

(दस्ताना फेंकता है जिसे बेटा झपट लेता है)

एल्बर्ट

आभारी हूं। यह पहला
उपहार मिला है मुझे पिता से।

ड्यूक

क्या देखा मेरी आंखों ने?
क्या यह हुआ सामने मेरे?
वृद्ध बाप से बेटा लड़ने को तत्पर है!
कैसे बुरे ज़माने में मैं ड्यूक बना हूं!
बस, अब आप न मुंह से कोई शब्द निकालें
है दिमाग़ में ख़लल आपके।
और दोष है बच्चे तुम भी
ख़बरदार जो अब कुछ बोले।

(एल्बर्ट से)

[illegible] दीजिए इस [illegible] को
मुझे दीजिए यह दस्ताना।

(ड्यूक दस्ताना छीन लेता है)

मोजार्ट और सालेरी

पहला दृश्य

(कमरा)

सालेरी

लोग सभी ऐसा कहते हैं—न्याय
नही है इस धरती पर,
किन्तु नही है न्याय वहा भी—उस दुनिया मे।
मेरे लिये स्पष्ट बात यह
वैसे ही, जैसे स्वर सरगम।
कला-पुजारी बनकर मैंने जन्म लिया था,
याद मुझे है, मैं बच्चा था
और पुराने गिरजाघर मे जब बजता था
आर्गन-बाजा ऊचे-ऊचे
सुध-बुध खोकर मैं सुनता था,
डूब-डूब उसमे जाता था
बरबस ही बहने लगते थे
मेरी आखो से तब आसू सुखद हर्ष के।
सभी तरह के खेल-तमाशे,
मनबहलाव सभी बेमानी
बचपन मे ही सब ठुकराये,
ज्ञान सभी, सारी विद्यायें,
नहीं जिन्हे सगीत-कला से कोई मतलब
मेरे लिये परायी थी वे और घृणित थी सभी विधायें।
मैंने दृढ़ता और दम्भ से
उन सब से अपना मुह मोडा,

बस केवल संगीत-कला में
डूब गया मैं,
केवल उसमें नाता जोड़ा।
मुश्किल था पहला डग भरना
प्रथम मार्ग भी सूना-सूना,
किन्तु शुरू की सभी मुश्किलों
की दीं मैंने मोड़ कलाई।
मैंने बस, संगीत-शिल्प को
मुख्य कला-आधार बनाया
और रह गया शिल्पी बनकर।
मुक्त, किन्तु बेशक नीरस ही
दौड़े अंगुलियां बाजे पर
हो अचूक स्वर-ज्ञान, यही बस, ध्येय बनाया
इसी तरह से साध लिया अपने कानों को,
मैंने प्राणहीन ध्वनियों को
मैंने सब संगीत-स्वरों को
मानो शव की भांति
खूब चीरा-फाड़ा था,
बीजगणित की भांति
कभी परखी सुस्वरता।
ऐसे पूरी तैयारी कर
नियम-शास्त्र पारंगत होकर
सृजन, कल्पना के अपने डैने फैलाये
तभी लगा स्वर-रचना करने।
किन्तु बहुत चुपके-चुपके से, छिपे-छिपे ही
गुप्त रूप से यह करता था
रोशन होगा नाम
ख्याति मैं पा जाऊंगा,
सोच न ऐसा मैं सकता था।
बहुत बार यों भी होता था—
खाना-पीना और नींद को भूल अकेला

मौन-मूक बैठा रहता था मैं एकाकी,
दो या तीन दिवस तक अपनी
मधुर प्रेरणा के उल्लास, अश्रु में डूबा,
इसके बाद जला देता था स्वर-रचना को
उदासीनता से जलते देखा करता था
अपने भाव, हृदय से उमडी उन ध्वनियों को
होते लुप्त लपट में हल्के धूम्र-धुए में।
इतना ही क्यों? प्रकट हुआ वह
जब ग्ल्यूक हमारे ऊंचे कला-क्षितिज पर
और किये उद्घाटित नये रहस्य कला के
उसने, उस महान ने सहसा।
(वे रहस्य थे बहुत गहन, सुन्दर, आकर्षक),
नहीं तजा था क्या मैंने वह
तब तक था मालूम मुझे जो,
जिसमें मुझको प्यार बहुत था
और आस्था जिसके प्रति थी गहरी मन में?
नहीं भला अनुकरण किया था बडी खुशी से
उसका ऐसे, जैसे कोई भटका राही
चुपके-चुपके चल देता है उसके पीछे,
जो है उसको उसकी सीधी राह दिखाता?
बडे जतन से, बडी लगन से औ' दृढता से
सीमाहीन, अपार कला के बृहद क्षेत्र में
ऊंचाई पर पहुंचा आखिर
और खिल उठी मधुर-मधुर मुस्कान ख्याति की,
स्पन्दित करने लगी दिलों को
मेरी सर्जित स्वर रचनायें।
बहुत सुखी था – आनन्दित होता था अपने
शान्त सृजन से बडी सफलता और ख्याति से।
बहुत सुखी होती थी मुझको
अद्भुत कला-जगत के साथी
जब करते थे सृजन नये कुछ

और सफलता थी जब उनके पाव चूमती।
नही। ईर्ष्या नही कभी मैंने जानी थी
नही कभी भी! ईर्ष्या से अनजान रहा मैं
जब बर्बर पेरिसवालों पर
मानो जादू बन छाया था
पीचीनी का वह रचना-स्वर,
तब भी नही हुई थी ईर्ष्या
इफ़ीगेनी की रचना के प्रारम्भिक स्वर
मैंने पहली बार सुने जब।
कौन भला यह कह सकता है
मैं गर्वीला सालेरी भी
कभी तिरस्कृत जलन-व्यथा से
व्यथित हुआ था,
ईर्ष्या का असहाय साप रेगा था मन मे,
जिसे लोग पैरो के नीचे
रौद, कुचलकर धूल मिलाते?
नही, नही, कोई कह सकता!..
लेकिन मैं खुद आज कह रहा,
स्वय कह रहा – मैं ईर्ष्या से जला जा रहा,
मुझको बेहद जलन हो रही,
बडी यातना सहता हू मैं। – मेरे इश्वर!
कहा भला है न्याय तुम्हारा,
जब तुमने पावन प्रतिभा का
तुमने अजर-अमर मेधा का
नही दिया वरदान मुझे, जो
अपनी सुध-बुध भूल कला की पूजा करता,
जिसने उसपर अपना सारा प्यार लुटाया,
कला-साधना मे ही सारी शक्ति लगायी,
जिसने तुमसे बार-बार इसका वर मागा,
मुझे पुरस्कृत नही किया

उस पागल को,
उस काहिल को, आवारा को?
ओ मोज़ार्ट, मोज़ार्ट!

(मोज़ार्ट प्रवेश करता है)

मोज़ार्ट

अरे! तुमने देख लिया था मुझको!
मैंने चाहा था मैं तुमको
मज़ेदार कुछ चीज़ दिखाऊँ।

सालेरी

तुम हो यहाँ! बहुत देर से?

मोज़ार्ट

मैं तो अभी-अभी आया हूँ।
रचना नई दिखाऊँ तुमको, सोच यही बस
कदम तुम्हारी ओर बढ़ाता आता था मैं
पर मदिरालय के सम्मुख जिस क्षण पहुँचा मैं
सहसा मैंने सुनी वायलिन
सच कहता हूँ दोस्त सालेरी!
इससे बढ़कर हास्यास्पद कुछ भी तो मैंने
नहीं सुना अब तक जीवन में
मदिरालय में अंधा वायलिन-वादक कोई
बजा रहा था मेरी रचना
voi che sapete*

---

* आह आप, जिसे ज्ञात (इतालवी)। —सं०

बस, कमाल है!
नहीं रख सका खुद को वश में,
ले आया हूं मग उसे मैं
ताकि कराऊं तुम्हें तनिक
आस्वादन उसकी इसी कला का।
भीतर आओ!

(वायलिन लिये हुए अंधा बूढ़ा भीतर आता

तुम मोज़ार्ट की कोई रचना हमें सुनाओ!

(बूढ़ा 'डोन जुआन' का एक प्रेम-गीत बजाता
मोज़ार्ट ठठाकर हंसता है)

सालेरी

और इस तरह हंसते हो तुम?

मोज़ार्ट

अरे, सालेरी! नहीं तुम्हें क्या हंसी आ रही?

सालेरी

नहीं आ रही।
नहीं हंसी तब आती मुझको,
जब रफ़ेल की मादोना का कोई
रंगसाज़ है चित्र बनाता,
नहीं हंसी तब आती मुझको
कोई तुकबन्दी करनेवाला जब
दांते की शैली में रचना करने लगता।

मोत्सार्ट

अच्छी लगी न रचना मेरी?

सालेरी

ओह! कितनी गहराई इसमें!
ओतप्रोत कितनी साहस से!
कितनी सुन्दर है यह रचना!
मोत्सार्ट, तुम भगवान, जानते नहीं स्वयं यह
लेकिन यह है ज्ञात मुझे तो
सच मुझको तो।

मोत्सार्ट

अरे वाह! सच? हो सकता है
लेकिन यह भगवान तुम्हारा
अब तो बिल्कुल भूख का मारा।

सालेरी

बात अगर तुम मेरी मानो—
स्वर्ण सिंह मदिरालय में हम
आज करेंगे दोनों भोजन।

मोत्सार्ट

बड़ी खुशी से।
लेकिन जब मैं घर हो आऊँ
बीबी को इतना बतलाऊँ
भोजन नहीं करूँगा घर पर
राह नहीं वह मेरी देखे।

भला यह हो सकता है?
बैठो मेरे दोस्त,
सुनाओ, मैं सुनता हू।

मोज़ार्ट

(पियानो पर जा बैठता है)

करो कल्पना एक व्यक्ति की . लेकिन किसकी?
बेशक मेरी—पर अब की तुलना मे
जब मैं कुछ जवान था,
प्रेम-रग मे रगा हुआ
पर, थोडा-थोडा—
किसी सुन्दरी, किसी मित्र की सगत मे हू,
कह लो, मैं हू साथ तुम्हारे
मैं प्रफुल्ल मन .. तभी अचानक
होता है आभास क़ब्र का
छा जाता है घुप्प अंधेरा
या ऐसा कुछ और समझ लो .
और सुनो अब।

(रचना बजाता है)

सालेरी

लिये आ रहे थे यह रचना
और निकट मदिरालय के रुक
सुनने लगे वायलिन तुम बूढे, अधे की!
हे मेरे भगवान!
तुम तो अपना मूल्य

प,
ईश्वरा का है
आखिरी।
ारह मैंने इसे सम्हाला
हेजे रक्खा –
अब तक
ी बार लगा है मुझको
ऐसा घाव,
सहना है मुश्किल,
ा मैंने अपने उस निश्चित
मन के साथ बैठकर
ह मेज पर खाना खाया
न्तु प्रलोभन, उसकी
ीमी खुसुर-फुसुर पर
मैंने कभी न कान दिया था
मैं कायर हूं, बात न ऐसी
बेशक मन पर लगी ठेस को
मैं बेहद अनुभव करता हूं
बेशक मुझको जीवन के प्रति मोह न ज्यादा
फिर भी ऐसे क्षण को मैं तो गया टालता।
कैसे मर जाने की इच्छा व्यथित
मुझे करती रहती थी
मर जाऊं मैं? तब यह भाव हृदय में आता –
शायद जीवन ले आयेगा अनजान उपहार अचानक
शायद मुझपर छा जायेगा
उन्मादी उल्लास अनूठा
निया प्रेरणा और सृजन की आ जायगी
यह भी सम्भव है कि कोई
नया जन्म लेगा धरती पर
और करेगा सृजन अनूठा
मुग्ध-विभोर हो जाऊंगा तब

सालेरी

इन्तजार मैं यहां करूंगा, भूल न जाना!
नहीं! नहीं, वह बदल सकूं मैं
जो कुछ मेरे भाग्य बदा है
लिखा गया मेरी किस्मत में
बाधा इसके लिये बनूं मैं, इसको रोकूं—
वरना नाश हमारा सब का,
हम जो हैं संगीत-पुजारी,
इसके सेवक निश्चित समझो,
प्रश्न नहीं है केवल मेरा
मैं जो थोड़ा ख्याति प्राप्त हूं..
और अगर जीता ही जायेगा यह मोत्सार्ट
अमर कला के नये शिखर को वह छू लेगा
लाभ भला क्या इसमें होगा?
क्या वह ऊंचा कर देगा
संगीत-कला को? नहीं, नहीं।
जैसे ही वह इस दुनिया से गायब होगा
वैसे ही संगीत-कला का
स्तर फिर नीचे आ जायेगा
वारिस अपना नहीं यहां कोई छोड़ेगा।
लाभ भला क्या उससे हमको?
स्वर्गदूत चेरब-सा वह तो
स्वर्गिक गीत धरा पर
कुछ गान ले आया,
ताकि हमारे मन में
हम, जो मानव नश्वर इस धरती के,
[illegible] कर दे
पंखहीन इच्छायें, चाहे
और स्वयं वो फुर उड़ जाये।
तो अच्छा है उड़ जाओ तुम!

सालेरी

निश्चय ही हो किसी बात से खिन्न आज तुम ?
बढ़िया खाना, बढ़िया मदिरा,
लेकिन तुम हो ऐसे गुमसुम,
माथे पर अपने बल डाले।

मोत्सार्ट

सच बतलाऊं,
मैं अन्त्येष्टि-गीत के कारण चिन्तित
मैं आतुर हूं।

सालेरी

क्या कहते हो!
कब से तुम कर रहे सृजन
ऐसी रचना का ?

मोत्सार्ट

बहुत दिनों से बीत गये सप्ताह तीन
उसकी रचना में।
पर अजीब-सी यह घटना है
मैंने नहीं सुनाई तुमको ?

सालेरी

नहीं सुनाई।

मोत्सार्ट

तब तुम सुनो मीत, यह घटना!
हफ्ते तीन हुए मैं घर पर
बहुत देर से वापस आया

घृणित अतिथि के संग कभी जब
मैं दावत का लुत्फ उठाता,
शायद तब यह भाव हृदय में मेरे आता,
बहुत भयानक किसी शत्रु से भेंट अभी होनेवाली है,
शायद किसी ठेस घातक का
उस गर्वीले दूर गगन से
वज्र अभी गिरनेवाला है,
बहुत काम आओगे तब तुम
ईजोरा के विष-उपहार।
और बात सच मेरी निकली!
आखिर मेरा शत्रु मिला है,
एक नया हेडन यह मुझको,
अनुभव मैंने स्वर्गिक सुख-उल्लास किया है!
आया वह क्षण! ओ, प्यारे उपहार प्यार के
मैत्री-चषक में आज तुम्हें ही जाना होगा।

दूसरा दृश्य

(मदिरालय का विशेष कक्ष, पियानो रखा है,
मोत्सार्ट और सालेरी मेज पर बैठे हैं।

सालेरी

क्या तुम आज उदास और उखड़े-उखड़े हो?

मोत्सार्ट

सालेरी

निश्चय ही हो किसी बात से खिन्न आज तुम ?
बढ़िया खाना, बढ़िया मदिरा,
लेकिन तुम हो ऐसे गुमसुम,
माथे पर अपने बल डाले।

मोत्सार्ट

सच बतलाऊं,
मैं अन्त्येष्टि-गीत के कारण चिन्तित,
मैं आतुर हूं।

सालेरी

क्या कहते हो!
कब से तुम कर रहे सृजन
ऐसी रचना का ?

मोत्सार्ट

बहुत दिनों से, बीत गये सप्ताह तीन
उसकी रचना में।
पर अजीब-सी यह घटना है
मैंने नहीं सुनाई तुमको ?

सालेरी

नहीं सुनाई।

मोत्सार्ट

तब तुम सुनो, मीत, यह घटना!
हफ्ते तीन हुए मैं घर पर
बहुत देर से वापस आया

मोज़ार्ट

शर्म आ रही इसे मानते

सालेरी

किसे मानते?

मोज़ार्ट

चैन नही लेने देता है मुझे
रात को, और न दिन को
व्यक्ति वही तो,
काले वस्त्र पहन जो आया।
छाया बनकर मेरे पीछे
जैसे हर क्षण वह फिरता है।
इस पल भी ऐसे लगता है,
हम दोनो के साथ तीसरा वह बैठा है।

सालेरी

अरे, हटाओ! यह तो बच्चो जैसा डर है!
ऐसे व्यर्थ विचारो को तुम दूर भगाओ।
मेरा एक दोस्त बोमार्चेस अक्सर यही कहा करता था –
बुरे ख्याल जब उलटे-सीधे मन में आये,
खोलो तुम शैम्पेन और बस, जाम उठा लो
या फिर बैठो और
'फिगारो की शादी' का
पाठ करो तुम।

मोजार्ट

हा, बोमार्चेस तो था प्यारा दोस्त तुम्हारा,
तुमने उसके लिये रचा 'तारार' अपिरा।
सुन्दर रचना। उसमें धुन है
एक बहुत ही मुझको प्यारी...
जब मैं होता खूब रंग में
उसको ही बस, दोहराता हूं...
ला, ला, ला, ला . क्या यह
सच है बोमार्चेस ने
किसी व्यक्ति को जहर दिया था?

सालेरी

व्यर्थ बात है। उस जैसा दिल्लगीबाज
कब कर सकता था ऐसी हरकत।

मोजार्ट

वह तो प्रतिभावान, विभूति था
हम-तुम जैसा। प्रतिभा और
नीचता दोनों – संग न रहती।

सालेरी

क्या ऐसा ही ख्याल तुम्हारा?

(मोजार्ट के गिलास में जहर डाल देता है)

पी लो इसको!

मोत्सार्ट

मैं पीता हूं जाम स्वास्थ्य का, दोस्त, तुम्हारे,
बना रहे यह मन का बन्धन बीच हमारे,
ध्वनियों का, संगीत-स्वरों का।

(जाम पीता है)

मोत्सार्ट

ज़रा रुको तो
रुको, रुको तो! मेरे बिना
अकेले अपना जाम पी गये?

मोत्सार्ट

(नेप्किन को मेज़ पर फेंक देता है)

बहुत हो गया खाना-पीना।

(पियानो की ओर जाता है)

मेरा यह अन्त्येष्टि गीत
अब सुनो दोस्त तुम।

(पियानो पर धुन बजाता है)

तुम रोते हो?

सालेरी

ऐसे कडुवे, मीठे आंसू
ये तो पहली बार आज आंखों में आये,
मानो मैंने बहुत कठिन कर्त्तव्य निभाया

मानो नश्तर चला अंग वह मैंने काटा,
जो दुखता था, टीस रहा था!
मोजार्ट, मेरे दोस्त
नहीं करो परवाह आंसुओं की तुम मेरे,
कृपया जारी रखो वादन,
भरते जाओ जल्दी-जल्दी
तुम ध्वनियों से
मेरा अन्तर, तुम मेरा मन

मोजार्ट

काश, कि सब यों अनुभव करते
शक्ति स्वरों की!
किन्तु नहीं, तब इस जग का अस्तित्व न रहता,
जीवन की साधारण, दैनिक इच्छाओं की
चिन्ता नहीं किसी को रहती,
सब ही हो जाते दीवाने मुक्त कला के।
हम जैसे निश्चिन्त और खुशकिस्मत प्राणी
इस दुनिया में इने-गिने हैं,
तुच्छ समझते लाभ और उपयोग-
मूल्य को जो जीवन के,
ऐसे प्राणी
जो हैं केवल कला-पुजारी।
मेरी बात नहीं क्या सच है?
किन्तु तबीयत मेरी कुछ ढीली-ढीली है
मन भारी-भारी है मेरा,
मैं अब घर जाकर सोता हूं।
अच्छा विदा!

सालेरी

विदा, विदा।

(स्वगत)

बहुत समय तक नींद तुम्हारी नहीं
खुलेगी, ओ मोज़ार्ट!
पर उसने जो बात कही थी,
क्या वह सच थी? क्या मैं
प्रतिभावान नहीं हूं? प्रतिभा
और नीचता दोनों संग न रहती।
झूठ बात क्या—उसकी, उस बोनारोट्टी की?
या कि बनाया अपने मन से
लोगों ने यह झूठा किस्सा—
वैटीकान का जो निर्माता
कभी नहीं था वह हत्यारा?

१८३०

सालेरी

विदा, विदा।

(स्वगत)

बहुत समय तक नीद तुम्हारी नही
खुलेगी, ओ मोजार्ट!
पर उसने जो बात कही थी,
क्या वह सच थी? क्या मैं
प्रतिभावान नही हू? प्रतिभा
और नीचता दोनो सग न रहती।
झूठ बात क्या – उसको, उस बोनारोट्टी की?
या कि बनाया अपने मन स
लोगो ने यह झूठा किस्सा –
वैटीकान का जो निर्माता
कभी नही था वह हत्यारा?

१८३०

लेपोरेल्लो

पहरेदार मिले जो पहला,
हर जिप्सी, हर गायक-वादक धुत्त नशे मे,
या कि तुम्हारे जैसा कोई ढीठ सूरमा,
जो कि बगल मे खड्ग दबाये
और लबादे से हो अपना बदन छिपाये।

डोन जुआन

इसमे भी क्या बडी मुसीबत, बेशक
ले पहचान मुझे वे,
बस, इतना ही सिर्फ चाहता, स्वय
बादशाह मुझे न देखे,
वैसे नही किसी से भी डरता-दबता मैं
मेड्रिड मे।

लेपोरेल्लो

और अगर कल
खबर बादशाह के कानो मे
पहुच गयी यह तुम निर्वासित
अपनी ही इच्छा से वापस मेड्रिड आये,
तो वह कैसा हाल करेगा, बतलाओ तो ?

डोन जुआन

निर्वासित कर देगा, लेकिन वह सिर ही
मेरा कटवा दे, है विश्वास, न ऐसा होगा।
नही राज्य के सम्मुख तो मैं हू अपराधी,

मेरे प्रति कम स्नेह दिखाकर
उसने किया मुझे निर्वासित,
ताकि चैन की सास ले सकू,
करे न मुझको परेशान सब प्रियजन उसके,
जिसकी मैंने हत्या की थी

लेपोरेल्लो

ऐसा है तो अच्छा होता
वही मजे से बैठे रहते!

डोन जुआन

बैठा रहता वहा मजे से! बस,
इतना ही शुक्र करो तुम — नही,
ऊब से निकली मेरी जान वहा पर।
जाने कैसे लोग, वहा की धरती कैसी
और गगन भी?
मानो बिल्कुल धुआ धुआ-सा।
और नारिया? मेरे बुद्धू लेपोरेल्लो,
सच कहता हू, अन्दालूजी की मामूली
हर किसान औरत को उनकी
सबसे रूपवती नारी से बढ़कर मानू।
शुरू-शुरू मे वे कुछ मेरे मन को भायी,
नीली आखे, गोरा तन औ'
सहज नम्रता, थी नवीनता,
किन्तु भला हो ईश्वर का जल्दी ही मैने
समझ लिया यह —
नही मुझे है उनसे कुछ भी लेना-देना,
उनम नारी जैसी कोई बात नही है
वे तो मानो मोम-पुतलिया।

लेपोरेल्लो

किसको अब मेड्रिड मे हम जाकर खोजेगे ?

डोन जुआन

लौरा को ही !
मैं तो सीधा उसके पास भाग जाऊगा।

लेपोरेल्लो

यह तो हुई बात काम की।

डोन जुआन

घुस जाऊगा सीधा उसके दरवाजे मे
और किसी को अगर वहा पर मैं पाऊगा,
वह खिडकी से बाहर कूदे,
मैं यह उसको बतलाऊगा।

लेपोरेल्लो

बेशक, बेशक। फिर से आये रग, लहर मे।
जो दुनिया मे नही रही,
हम उनकी अधिक न चिन्ता करते।
कौन हमारी ओर आ रहा ?

(मठवासी साधु प्रवेश करता है)

साधु

[illegible]
[illegible]

लेपोरेल्लो

अजी नहीं। हम तो खुद [illegible]
और यहाँ पर सैर कर रहे।

डोन जुआन

कौन [illegible] न है किसको?

साधु

अभी यहा आनेवाली है डोना आन्ना
वह समाधि पर अपने पति की।

डोन जुआन

डोना आन्ना दे सोल्वा! क्या कहते हैं!
पत्नी उसी कमांडर की
याद नहीं है, किसने उसकी
हत्या की थी?

साधु

डोन जुआन नाम है जिसका,
उस लंपट ने, उसी दुष्ट ने, धर्महीन ने
हत्या उसके पति की की थी।

लेपोरेल्लो

ओहो! खूब रही यह!
यहां शान्त मठ में भी
डॉन जुआन नाम की महिमा पहुंची,
सन्यासी औ' साधु भी उसका यश गाये।

साधु

शायद आप जानते उसको?

लेपोरेल्लो

हम उसको? नहीं, नहीं।
कहां आजकल वह रहता है?

साधु

नहीं यहां पर।
बहुत दूर निर्वासित है वह।

लेपोरेल्लो

शुक्र खुदा का
उतना ही अच्छा है,
जितना दूर रहे वह।
ऐसे सारे बदमाशों को
किसी एक बोरे में भरकर
फेंक दिया जाये सागर में।

डोन जुआन

क्या बकते हो?

लेपोरेल्लो

चुप रहिये जी—
झूठ-मूठ मैं ऐसे कहता।

डोन जुआन

इसी जगह क्या दफ़न कमांडर?

साधु

इसी जगह पर। यहां स्मारक
पत्नी ने उसका बनवाया,
और यहां हर दिन आती वह,
ताकि प्रार्थना करे
आत्मा चैन पा सके उसके पति की
और कर सके हल्का रोकर मन को अपने।

डोन जुआन

क्या अजीब विधवा है यह भी?
और देखने में भी सुन्दर?

साधु

नारी के सौन्दर्य, रूप की ओर ध्यान दें
हमें साधुओं को यह वर्जित,
किन्तु पाप है झूठ बोलना,
उसका रूप अनूठा अद्भुत,
कोई सन्यासी भी इससे
कर इन्कार नहीं सकता।

डोन जुआन

अब समझा मैं, क्यों था पति यों ईर्ष्या करता,
डोना आन्ना को था घर में बन्दी रखता
हममें से कोई भी उसको
नहीं आज तक देख सका है।
मेरा मन यह चाहे, उससे बात करूं मैं।

साधु

क्या कहते हैं, डोना आन्ना किसी मर्द से
नहीं कभी भी बोले-चाले।

डोन जुआन

किन्तु आपसे, पिता महोदय?

साधु

मेरी तो है बात दूसरी – मैं मठवासी।
लो, वह आई।

(डोना आन्ना भीतर आती है)

डोना आन्ना

पिता महोदय, द्वार खोलिये।

साधु

अभी खोलता हूं, सेनोरा, राह
आपकी देख रहा मैं।

(डोना आन्ना साधु के पीछे-पीछे आती है)

लेपोरेल्लो

क्यों, कैसी है?

डोन जुआन

विधवा के इस काले बड़े लबादे में तो
बिल्कुल नज़र नहीं वह आती,
बस, छोटी-सी एड़ी की ही झलक मिली है।

लेपोरेल्लो

वही आपके लिये बहुत है।
शेष कल्पना से ही अपनी
उसे आप चित्रित कर लेंगे,
क्योंकि कल्पना-शक्ति आपकी
चित्रकार से भी बढ़कर है
और आपके लिये बराबर
आप करें आरम्भ कहां से
भौंहों से या फिर पैरों से।

डोन जुआन

लेपोरेल्लो, तुम से कहता
परिचय इससे मैं कर लूंगा।

लेपोरेल्लो

खूब रही यह! कौन भला ऐसा करता है।
उसके पति की हत्या कर दी
अब निहारना चाह रहे विधवा के आंसू।
कोई शर्म-हया है बाकी।

डोन जुआन

किन्तु झुटपुटा, हुआ अंधेरा।
इससे पहले चांद चमकने लगे गगन में
और अंधेरा बने उजाला
हमें पहुंचना है मेड्रिड में।

(बाहर जाता है)

लेपोरेल्लो

यह कुलीन, अभिजात स्पेनी
किसी चोर की तरह रात की बाट जोहता
डरे चांद से – मेरे ईश्वर!
यह अभिशाप भरा जीवन है।
कब तक मुझको इसका साथ निभाना होगा?
सच कहता हूं, शक्ति नहीं अब।

दूसरा दृश्य

(कक्ष। लौरा के यहां रात का भोजन हो रहा है)

पहला मेहमान

खाता हूं मैं कसम और यह कहता लौरा,
सचमुच इतना बढ़िया अभिनय
तुमने अब तक नहीं किया था।
और भूमिका की अपनी
गहराई में तुम कितनी उतरी!

दूसरा मेहमान

और उसे विकसित भी कैसे, खूब किया है!

तीसरा मेहमान

कलापूर्ण भी वह कितनी थी!

लौरा

हां, कुछ ऐसा आज हो गया,
मेरी हर गति और शब्द भी
मानो था वरदान प्रेरणा का स्वाभाविक,
शब्द इस तरह उमड रहे थे
मानो नही कही मस्तक से,
मेरे दिल से वे तो निकले

पहला मेहमान

बिल्कुल सच है,
चमक तुम्हारी आखो मे अब भी दिखती है,
गालो पर है अब भी लाली,
अब भी तुम तो सिक्त प्रेरणा से पूरित हो।
लौरा, ऐसे प्रेरित क्षण को व्यर्थ नही अब तुम जाने दो
तुम कुछ गाओ।

लौरा

तो गिटार तुम मेरा लाओ।

(गाती है)

सभी

वाह, वाह, वाह, वाह! लाजवाब है।
क्या गाया है!

पहला मेहमान

हम आभारी जादूगरनी! हृदय
हमारे जादू मे बध जाते तेरे।
जीवन मे जितनी खुशिया है
सिर्फ़ प्यार ही बढकर है
सगीत-गीत से,
किन्तु प्यार सगीत स्वय है . देखो तो तुम –
यह उदास मेहमान तुम्हारा
डोन कारलोस
वह भी कैसा मुग्ध हो रहा।

दूसरा मेहमान

कैसे सुर, कैसी ध्वनिया है!
कितनी दिल की धडकन, स्पन्दन!
लौरा, किसके शब्द भला ये?

लौरा

डोन जुआन के।

डोन कारलोस

क्या कहती हो? डोन जुआन के?

लौरा

हा, उसने ही कभी रचा था इन शब्दो को
मेरे सच्चे मित्र प्रवर ने, मेरे उस चचल प्रेमी ने।

करुणापूर्ण भी वह कितनी थी!

लौरा

हाँ, कुछ ऐसा आज हो गया,
मेरी हर गति और शब्द भी
मानो था वरदान प्रेरणा का स्वाभाविक,
शब्द इस तरह उमड़ रहे थे
मानो नही कही मस्तक से,
मेरे दिल से वे तो निकले

पहला मेहमान

बिल्कुल सच है,
चमक तुम्हारी आखो मे अब भी दिखती है,
गालो पर है अब भी लाली,
अब भी तुम तो सिक्त प्रेरणा से पूरित हो।
लौरा, ऐसे प्रेरित क्षण को व्यर्थ नही अब तुम जाने दो,
तुम कुछ गाओ।

लौरा

तो गिटार तुम मेरा लाओ।

(गाती है)

सभी

वाह, वाह, वाह, वाह! लाजवाब है।
क्या गाया है!

पहला मेहमान

हम आभारी जादूगरनी! हृदय
हमारे जादू मे बध जाते तेरे।
जीवन मे जितनी सुषिया है
सिर्फ प्यार ही बढकर है
सगीत-गीत से,
किन्तु प्यार सगीत स्वय है   देखो तो तुम–
यह उदास मेहमान तुम्हारा
डोन कारलोस
वह भी कैसा मुग्ध हो रहा।

दूसरा मेहमान

कैसे सुर, कैसी ध्वनिया है!
कितनी दिल की धडकन, स्पन्दन!
लौरा, किसके शब्द भला ये?

लौरा

डोन जुआन के।

डोन कारलोस

क्या कहती हो? डोन जुआन के?

लौरा

हा, उसने ही कभी रचा था इन शब्दो को
मेरे सच्चे मित्र प्रवर ने, मेरे उस चचल प्रेमी ने।

डोन कारलोस

धर्म, आत्मसम्मान हीन तुम्हारा डोन जुआन है,
नीच, कमीना,
तुम हो, तुम हो बिल्कुल उल्लू!

लौरा

क्या दिमाग चल निकला तेरा?
मैं आदेश नौकरों को दे दूगी अभी बुलाकर
कर डालें वे तेरे टुकड़े
बेशक तुम कुलीन हो स्पेनी।

डोन कारलोस

(उठकर खड़ा हो जाता है)

उन्हें बुलाओ!

पहला मेहमान

लौरा, यह क्या पागलपन है,
डोन कारलोस, बुरा न मानो। भूल गयी वह ...

लौरा

भूल गयी क्या? यही कि न्यायिक द्वन्द्व-युद्ध में
हत्या की इसके भाई की
मेरे डोन जुआन ने।
सचमुच इसका खेद मुझे है —
नहीं मौत के घाट उतारा उसने इसको।

डोन कारलोस

बेवकूफ मैं, भडक उठा जो।

लौरा

अहा, मानते हो यह खुद ही – बेवकूफ हो।
तो हो जाये सुलह हमारी।

डोन कारलोस

मैं ही अपराधी हू, लौरा,
क्षमा चाहता। किन्तु नाम वह
सुनकर शान्त न रह पाता हू

लौरा

पर मेरा अपराध भला क्या,
यदि हर पल ही मेरे मुह पर
नाम वही बरबस आ जाता ?

मेहमान

अब बिल्कुल नाराज नही हो
यही दिखाने की खातिर तुम, प्यारी लौरा,
गाना कोई और सुनाओ।

लौरा

तो यह होगा आज शाम का
अन्तिम गाना।
रात हो गयी, विदा समय अब।
पर, क्या गाऊ ?
ख़ैर, सुनो यह।

(गाती है)

सभी

कितना बढ़िया, ओह, कितना अच्छा गाया है!

लौरा

विदा, आप अब जा सकते हैं।

मेहमान

लौरा विदा, विदा, हम जाते।

(मेहमान बाहर जाते हैं। लौरा डोन कारलोस को राह

लौरा

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

डोन कारलोस

मुचाकिस्मत वह !
तो तुम प्यार उसे करती थी।

(लौरा सिर झुकाकर हामी भरती है)

बेहद ?

लौरा

बेहद।

डोन कारलोस

अब भी प्यार उसे करती हो ?

लौरा

इस क्षण ?
इस क्षण प्यार नही करती हू। एकसाथ
मैं दो को प्यार नही कर सकती।
इस क्षण प्यार तुम्हे करती हू।

डोन कारलोस

लौरा, यह बतलाओ,
कितनी उम्र तुम्हारी ?

लौरा

वर्ष अठारह।

डॉन कारलोस

तुम जवान हो
और पाँच-छः वर्ष रहेगी यही जवानी।
छः वर्षों तक ये इर्द-गिर्द घूमेंगे तेरे प्रेमी,
ये सब तुझको सहलायेंगे, दुलरायेंगे
देंगे वे उपहार बहुत से,
प्रणय-प्रदर्शन करते हुए गीत गायेंगे,
रात्रि समय चौराहों पर भी
तेरी खातिर, एक-दूसरे को मार, छाती चीरेंगे।
किन्तु वर्ष जब ये बीतेंगे
और जवानी ढल जायेगी,
आंखें तेरी धस जायेंगी,
तेरी पलकों के ऊपर जब
स्याही छाये और झुर्रियां पड जायेंगी,
तार सफेदी के बालों में जब झलकेंगे,
बुढ़िया जब वे तुम्हें कहेंगे तब—
तब क्या होगा हाल तुम्हारा?

लौरा

तब? मैं किसलिये
भला यह सोचूं? कैसी तुम
बातें करते हो? या कि तुम्हारे
मन में हर दम भाव सदा ही ऐसे आते?
जाओ, जाकर छज्जे का दरवाजा खोलो।
देखो, कैसा नीरव नभ है,
ठहरा-ठहरा मधुर पवन है,
नींबू, तेज पत्तों की उसमें महक बसी है,
गगन नीलिमा घनी-घनी है,
जिसमें स्याही घुली-मिली है,

उसमें उजला चाँद चमकता,
चौकीदारों की आवाजें गूंज रही है – "रहो जागते !"
दूर कहीं पर उत्तर में, पेरिस में इस क्षण
शायद नभ में बादल छाये,
ठण्डा-ठण्डा पानी बरसे,
तेज हवा के झोंके चलते।
किन्तु हमें क्या इससे मतलब ?
सुनो कारलोस, मैं तुमसे यह माँग कर रही –
तुम मुस्काओ, हाँ, हाँ, ऐसे !

डोन कारलोस

मधुर पिशाची !

(दरवाजे पर दस्तक)

डोन जुआन

ऐ ! लौरा !

लौरा

कौन वहाँ है ? यह किसकी आवाज भला है ?

डोन जुआन

दरवाजा तो अपना खोलो।

लौरा

क्या है वही ! ईश्वर मेरे !

(दरवाजा खोलती है, डोन जुआन भीतर आता है)

डोन जुआन

लौरा प्यारी...

लौरा

डोन जुआन!

(लौरा उसके गले में बाहें डाल देती है)

डोन कारलोस

क्या! डोन जुआन!

डोन जुआन

लौरा, मेरे दिल की रानी!

(उसे चूमता है)

कौन यहां है, मेरी लौरा?

डोन कारलोस

मैं हूं, डोन कारलोस।

डोन जुआन

खूब अचानक भेंट हुई यह!
मुझको अपनी सेवा में तुम कल पाओगे।

डोन कारलोस

नहीं! अभी, इस वक्त हाथ दो-दो हो जायं।

लौरा

डोन कारलोस, व्यर्थ न उलझो!
नहीं सड़क पर तुम दोनों हो – मेरे घर में –
कृपया चलते बनो यहां से।

डोन कारलोस

(लौरा की बात पर कान नहीं देता)

देख रहा मैं राह तुम्हारी।
देर किसलिये, खड्ग पास में।

डोन जुआन

अगर नहीं है सब्र तुम्हें
तो आओ सम्मुख।

(दोनों लड़ते हैं)

लौरा

हाय! हाय! यह फिर
जुआन कैसी हरकत है!

(बिस्तर पर जा गिरती है। डोन कारलोस नीचे गिरता है)

डोन जुआन

लौरा, उठो, खत्म है किस्सा।

लौरा

यह क्या हुआ?
मार ही डाला? बहुत खूब!
मेरे कमरे में!
मैं क्या करूं, बताओ अब शैतान कहीं के?
कहां इसे अब मैं फेंकूंगी?

डोन जुआन

हो सकता है, अब भी शायद वह ज़िन्दा हो।

लौरा

(शव का ध्यान से देखती है)

हां, ज़िन्दा है! दुष्ट कहीं के,
सीधे दिल पर वार किया है,
वार तुम्हारा कभी न चूके
किया तिकोना घाव कि जिससे रक्त न बहता
और सांस भी शेष नहीं है — अब बोलो तो?

डोन जुआन

मैं क्या करता?
उसने ही ऐसा चाहा था।

लौरा

हाय, हाय, ज़ालिम जुआन,
तुम चैन नहीं लेने देते हो।
सदा शरारत कोई तुम करते रहते हो —
और न अपराधी भी खुद को कभी मानते.
कहां, कहां से टपक पड़े हो?
बहुत दिनों में भला यहां तुम?

डोन जुआन

मैं तो अभी-अभी आया हू
सो भी चोरी-चोरी, छिपकर,
अब तक माफी नही मिली है।

लौरा

और यहा आते ही तुमने याद किया
अपनी लौरा को ?
कहना होगा, अच्छा बहुत किया यह तुमने।
लेकिन नही, नही, तुमपर विश्वास मुझे है,
शायद योंही इसी राह से गुजर रहे थे
और दिखाई दिया सामने यह घर मेरा।

डोन जुआन

बात न ऐसी, मेरी लौरा,
यदि चाहो तो लेपोरेल्लो से
तुम पूछ कभी भी लेना।
दूर नगर से मैं सराय गन्दी मे ठहरा
और यहा मेड्रिड मे आया
केवल तुमसे मिलने, लौरा।

(लौरा को चूमता है)

लौरा

मेरे प्रियतम!.
किन्तु रुको तो . सब के सम्मुख ?
कहा छिपाने इसे समाये ?

डोन जुआन

इसकी मत परवाह करो तुम—जो कहते हो
मैं चाहूँ तो छूकर इसको न आऊँगा,
चौराहे पर आ रुक [illegible] हुआ।

लौरा

लेकिन सावधान तुम रहना
कोई तुमको देख न पाए।
कितना अच्छा हुआ हम न कुछ तुम आये।
पास पर ये मित्र तुम्हारे कई उपस्थित।
कुछ ही पहले गए यहाँ से।
अगर भेंट हो जाती उनसे, तो क्या होता!

डोन जुआन

बहुत समय से प्यार इसे तुम करती, लौरा?

लौरा

किसको? लगता है, तुम बहक रहे हो।

डोन जुआन

और करो स्वीकार
कि कितनी बार दिया है मुझको धोखा
मैं जिस दिन से निर्वासित हूं?

लौरा

पहले तो तुम ही बतलाओ, लम्पट मेरे?

डोन जुआन

बतलाओ तो ... खैर, बाद मे
इसकी चर्चा हम कर लेगे।

तीसरा दृश्य

(कमाडर का बुत)

डोन जुआन

जो भी होता है, अच्छा ही
अनचाहे ही हत्या मैंने
डोन कारलोस की कर डाली
और तपस्वी बनकर अब मैं
यहा छिपा बैठा रहता हू,
हर दिन देख उसे पाता हू,
उस प्यारी, सुन्दर विधवा को।
मुझको लगता, वह भी मुझे ध्यान मे लाती।
एक-दूसरे से हम अब तक
दूर रहे हैं, किन्तु आज मैं
चाहे कुछ हो, बात करूगा उस ललना से।
पर, आरम्भ करूगा कैसे? "मैं इतना
साहस करता हू" नही, इस तरह –
"ओ सेनोरा" नही बात यह भी कुछ बनती!
जो भी मन मे आ जायेगा
वही कहूगा, बिना किसी भी तैयारी के,
उसी तरह से, तुरत-फुरत मैं
गीत प्रीत के जैसे रचता
आ ही जाना उसे चाहिये

उसके बिना मुझे लगता है
ऊब कमांडर अनुभव करता।
कैसे उसे दिखाया गया यहां पर हट्टा-कट्टा
कितने चौड़े-चौड़े कंधे! हरकुलीस ही वह तो
लेकिन वह तो नाटा-सा था, दुबला-पतला,
पंजों के बल यहां खड़ा हो जाता तो भी
नाक न अपनी वह छू पाता
एस्ककूरियल मठ के पीछे
जब हम दोनों हुए सामने,
खड्ग-नोक पर मेरी उसने तोड़ दिया दम,
जैसे कोई टिड्डा पिन से बिंध जाता है—
लेकिन था वह बड़ा साहसी
औ' गर्वीला... और कड़ा था उसका दिल भी
लो! वह आई।

(डोना आन्ना भीतर आती है)

डोना आन्ना

वह है फिर से यहां उपस्थित। पिता तपस्वी,
मैंने डाला विघ्न आपके ध्यान-ज्ञान में,
क्षमा कीजिये।

डोन जुआन

मुझे चाहिये क्षमा आपसे
मैं ही मांगू, ओ सेनोरा।
शायद मैं बाधा बनता हूं,
पर कारण दुख को अपने मुक्त रूप से
व्यक्त नहीं कर पाती होंगी।

डोना आन्ना

बात न ऐसी, पिता तपस्वी,
मेरा दुख है मेरे मन मे
और आपके सम्मुख भी तो
दूर गगन तक, मेरी नम्र प्रार्थना पहुचे।
मैं अनुरोध आप से करती
मेरे स्वर मे आप मिला दे अपना स्वर भी।

डोन जुआन

करू आपके सग प्रार्थना, डोना आन्ना!
मैं तो इसके योग्य नही हू।
पाप भरे अपने होठो से
दोहराऊ मैं उन शब्दो को आप कहे जो –
मैं तो केवल यहा, दूर से
श्रद्धा से देखा करता हू,
जिस क्षण धीरे-धीरे झुककर
काले-काले बालोवाला सिर अपना
पीले-पीले मरमर पत्थर पर जब आप टिका देती है,
मुझको उस क्षण ऐसे लगता
एक फरिश्ता चुपके-चुपके
इस समाधि पर ज्यो आया हो।
मेरे विह्वल-विकल हृदय मे
नही प्रार्थना तब आती है,
मूक-मौन मैं चकित-चकित सोचा करता हू,
वह खुशकिस्मत, जिसका ठण्डा मरमर पत्थर
इसकी स्वर्गिक सासो से गर्माया जाता
और भिगोते जिसको इसके
प्यार, प्रेम के कोमल आसू।

डोना आन्ना

ये अजीब-सी बात कैसी!

डोन जुआन

मेनोरा?

डोना आन्ना

मुझसे कहने   लगता है, यह भूल गये हैं आप कौन है

डोन जुआन

भूल गया मैं? यही, तुच्छ-सा
मैं सन्यासी? पापयुक्त स्वर मेरा ऐसे,
नहीं गूंजना यहां चाहिये?

डोना आन्ना

मुझको ऐसे लगा   नहीं मैं शायद समझी.

डोन जुआन

देख रहा हूं—आप सभी कुछ जान गयी हैं!

डोना आन्ना

जान गयी क्या?

डोन जुआन

यही, कि मैं तो नही तपस्वी –
पड़ू आपके पैरो पर, मैं क्षमा चाहता।

डोना आन्ना

ईश्वर मेरे! उठे, उठे तो कौन आप हैं?

डोन जुआन

मैं बदकिस्मत, मैं बलि आशाहीन प्रणय की।

डोना आन्ना

ईश्वर मेरे! यहा, इस समाधि के सम्मुख!
चले जाइये अभी यहा से।

डोन जुआन

सिर्फ एक पल, डोना आन्ना
सिर्फ एक क्षण!

डोना आन्ना

अगर यहा कोई आ जाये!

डोन जुआन

ताला लगा हुआ जगले मे। सिर्फ एक पल!

किन्तु उस समय में ही मैंने
अपने क्षण-भंगुर जीवन का
मूल्य, अर्थ समझा है असली
केवल उस क्षण में ही मैं
यह समझ सका हूं,
सुख के क्या मानी होते हैं।

डोना आन्ना

चले जाइये दूर यहां से –
खतरनाक हैं आप बहुत ही।

डोन जुआन

खतरनाक हूं! वह किस कारण?

डोना आन्ना

सुनते हुए आपकी वाणी, मैं डरती हूं

डोन जुआन

यदि ऐसा, खामोश रहूंगा,
किन्तु न मुझको दूर भगायें
उसको, जिसके लिये देख लेना ही
बड़ी खुशी है।
उद्धत, बड़ी-बड़ी आशायें
नहीं हृदय में मैंने पाली,
नहीं आपसे कुछ भी मांगू,
किन्तु भोगना दण्ड अगर मुझको जीने
नहीं आपको देखे बिन मैं रह सकता

डोना आन्ना

चले जाइये — नहीं जगह यह
ऐसे शब्द जहां पर कोई कहे,
दिखाये यह पागलपन।
कल आ जायें मेरे घर पर,
किन्तु कसम यह खानी होगी
मेरे प्रति सम्मान-भाव को
आप सहेजेंगे आगे भी,
मिलन आपसे होगा मेरा, किन्तु
रात को, बहुत देर से — जब से
विधवा हुई, नहीं मैं मिली किसी से

डोन जुआन

आप फरिश्ता, डोना आन्ना!
चैन आपके मन को ईश्वर उसी तरह दे
जैसे मेरे व्यथित हृदय को
चैन आपने आज दिया है।

डोना आन्ना

अब तो आप यहां से जायें।

डोन जुआन

बस मिनट भर और याचना।

डोना आन्ना

चले जाइये – नहीं जगह यह
ऐसे शब्द जहां पर कोई कहे,
दिखाये यह पागलपन।
कल आ जायें मेरे घर पर,
किन्तु कसम यह खानी होगी
मेरे प्रति सम्मान-भाव को
आप सहेजेंगे आगे भी,
मिलन आपसे होगा मेरा, किन्तु
रात को, बहुत देर से – जब से
विधवा हुई, नहीं मैं मिली किसी से

डोन गुआन

आप फरिश्ता, डोना आन्ना!
चैन आपके मन को ईश्वर उसी तरह दे
जैसे मेरे व्यथित हृदय को
चैन आपने आज दिया है।

डोना आन्ना

अब तो आप यहां से जायें।

डोन गुआन

एक मिनट बस, और [illegible]।

डोना आन्ना

ऐसे लगता, मुझको ही अब जाना होगा
और प्रार्थना मे भी मन अब नही लगेगा।
दुनियावी बातो मे मेरा मन भटकाया,
जिनको मैंने एक समय से है बिसराया।
कल आ जाये मेरे घर पर।

डोन जुआन

नही मुझे विश्वास अभी भी यह होना है,
नही अभी जुर्रत होती है मुग्ध होने की
होगा मेरा मिलन आपसे कल, यह सम्भव!
सो भी नही यहा पर
और नही छिप-छिपकर!

डोना आन्ना

हा, कल होगा।
नाम आपका क्या है, कहिये?

डोन जुआन

डियेगो है घरवाले कह मुझे पुकारें।

डोना आन्ना

नमस्कार है, डॉन दिएगो।

(चली जाती है)

डोन जुआन

लेपोरेल्लो!

(लेपोरेल्लो भीतर आता है)

कहिये, क्या आदेश आपका?

डोन जुआन

मेरे प्यारे लेपोरेल्लो! बेहद खुश मैं!
"बहुत देर से, रात ढले कल "
मेरे प्यारे लेपोरेल्लो, कल के लिये करो तैयारी
मैं बच्चे की तरह बहुत खुश!

लेपोरेल्लो

डोना आन्ना से क्या बात
आपने की है? शायद उसने शब्द
कहे दो-चार स्नेह के
या असीस आपने उसको कुछ दे दी है।

डोन जुआन

ऐसा कुछ भी नही, नही है, लेपोरेल्लो!
प्रेम-मिलन कल होगा उससे
प्रेम-मिलन के लिये बुलाया!

लेपोरेल्लो

क्या कहते हैं!
हाय, एक जैसी होती है सब विधवायें।

डोन जुआन

जाओ उसके निकट और यह उससे कह दो –
कल वह मेरे पास पधारे –
मेरे पास नही, डोना आन्ना के
घर पर आकर वह दर्शन दे।

लेपोरेल्लो

बुत से कह वहा आने को! भला किसलिये ?

डोन जुआन

निश्चय ही इसलिये नही
मैं उससे बाते करना चाहू,
उससे कहो कि रात ढले वह
कल डोना आन्ना के दरवाजे पर
पहरेदारी करने आये।

लेपोरेल्लो

क्या मजाक आपको सूझा, सो भी किससे ?

डोन जुआन

जाओ, जाकर उससे कह दो!

लेपोरेल्लो

लेकिन

डोन जुआन

जाओ भी तो।

लेपोरेल्लो

बात सुनो यह बहुत ध्यान से
भव्य मूर्ति तुम,
मेरे स्वामी, डोन जुआन अनुरोध कर रहे,
कृपया आयें   हे भगवान, नहीं कह सकता
कहते मेरा दिल डरता है।

डोन जुआन

कायर! सूना ख़बर तुम्हारी!

लेपोरेल्लो

कह देता हूं।
मेरे स्वामी डोन जुआन अनुरोध कर रहे,
आप पधारें कल रात की
बनकर चौकीदार खड़े हों
पत्नी के दरवाज़े पर आ

(मूर्ति सहमति प्रकट करते हुए सिर झुकाती है

हाय, हाय!

डोन जुआन

क्या हिलना है ?

लेपोरेल्लो

हाय, हाय! हाय, हाय
जान निकल जायेगी मेरी!

डोन जुआन

तुम्हें हुआ क्या?

लेपोरेल्लो

(सिर झुकाते हुए)

यह बुत हाय, हाय!

डोन जुआन

शीश झुकाते हो तुम इसको?

लेपोरेल्लो

नहीं, मैं नहीं
बुत ने शीश झुकाया अपना!

डोन जुआन

क्या बकते हो!

लेपोरेल्लो

स्वयं यहां पर आकर देखें।

डोन जुआन

मेरे लिये मौन ही सुखकर
रूपवती डोना आन्ना के
संग और एकान्त जगह यह,
गहन भाव से चिन्तन करता
यहा, नही उस जगह,
जहा पर है समाधि उस भाग्यवान की
और न देखू यहा आपको घुटनों के बल
शीश झुकाये पति के पत्थर-बुत के सम्मुख।

डोना आन्ना

*डोन डियेगो, आप ईर्ष्या अनुभव करते। दफ़न
कब्र मे भी पति मेरा,
व्यथित आपको वह करता है?*

डोन जुआन

मुझे ईर्ष्या करने का अधिकार नही है,
उसे आपने स्वय चुना था।

डोना आन्ना

*नही, मुझे आदेश दिया था
मेरी मा ने उसकी पत्नी बन जाने का
हम गरीब थे और डोन अलवार धनी था!*

किसी भी महिला से वह
है मुझको विश्वास, प्यार वह कभी न करता
नहीं किसी से मिलने को वह राजी होता,
पति के नाते मेरे प्रति नित
निष्ठावान सदा वह रहता।

डोन जुआन

बार-बार पति की चर्चा कर
नहीं इस तरह मेरे दिल को
आप दुखायें, डोना आन्ना।
बहुत दे दिया दण्ड आपने अब तक मुझको
बेशक दण्ड मिले मैं शायद इसके लायक।

डोना आन्ना

यह किस कारण?
मेरी तरह किसी के भी सग
नहीं आप पावन बन्धन में बधे हुए है – नहीं
, कर, मेरे सम्मुख
के सम्मुख भी तो
भी अपराध किया है।

जुआन

? ईश्वर मेरे!

अपराधी
पाये।

डोन जुआन

साहस मुझे नही होता है बतलाने का।
घृणा आपको मुझसे तब तो हो जायेगी।

डोना आन्ना

नहीं, नही। मैं क्षमा आपको पहले से ही करदेती
किन्तु जानना चाह रही हूं

डोन जुआन

नही, नही, ऐसा मत चाहें
यह रहस्य है बहुत भयानक, बेहद घातक।

डोना आन्ना

बहुत भयानक! आप यातना मुझको देते
जिज्ञासा से विह्वल करते – क्या किस्सा है?
कैसे भला लगा सकते थे ठेस
आप ही मेरे दिल को?
नही आपसे मैं परिचित थी – नही
शत्रु थे पहले मेरे, और न अब है।
पति का हत्यारा ही केवल एक शत्रु है।

डोन जुआन

(अपने आप से)

गाठ अभी खुलनेवाली है!
कृपया मुझको यह बतलायें – क्या
बदकिस्मत डोन जुआन को आप जानती?

डोना आन्ना

डोन डियेगो!
यह क्या आप भला कहते हैं?

डोन जुआन

नहीं डियेगो, मैं जुआन हूं।

डोना आन्ना

मेरे ईश्वर! नहीं, नहीं ऐसा हो सकता,
मैं विश्वास नहीं कर सकती।

डोन जुआन

डोन जुआन मैं।

डोना आन्ना

झूठ बात यह।

डोन जुआन

तेरे पति का मैं हत्यारा
किन्तु न इसका दुख है मुझको
और न पश्चाताप तनिक भी।

डोना आन्ना

क्या सुनती हूं? नहीं नहीं यह
कभी न सम्भव।

मेरी प्यारी!
हर कीमत पर, मैं हू तत्पर
पश्चाताप करूगा उसका
ठेस तुम्हे है जो पहुचाई,
तेरे कदमो पर, तेरा आदेश सुनू,
यह इन्तजार है–हुक्म मिले तो मैं मर जाऊ,
हुक्म मिले मैं जीता जाऊ
सिर्फ तुम्हारी ही खातिर, बस

डोना आन्ना

तो यह डोन जुआन ऐसा है

डोन जुआन

जिसे आपके सम्मुख चित्रित किया गया है
दुष्ट, दरिन्दा–ठीक बात यह, डोना आन्ना–
मेरी ऐसी ख्याति सर्वथा गलत नही है,
थकी आत्मा पर है मेरी
शायद बेहद बोझ भयकर।
बहुत समय तक मैं व्यभिचारी बना रहा हू,
किन्तु आपको देखा जब से
नया जन्म मैंने पाया यह मुझको लगता।
प्यार आपको कर, मैं नेकी को भी
प्यार लगा हू करने, विनय भाव से
उसके सम्मुख श्रद्धा से नत-मस्तक होता।

ज्ञात मुझे यह – बहुत वाक्-पटु डोन जुआन है
और सुना यह – बहुत धूर्त वह फुसलाने में।
कहते है यह लोग – बहुत ही लम्पट है वह
नही आपका दीन-धर्म या खुदा, ईश्वर,
एक तरह से दानव ही है। नष्ट
आपने कर डाली है, कितनी ही लाचार नारि

डोन जुआन

नही किसी को भी उनमें से
मैंने मन से प्यार किया था।

डोना आन्ना

और भरोसा मैं यह कर लू,
अब ही पहली बार किया है
डोन जुआन ने प्यार किसी को
और नही वह खोज रहा है
मुझमें नया शिकार, शिकारी!

डोन जुआन

धोखा ही यदि मुझे आपको देना होता,
क्यों करता स्वीकार नाम यह
जिसको आप न सुन सकती है?
कहा धूर्तता, इसमें छल है?

कौन आपके छल-बल जाने ? किन्तु यहा पर
आप भला आये ही क्यो है ? यहा
आपको पहचाना भी जा सकता है,
तब तो मृत्यु आपकी बिल्कुल निश्चित समझे।

डोन जुआन

मृत्यु अर्थ ही क्या रखती है ?
मिले प्यार का एक मधुर क्षण
तो मैं हसते-हसते अपने प्राण लुटा दू।

डोना आन्ना

किन्तु आपने खतरा मोल लिया है भारी,
बाहर आप यहा से कैसे अब जायेगे ?

डोन जुआन

(उसके हाथ चूमता है)

इस बेचारे डोन जुआन के जीवन के
बारे मे चिन्तित आप हो रही ! इसका
मतलब, नही फरिश्ते जैसे दिल मे
घृणा भाव मेरे प्रति कोई ?

डोना आन्ना

ओ मैं नफरत काश, आपसे कर सकती !
खैर, आपके जाने का अब समय हो गया।

डोन जुआन

मिलन हमारा फिर कब होगा?

डोना आन्ना

नहीं जानती। हो जायेगा कभी, किसी दिन।

डोन जुआन

और अगर कल?

डोना आन्ना

किन्तु कहां पर?

डोन जुआन

इसी जगह पर।

डोना आन्ना

कितना मेरा दिल दुर्बल है, डोन जुआन!

डोन जुआन

क्षमा कर दिया – इसके लिये
मुझे दो चुम्बन, मेरी प्यारी

डोना आन्ना

बस, काफी है, अब तुम जाओ।

डोन जुआन

सिर्फ एक ही, शीतल और शान्तिमय चुम्बन

डोना आन्ना

तुम कैसे धुन के पक्के हो! मैं इन्कार
नहीं कर सकती, ले लो चुम्बन।
यह क्या खटखट दरवाजे पर?
डोन जुआन, कहीं छिप जाओ।

डोन जुआन

मेरी प्यारी, विदा,
मिलेंगे हम-तुम फिर से।

(जाता है और भागता हुआ फिर लौटता है)

ओह!

डोना आन्ना

तुम्हें हुआ क्या? क्या किस्सा है? ओह

(कमाडर का बुत भीतर आता है।
डोना आन्ना बेहोश होकर गिर जाती है)

बुत

तुमने मुझे बुलाया था, लो, मैं हूं हाज़िर।

डोन जुआन

ईश्वर मेरे! डोना आन्ना!

बुत

अब तुम उसकी चिन्ता छोड़ो,
सब समाप्त है। कांप रहे हो, डोन जुआन तुम।

डोन जुआन

कांप रहा मैं? नहीं, नहीं। मैंने
तुम्हें बुलाया था, मैं बेहद खुश हूं तुम्हें देखकर।

बुत

लाओ, अपना हाथ मुझे दो।

डोन जुआन

यह लो ... ओ, है कितना
सख्त, कड़ा, इसका पाषाणी पंजा!
अरे, छोड़ दो, छोड़ो मेरा हाथ, छोड़ दो...
मेरा दम निकल जाता है, हाय,
मरा मैं – डोना आन्ना!

(दोनों गायब हो जाते हैं)

१८३०

जलपरी

दनेपर नदी का किनारा, पनचक्की

(चक्कीवाला और उसकी बेटी)

चक्कीवाला

ओह तुम तो बुद्धू होती हो
सारी, सभी जवान युवतियाँ।
अगर साथ दे जाये किस्मत
और तुम्हें मिल जाये कोई ऊँचे पद का
व्यक्ति धनी-मानी सम्मानित तुम्हें चाहिए
उसे पाश में अपने कस लो।
सो भी कैसे? समझ-बूझ से
सच्चा अच्छा तुम अपना व्यवहार दिखाकर
कभी कड़ाई कभी प्यार के तीर चलाकर
कभी-कभी तुम कर सकती हो
हल्का-सा संकेत सगाई-शादी का भी।
लेकिन बहुत जरूरी है यह –
लड़की को अपनी इज्जत को
सदा सुरक्षित उसको रखना
यह अमूल्य निधि
जैसे मुँह से निकला शब्द न वापिस आता
वैसे ही लड़की की इज्जत
कभी नहीं वापिस आ सकती।
और अगर यह समझो उससे कभी न शादी हो

तो कम से कम
अपने या रिश्तेदारों की खातिर ही कुछ
लाभ उठाना तुम्हे चाहिये।
उचित ध्यान मे यह भी रखना –
"नही करेगा प्यार सदा वह
और न मेरी इच्छाओ को तुष्ट
करेगा!" किन्तु न ऐसा! कहा
भला तुम सोचोगी ये बाते
निजी भलाई की सब!
है महत्त्व भी इनका कोई?
तुम तो फौरन अपनी अक्ल गवा देती हो,
बडी खुशी से, बदले मे कुछ लिये बिना ही
पूरी करती हो तुम उसकी सारी सनके,
तत्पर रहती हो तुम दिन भर
बाहे अपनी डाले रहो गले मे प्रिय के,
किन्तु तुम्हारा प्रीतम-प्यारा
सहसा लुप्त कही हो जाता
और चिह्न भी नज़र न आता।
खाली हाथ सदा रह जाती,
ओह, तुम सब की सब बुद्धू हो!
नही सैकडो बार कहा क्या मैंने तुमसे –
देखो बिटिया, तुम ऐसी बुद्धू मत बनना,
नही गवा देना तुम इतना
बढिया अवसर,
नही प्रिय को तुम खो देना,
व्यर्थ नष्ट मन खुद को करना। –
मगर नतीजा क्या निकला है?..
अब तुम बैठी नीर बहाती रहो
निरन्तर जीवन भर यो
उसके लिये, न जो लौटेगा।

बेटी

तुम क्यो ऐसा सोच रहे हो—
क्या उसने मुझको ठुकराया?

चक्कीवाला

क्यों मैं ऐसा सोच रहा हू? वह
इसलिये कि पहले कितनी बार यहा पर
हफ्ते मे वह आ जाता था?
बतलाओ तो? हर दिन, और कभी तो दिन मे
दो-दो बार चला आता था।
लेकिन इसके बाद लगा वह
कम, कम आने—अब तो नौ दिन
बीत चुके हैं उसको देखे। बोलो,
क्या तुम कह सकती हो?

बेटी

व्यस्त बहुत वह। क्या है उसको कम चिन्तायें?
प्रिंस न चक्कीवाला, वह तो जिसके लिये करेगा
पानी उसका काम-काज सब, सारा धधा।
वह अक्सर यह कहता रहता
उसका काम सभी कामो से
ज्यादा मुश्किल।

चक्कीवाला

सुना करो तुम उसकी बाते।
राजकुमार वहा पर काम भला करते हैं?
है मालूम, काम क्या उनको? यही,

बेटी

ओह, आखिर तो याद आ गयी तुमको मेरी,
नहीं शर्म है आती तुमको,
इतने दिन तक मुझे यातना दी है तुमने
क्रूर प्रतीक्षा ऐसे आशाहीन कराकर?
क्या-क्या ख्याल न दिल मे आये?
कैसी-कैसी शकाओ से हृदय न कापा?
कभी ख्याल यह आया मन मे,
शायद गिरा दिया घोडे ने
किसी खड्ड मे या दलदल मे,
शायद किसी घने जगल मे
हत्या भालू ने कर डाली,
शायद तुम बीमार, प्यार से मेरे ऊबे?
शुक्र खुदा का! तुम हो बिल्कुल सही-सलामत,
और प्यार भी
तुम पहले की तरह मुझे अब
भी करते हो, सच कहती मैं?

प्रिंस

पहले ही की तरह, फरिश्ते, मेरे प्यारे।
पहले से भी ज्यादा प्यार तुम्हे करता हूं।

युवती

किन्तु दुखी-से तुम दिखते हो,
क्या [illegible] है?

प्रिंस

मैं हूं दुखी ?
तुमको यो ही ऐसे लगता – मैं
जब भी तुम्हे देख लेता हूं
रोम-रोम पुलकित हो उठता।

युवती

बात न ऐसी।
जब तुम होते हो प्रफुल्ल चित्त,
मेरी ओर भागते आते
और दूर से चिल्लाते हो – मेरी प्यारी,
कहा और तुम क्या करती हो ? इसके
बाद चूमते मुझको और पूछते –
मेरे आने पर तुम खुश हो ?
इतनी जल्दी मैं आऊंगा,
क्या तुमने यह आशा की थी ?
किन्तु आज तो – गुमसुम मेरी बात सुन रहे,
नही मुझे बाहो मे भरते
और न मेरे नयन चूमते,
निश्चय ही तुम आज किसी कारण हो चिन्तित।
पर, किस कारण ? मुझसे तो नाराज नही हो ?

प्रिंस

नही चाहता ढोंग करू मैं।
बात तुम्हारी सही – हृदय पर
आज बोझ मेरे भारी है,
जिसे न अपने प्यार-प्रेम से कर सकती हो तुम ह
जिसे नही हल्का कर सकतीं, बाट न सकती।

युवती

अर्थ तुम्हारे इन शब्दो का
नही अभी मैं समझ सकी हूँ,
किन्तु अभी से हृदय धडकता।
भाग्य हमारे लिये मुसीबत, किसी
अजाने दुख की है तैयारी करता,
शायद आई निकट जुदाई।

प्रिंस

भाप गयी तुम
हम हो जुदा – यही भाग्य का अब नि

युवती

कौन अलग कर सकता हमको ?
क्या न तुम्हारे पीछे-पीछे
मैं जा सकती सभी जगह पर ?
मैं लडके का भेस बनाकर
रस्तो-राहो, कूच, युद्ध मे,
सेवा मैं हर जगह तुम्हारी सदा करूगी स
तुम्हे देखने का सुख पाऊ
तो न डरूगी युद्ध, जग से।
नही, मुझे विश्वास न आये,
मेरे भावो को तुम या तो परख रहे हो
या फिर केवल तुम मजाक मुझसे करते

प्रिंस

मैं मजाक की आज बात भी सोच न सकता,
तुमको परखू – नहीं जरूरत इसकी मुझको,
नहीं सफर पर जानेवाला,
नहीं युद्ध की तैयारी है –
घर पर ही मुझको रहना है,
किन्तु सदा के लिये जुदा तुमसे होना है।

युवती

हा, हा, अब मैं समझ गयी सब .
तुम शादी करनेवाले हो।

(प्रिंस चुप रहता है)

तुम शादी करनेवाले हो।

प्रिंस

क्या चारा है?
खुद ही सोचो। प्रिंस नहीं आज़ाद,
न अपनी इच्छा के अनुसार चुन सके
जीवन-साथी, जैसे तुम युवतियां चुन सको,
उन्हें दूसरों के हित में ही
और दूसरों की इच्छा से
अपनी शादी करनी पड़ती।
समय और भगवान तुम्हारे
मन के दुख को दूर करेंगे।
नहीं भुला देना तुम मुझको।
ले लो यह सिंगार की पट्टी,

याद दिलायेगी जो मेरी।
लाओ, खुद तुमको पहना दूं।
और मोतियों की
माला भी मैं लाया हूं – वह भी
ले लो। यह भी ले लो – इसके
लिये पिता को तेरे वचन दिया
था। इसे सौंप देना तुम उसको।

(सोने से भरी थैली उसके हाथ में देता है)

विदा, नमस्ते।

युवती

ज़रा रुको तो – मुझको कुछ तुमसे
कहना है। पर क्या कहना,
याद न आता।

प्रिंस

याद करो तो।

युवती

तत्पर सदा तुम्हारे हित कुछ
भी करने को   नहीं, नहीं यह
ज़रा रुको तुम – यह तो अच्छा
नहीं, जिन्दगी भर के लिये मुझे
तुम त्यागो   किन्तु न यह भी
हा, हा! याद आ गया मुझको –
आज तुम्हारा बच्चा पहली बार
पेट में हिला-डुला था।

गुप्त वक्ष मे, और
सजा दूगा मैं तुमको लाल-लाल
मखमल, गोटे से और जरी से।
उनको है आजादी हमें *सिखायें यह सब* —
अर्द्ध-रात्रि को उनकी सीटी सुन हम जागे
और भोर होने तक उनके संग बैठ चक्की पर
प्रेमालाप करे पगली-सी
उनको है आजादी पीडा-दर्द हमें दे,
राजकुमारो के वे अपने दिल बहलाये,
और कहे फिर, जाओ प्यारी,
जहा तुम्हारा अब मन चाहे
प्यार करो, जिसको भी चाहो।

चक्कीवाला

मैं अब समझा, यह किस्सा है।

बेटी

लेकिन कौन मगेतर उसकी?
जिसके लिये मुझे अब उसने
त्याग दिया है? मैं सब यह मालूम
करूगी और कहूगी उस दुष्टा से
रहो प्रिंस से दूर, परे ही
एक म्यान मे दो तलवारे नही *समाती*।

चक्कीवाला

तुम उल्लू हो!
प्रिंस अगर शादी ही करना चाह रहा है,
कौन रोक सकता है उसको? मजा मिल गया।
नही कहा था क्या तुमसे यह मैंने पहले

अब वे रिश्ते टूट चुके है—
मेरे ताज-मुकुट अब जाओ, तुम भी जाओ! सदा-सदा को!

(सिगार-पट्टी को द्नेपर नदी मे फेक देती है)

अब तो सब कुछ खत्म हो गया...

(नदी मे कूद जाती है)

बूढ़ा

(गिरते हुए)

हाय, कही का नही रहा मैं,
नही रहा मैं, हाय कही का।

राज महल

(शादी हो रही है। दूल्हा-दुलहन दावत की
मेज पर बैठे हैं। मेहमान। युवतियो का सहगान)

विषकन्या

बडी धूम से शादी अभी मनायी हमने।
नवदम्पति का करती हूं मन से अभिनन्दन।
बहुत प्यार से, हेल-मेल से, जीती रहे जुगों यह जोडी,
और दावतें हम भी अक्सर यहा उडायें।
ऐ सुन्दरियो, गाना बन्द किया क्यो तुमने?
क्यो है तुमने चुप्पी साधी?
या फिर गीत तुम्हारे सारे खत्म हो गये?
या गा-गाकर कण्ठ तुम्हारे सूख गये है?

छोटी-छोटी घूमें दो मीने चचल।
एक दूसरी से यह पूछे, बहन बता
जो कुछ हुआ नदी में, उसका तुम्हे पता?
एक सुन्दरी कल नदिया मे डूब मरी
मरते-मरते वह प्रेमी को कोस रही?

बिचवइया

री सुन्दरियो! यह भी क्या गाना गाया?
यह शादी का गीत नही है, नही, नही।
किसने ऐसा गीत चुना है? बतलाओ।

लड़कियां

मैंने नही – नही, मैंने भी –
नही किसी ने हममे से तो...

बिचवइया

किसने गाया है इसको?

(लड़कियो मे खुसर-फुसर और घबराहट)

प्रिंस

ज्ञात मुझे यह।

(मेज से उठकर धीरे से सईस से बात करता है)

वह चोरी से यहा आ गयी।
जल्दी उसे खदेड़ो बाहर।
और करो मालूम कि किसने
की हिम्मत, दी अनुमति उसको भीतर आये।

(सईस लड़कियों के पास जाता है)

पुश्किन बचपन में। लघु चित्र।
१९वीं शताब्दी का आरम्भ।

पुश्किन के जन्म-वर्ष में मास्को ऐसा था। क्रेमलिन के चूदोव मठ की भाँकी। उत्कीर्णन चित्र। १७९९।

ोना बाकूनिना (१७६५-)। कुलीन विद्यालय में के मित्र की बहन। कवि म प्रणय। विद्यालय के समय म से अधिक कवितायें इसी र्पित है। १८१०-२० का चित्र।

पीटर्सबर्ग के निकट त्सारस्कोये सेलो म येकातेरीनीन्स्की महल। इसके बाये बाजू मे वह कुलीन विद्यालय स्थित था जहा पुश्किन पढते थे। लियोग्राफ। १८२२।

गाव्रिईल देर्जाविन (१७४३–१८१६)। १८वीं शताब्दी के प्रसिद्ध रूसी कवि। १८१५ में कुलीन विद्यालय की अन्तिम परीक्षा में उन्होंने युवा पुश्किन को आशीर्वाद दिया। बोरोविकोव्स्की द्वारा बनाया गया छविचित्र। १८११।

१८१५ में कुर्सीन विद्यालय की अन्तिम परीक्षा में कविता-पाठ करते हुए पुश्किन। रेपिन द्वारा बनाया गया चित्र। १९११।

कोन्स्तान्तीन बात्युश्कोव (१७८७-१८५५)। कवि, जिन्होंने युवा पूश्किन व त्युत्चेव को प्रभावित किया। उत्कीर्ण चित्र। १८२१।

पीटर्सबर्ग। एडमिराल्टी के दृश्य सहित नेव्स्की प्रोस्पेक्ट। लिथोग्राफ। १८२० ३०।

क्रीमिया। गुर्जुफ़। नीचे, दायीं ओर

'अश्रु फव्वारा"
जिसका पुश्किन
बाख्चीसराय का
निर्झ

बेटे को गोद में लिये हुए मारिया वोल्कोन्स्काया (१८०५-१८६३)। जनरल रायेव्स्की की बेटी और दिसम्बरवादियों के विद्रोह में भाग लेनेवाले प्रिंस सर्गेई वोल्कोन्स्की की पत्नी। मारिया वोल्कोन्स्काया ने १८२६ में अपने अभिजातीय अधिकारों को त्याग दिया और पति के पीछे-पीछे साइबेरिया चली गयी। पूश्किन सदा मारिया को प्यार करते थे और इस नारी के साहसिक पराक्रम के बड़े प्रशंसक थे। चित्रकार प० सोकोलोव द्वारा जलरंगों द्वारा १८२६ में बनाया गया चित्र।

वेरा व्याज़ेम्स्काया (१७६०-१८८६)। प्रिंस व्याज़ेम्स्की की पत्नी। कवि की बड़ी मित्र। लघु-चित्र। १८०६।

ओदेस्सा। पुश्किन यहां १८२३-१८२४ में रहे। चित्रकार आइवाज़ोव्स्की द्वारा बनाया गया चित्र। १८४०-५०।

मिखाइलोव्स्कोये गाव यही कवि की मा की जागीर थी। पुश्किन दो साल से अधिक समय तक यहा निर्वासित रहे। लिथोग्राफ। १८३७।

ुश्किन की धाया अरीना रोदिओनोव्ना (१७५८-१८२८) हन्निबाल परिवार की भू-दास किसान-नारी, जिसे १७९९ में भू-दासता से मुक्ति मिली थी। साधारण लोगों में [illegible] से आयी इस गुणवती नारी को अनेक गीत, दन्तकथायें और किस्से-कहानियां याद थे, जिनका कवि ने अपने कृतित्व में उपयोग किया। पुश्किन ने उसे 'मेरे बुरे दिनों की साथी', 'मधुर संगिनी', 'बुढ़िया प्यारी', 'जीर्ण जरा' कहा है। उद्भृत चित्र। १८२६-१८[illegible]

पुश्किन की हस्तलिपि का कागज, जिसपर दिसम्बरवादियों के रेखाचित्रों के साथ ये शब्द लिखे हुए हैं – "मैं भी ऐसे ही हो सकता था" । १८२६।
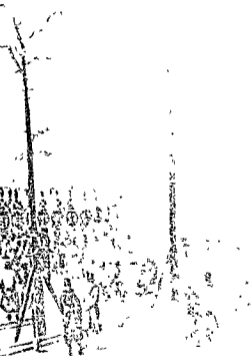
ज़िनाईदा वोल्कोन्स्काया (१७६२-१८६४)। कवयित्री स्वरकार और गायिका। तीसरे दशक में पुश्किन अक्सर मास्को में इसके प्रसिद्ध सैलून में जाया करते थे। उत्कीर्णन चित्र। १८१६।

मास्को। त्वेरस्काई बुलवार। लिथोग्राफ। १८३०-४०।

मास्को। बोल्शाया निकीत्स्काया सड़क। लिथोग्राफ। १८३०-४०।

येव्गेनी बारातीन्स्की (१८००–१८४४)। करुण रस के कवि जिनका पुश्किन ने ऊंचा मूल्यांकन किया। लिथोग्राफ। १८२८।

पुश्किन के रेखाचित्रों सहित जिप्सी खण्ड-काव्य की पाण्डुलिपि। १८२३।

पीटर्सबर्ग में १८२४ की बाढ़, जिसका पुश्किन ने अपने 'तांबे के घुड़सवार' में वर्णन किया है। उत्कीर्णित चित्र। १८२४।

[illegible]

पुश्किन के रेखाचित्रों सहित उनकी 'पाषाणी अतिथि' काव्य-नाटिका की पाण्डुलिपि। १८३०।

पुश्किन के रेखाचित्रों सहित 'सोने का मुर्गा' काव्य-कथा का मुखावरण। १८३४।

प्रिंस

(बैठ जाता है, अपने आप से कहता है)

ऐसा हल्ला-गुल्ला, वह तो शायद यहां करेगी,
डूब शर्म से मैं जाऊंगा,
जगह न छिपने की पाऊंगा।

सईस

मैं तो उसको ढूंढ न पाया।

प्रिंस

ढूंढो उसको। मुझको यह मालूम,
यहां वह। उसने ही यह गाना गाया।

अतिथि

बढ़िया-मदिरा!
सिर से पैरों तक जो देती है मस्ती –
लेकिन यह अफ़सोस कि कड़वी –
बुरा नहीं, यदि यह कुछ मीठी हो जाये।

(नवदम्पति एक-दूसरे को चूमते हैं।
धीमी-सी चीख सुनाई देती है)

प्रिंस

ठीक, यही है! उसने भरी थी
चीख उसी की!

(सईस से)

क्या पता कुछ?

Сказка
о
Золотомъ Петушкѣ

दूल्हे का मित्र

ये चंचल, शैतान लड़कियां—सदा
शरारत करने को तत्पर रहती हैं!
यह भी कोई बात प्रिंस की शादी में ये
जान-बूझकर हरकत कोई बुरी करें यों!
खैर, चलूं मैं, घोड़े पर होना सवार हूं।
तो अब विदा, सहेली प्यारी।

(बाहर जाता है)

बिचवइया

ओह, दिल बैठा जाता मेरा!
नहीं शुभ घड़ी में सम्पन्न हुई यह शादी।

प्रिंसेस का कमरा

(प्रिंसेस और उसकी आया)

प्रिंसेस

मुझको लगता, बिगुलों की आवाज सुनाई देती मुझको,
नहीं, अभी तक नहीं लौटकर वह आया है।
आया प्यारी, जब तक मेरी शादी
उससे नहीं हुई थी
वह हर समय निकट तब मेरे ही रहता था
मुझे देखते हुए नहीं थी दृष्टि अघाती,
शादी होते ही मानो सब बदल गया है।
मुझे जगा देता है अब वह सुबह-सुबह ही
और हुक्म देता सईस को जीन कसा जाये घोड़े पर;
रात्रि समय तक ईश्वर जाने
कहां-कहां फिरता रहता है,

आया

होगा पाप सोचना ऐसा –
किससे वह तुमको बदलेगा ?
सभी तरह के गुण हैं तुममें –
अनुपम रूप, मिलनसारी, औ' सूझ-बूझ भी।
खुद ही सोचो –
तुम्हें छोड़कर कहा मिलेगी
उसको ऐसी खान गुणो की ?

प्रिंसेस

जाने कब भगवान सुनेगा बिनती मेरी
और मुझे वह देगा बच्चे !
तब मैं फिर से अपने पति को
कस लूगी नूतन बन्धन में.
अरे ! अहाते में दिखते हैं जमा शिकारी।
पति मेरा घर पर लौटा है।
नजर न लेकिन वह क्यो आता ?

(एक शिकारी भीतर आता है)

प्रिंस कहा है ?

शिकारी

हमें दिया यह हुक्म कि हम सब
घर को लौटें।

प्रिंसेस

शिकारी

स्वय अकेले रुके द्नेपर तट पर, वन मे।

प्रिंसेस

और आप लोगो ने उनको
वहा अकेले छोड़ दिया है,
अच्छे स्वामी-भक्त आप हैं!
इसी समय, फौरन सरपट
घोडा दौडाते वापस जाये!
उन्हे बताये, मैंने भेजा वहा आपको।

(शिकारी बाहर जाता है)

ईश्वर मेरे! रात्रि समय वन मे होते हैं
हिंसक पशु, औ' चोर-लुटेरे,
भूत-प्रेत भी – किसी घडी भी
वहा मुसीबत आ सकती है।
शीघ्र जलाओ दीप देव-प्रतिमा के सम्मुख।

आया

अभी जला देती हू, प्यारी, अभी, अभी

द्नेपर नदी। रात का समय

जलपरियां

हम प्रफुल्ल मन बाहर आती
रजनी मे तल मे,
शशि-किरणें हमको गर्माती

स।
कभी रात्रि को अच्छा लगत
नद-तल से बाहर आना,
अच्छा लगता शान्त सतह
चीर-चीर बढते जाना,
एक-दूसरी को जब टेरे
और हवा को गुजाना,
हरे-हरे नम बाल सुखाना
उन्हे झाडना, फटकाना।

एक जलपरी

सावधान, सब। वहा झाडियो
कोई छिपा हुआ है मुझको ऐसा

दूसरी जलपरी

चाद और जल-बीच धरा पर
कोई सचमुच घूम रहा है।

(छिप जाती है)

ग्रिस

ये उदास-से स्थान बहुत ही परिचि
आस-पास का सब कुछ मैं पहचान
यह मेरे सम्मुख पनचक्की ! अब
जर्जर है, मगर मगर है,
मधुर और इसके पहियों का सुर भी
नहीं बदला चक्की का —

और शोक मे बेटी के भी बहुत दिनो तक
आमू नही बहा पाया वह।
एक यहां पर पगडंडी थी – वह भी गायब,
शायद एक जमाने से इस जगह नही कोई आया
था छोटा-सा यहा बगीचा
जिसके चारो ओर बाड थी –
घने भाड-भखाड उगे क्या इसी जगह पर ?
आह, बबूल का पेड यही वह, जिसमे स्मृतिया जु
यही मुझे बाहो मे भरकर
शिथिल-शिथिल वह मूक हुई थी
क्या ऐसा सब हुआ कभी था ?

(वृक्ष की ओर जाता है। पत्ते झडकर गिरते हैं)

पत्ते सहसा पीले होकर मुडे-मुडाये
सरसर करते मेरे ऊपर गिरे राख की भाति सभी
पातहीन, काला-सा अब यह वृक्ष खडा है
यह मानो अभिशप्त अकेला मेरे सम्मुख।

(चिथडे पहने अध-नगा बूढा आता है)

बूढा

नमस्ते,
नमस्ते, दामाद।

प्रिंस

कौन हो तुम ?

बूढा

प्रिंस

यह तो बात बहुत ही दुख की!
कौन तुम्हारी चिन्ता करता?

बूढ़ा

देख-भाल मेरी की जाये, बुरा नहीं यह।
मैं बूढ़ा हो गया, शरारत भी करता हूं।
धन्यवाद है, मेरी
चिन्ता करती है जलपरी बालिका!

प्रिंस

कौन?

बूढ़ा

मेरी नातिन।

प्रिंस

सम्भव नहीं समझ पाना तो इसकी बातें।
बूढ़े, या तो इस जंगल में,
तुम भूखे ही मर जाओगे या
फिर कोई दुष्ट दरिन्दा
तुम्हें चीरकर खा जायेगा।
नहीं चाहते मेरे साथ चलो,
औ' मेरे साथ रहो तुम?

बदकिस्मत बूढ़ा बेचारा! उसे
देखकर पश्चाताप-व्यथा से
मेरा ही उठता संतप्त हृदय है!

शिकारी

आप यहां हैं। खोज आपको कितनी
मुश्किल से हम पाये।

प्रिंस

आप यहां पर क्यों आये हैं?

शिकारी

प्रिंसेस ने भेजा है हमको,
वे चिन्तित हो रही आपके लिये बहुत ही।

प्रिंस

उसकी ऐसी चिन्ता तो
असह्य हो रही। क्या वह
मुझे समझती बालक?
एक कदम भी जो आया के
बिना नहीं चल सकता है?

(जाता है। जलपरियां पानी के ऊपर
दिखाई देती हैं)

जलपरियां

क्या विचार है, बोलो बहनो! घेर न लें
क्या अब हम उनको
जल्दी-जल्दी आगे जाकर?
और डराये घोड़े उनके, छप-छप
करके, अट्टहास से
और सीटियां तेज बजाकर?

देर हो चुकी अब तो बहनो।
हुआ अंधेरा वन-कुंजों में
जल-तल ठण्डा होता जाता,
निकट गांव में मुर्गे अब देते हैं बांगें
और चांद भी सोता जाता।

द्नेपर नदी का तल

(जलपरियों का महल।
जलपरियाँ अपनी महारानी के
निकट बैठी सूत कात रही हैं)

बड़ी जलपरी

बच्चो छोड़ो सूत कातना। सूरज डूबा।
एक स्तम्भ सी जल के ऊपर
अब शशि किरणें चमक रही हैं।
बहुत हो चुका कामकाज भी,
ऊपर जाओ, नभ-छाया में
खेलो-कूदो मौज मनाओ।
किन्तु किसी को कष्ट न देना आज तनिक भी,
राहगीर से छेड़-छाड़ तुम करो,
न ऐसी हिम्मत करना,
नहीं जाल अब मछुओं के तुम
पनभाड़ी या घास फसाना
नहीं किसी बालक को तुम
मीनों के किस्से सुनासुनाकर
भरमाकर जल में ले आना।

(जलपरी-बाला भीतर आती है)

कहां गयी थी?

बेटी

बाहर थल पर, मैं अपने
नाना से मिलने। हर दिन
वे अनुरोध यही करते रहते हैं,

नद-तल से मैं उन्हें ढूंढ सब पैसे ला दूं,
कभी उन्होंने जो फेके थे पास हमारे।
बहुत देर तक रही ढूंढती मैं तो उनको,
क्या होते हैं पैसे, मैं यह नहीं जानती,
लेकिन मैंने उनको ला दी
मुट्ठी भरकर, रंग-बिरंगी, चमचम करती हुई सीपिय
बहुत हुए खुश वे पा उनको।

जलपरी

वह कंजूस, लालची पागल!
बिटिया, मेरी बात सुनो तुम।
बस, तुमसे ही आशा करती। एक पुरुष आयेगा
आज हमारे तट पर। राह देखना उसकी,
उससे मिलने जाना।
उससे बहुत निकट का है सम्बन्ध हमारा,
जानो, वह है पिता तुम्हारा।

बेटी

यह है वही, कि जिसने तुमको त्याग दिया था
और किसी नारी से जिसने ब्याह किया था?

जलपरी

ठीक वही है। बड़े स्नेह से
तुम उसका अभिवादन
करना और बताना वह सब कुछ ही,
मुझसे अपने जन्म-विषय में
तुम जो कुछ भी जान गयी हो ,

मेरी जीवन-गाथा भी तुम उसे सुनाना।
और अगर वह पूछे, उसको भूल गयी
हूं या कि नहीं मैं, तो यह
कहना – मेरे मन मे सदा बसे वह,
प्यार उसे अब भी करती हूं
और बाट मैं जोह रही
उसके आने की। समझ गयी तुम?

बेटी

समझ गयी, मा।

जलपरी

तब तुम जाओ।

(स्वगत)

उस दिन से,
जब मैं तो अपनी सुध-बुध खोकर
अति हताश, अपमानित युवती
कूद गयी थी गहरे जल में,
और होश आया था मुझको दोबारा तल में
एक जलपरी बन कठोर औ' साहसवाली
सात बरस का लम्बा अर्सा बीत चुका है –
हर दिन ही यह रही सोचती –
कैसे उससे मैं बदला लूं,
मुझको लगता, आखिर आज घड़ी वह आयी।

तट

प्रिंस

मुझे एक अज्ञात शक्ति अनजाने खीच यहा
लाती है, दुखी तटो पर।
सब कुछ याद दिलाता मुझको
मेरे जीवन के अतीत की
स्मरण मुझे हो आती अपनी
वह स्वतत्र, सुख भरी जवानी,
बेशक दुख मे डूबी, फिर भी
बेहद प्यारी, मधुर कहानी।
कभी यहा पर मुझको मेरा प्यार मिला था,
मुक्त, सर्वथा मुक्त, दहकता हुआ ज्वाल-सा,
मैं था बेहद सुखी, मगर कितना पागल था!
ऐसे सुख को मैंने जाने दिया हाथ से, आसानी से।
कल जो भेट हुई थी उसने, मेरे मन मे
कैसे बोझल, कितने दुखमय भाव जगाये।
वह बदकिस्मत बाप! भयानक है वह कितना!
शायद उससे आज भेट फिर मेरी होगी,
और मान वह जाये आखिर वन को छोडे
साथ चले घर पर रहने को

(जलपरी-बाला तट पर आती है)

देख रही क्या मेरी आखे!
अरे, कहा से तुम आई हो, प्यारी बच्ची?

टिप्पणियां

ायेव के नाम (पृ० ६)

पुश्किन के एक घनिष्ठ मित्र, रूसी लेखक और दार्शनिक प्योत्र
ायेव (१७९४–१८५६) को सम्बोधित।

ीरे-धीरे लुप्त हो गया दिवस उजाला ..." (पृ० १०)

यह शोक-गीत, जैसा कि पुश्किन द्वारा अपने भाई को लिखे गये
से स्पष्ट है, कवि ने फ़ेओदोसिया से गुर्ज़ूफ़ की यात्रा के समय रचा।
र्ज़ूफ़ तक धूप नहाये तवरीदा* के तटों के साथ-साथ समुद्र-यात्रा
रात को जहाज़ पर मैंने शोक-गीत लिखा।

ा (पृ० १२)

यह कविता कवि की मानसिक स्थिति को अभिव्यक्त करती है।
ना कुछ वास्तविक घटनाओं के प्रभाव का परिणाम थी। ये
ाये थी – पुश्किन के मित्र, दिसम्बरवादी** व्लादीमिर रायेव्स्की

---

* क्रीमिया। – अनु०

** दिसम्बरवादी – कुलीन क्रान्तिकारी (फ़ौजी अफ़सर, जिनमें
र लेखक, कवि और समालोचक शामिल थे), जिन्होंने पूरी चेतना
सगठित रूप में १८२५ में निरंकुश शासन और भूदास-प्रथा के
ह विद्रोह किया। यह विद्रोह १४ दिसम्बर को हुआ था और
लिये विद्रोहियों को दिसम्बरवादी कहा जाता है। – सं०

; त्रिमिनेव की जेल में बन्दियों से बातचीत और फिर
क घर में बन्दी रखे गये पुश्किन का व्यक्तिगत अनुभव।
लोकप्रिय लोक-गीत बन गया है।

(० १३)
विता पुश्किन के ओदेस्सा से विदा लेने से सम्बन्धित है।
एक साल बिताया और इसके बाद वे अपने नये निर्वास-
इलोव्स्कोये गाव के लिये रवाना हुए।

चट्टान, समाधि है एक अमर – यहा सेट हेलेना द्वीप
ते है, जहा नेपोलियन १८१५ से बन्दी रहा और जहा
उसका देहान्त हुआ।

न्य मेधावी ने हमको छोड़ा.. उसके शव पर बेहद रोई
–प्रमुख अंग्रेज कवि बायरन, जो १९ अप्रैल १८२४ को
इस दुनिया से चल बसे। यूनान में उन्होने यूनानी जनता के
आन्दोलन में भाग लिया।

ाम (पृ० १६)
कविता आन्ना पेत्रोव्ना केर्न (१८००–१८७९) को समर्पित
२६ में पीटर्सबर्ग में पुश्किन का उससे प्रथम परिचय हुआ।
व्स्कोये गाव में अपने निर्वासकाल के समय १८२५ की
पुश्किन की उससे फिर भेंट हुई, जब वह पड़ोस के त्रिगोर्स्कोये
किसी के यहा मेहमान के रूप में आई थी।

शाम (पृ० १७)
कविता मिखाइलोव्स्कोये गाव में पुश्किन के जीवन का चित्र
करती है। कवि ने अपनी आया अरीना रोदिओनोव्ना को इसे
किया है, जिसके बारे में उन्होंने लिखा था–"शामो को अपनी
से किस्से-कहानिया सुनता हूं वही मेरी एकमात्र मित्र है,
वल उसी के साथ मुझे ऊब अनुभव नही होती।"

युवती ...
दुख की छाया — सम्भवत मारिया गायेव्स्काया की ओर
उससे पुश्किन १८२० में उत्तरी काकेशिया में मिले थे।
सेर्गेई वोल्कोन्स्की की पत्नी बनकर गायेव्स्काया पति के
के निर्वास-स्थान यानी साइबेरिया चली गयी थी।

२४)
—एक विष-वृक्ष, जो जावा तथा मलेशिया में उगता है
रहनेवाले कबीले उसके रस से अपने तीरों को विषैला बनाते

कविता के दूसरी बार छपने पर पुश्किन ने ज़ार की
" शब्द लिख दिया था। निश्चय ही उन्हें विवश होकर
नि करना पड़ा था, क्योंकि कविता के पहली बार छपने
ों के संचालक बेनकेनदोर्फ़ ने बहुत नाराज़गी ज़ाहिर की थी।

के गिरि-टीलों को रात्रि-तिमिर ने घेरा है. " (पृ० २५)

लिखित, प्रारम्भिक रूप में उपलब्ध इस कविता की प्रति से
जाता है कि वह १८२० की गर्मियों में जनरल रायेव्स्की के
के साथ पुश्किन की प्रथम काकेशिया-यात्रा और मारिया
ा-वोल्कोन्स्काया के प्रति कवि के प्रेम से अनुप्रेरित है।

ा (पृ० २६)

कविता का प्रेरणा-स्रोत वे प्रभाव हैं जो १८२६ के मई से
महीने की पुश्किन की काकेशिया-यात्रा के समय उनके मन पर पड़े।

, सुडौल सुन्दरी तुमको ..." (पृ० ३०)

वि की मंगेतर न० न० गोंचारोवा को सम्बोधित।

ी चाह लेकर भागता है, पुश्किन ऐसे वातावरण में ले आते हैं जह
न तो कोई कानून-कायदे हैं, न किसी तरह की मजबूरियां हैं, और
पारम्परिक दायित्व है। यहीं पर यह बात स्पष्ट होती है कि अप
लिये स्वतन्त्रता की मांग करनेवाले अलेको दूसरों को इसी तरह क
आज़ादी नहीं देना चाहता, यदि इससे उनके हितों और अधिकारों क
क्षति पहुंचती है।

इस तरह पुश्किन ने अपने इस खण्ड-काव्य में परम्परागत रोमानी
स्वतन्त्रता-प्रेमी नायक और निरपेक्ष रोमानी आज़ादी के आदर्श
भी खण्डित किया है।

व्यक्ति और समाज के पारस्परिक विरोधों-असंगतियों पर प्रका
डालनेवाली ये सभी समस्यायें दिसम्बरवादियों के विद्रोह के पहले
वर्षों में विशेषकर बहुत महत्त्वपूर्ण थीं। इसीलिये उनके क्षेत्रों में पुश्कि
की इस लम्बी कविता को बड़ी लोकप्रियता प्राप्त हुई। दिसम्बरवा
कवि रिलेयेव ने २५ मार्च १८२५ के अपने पत्र में पुश्किन को लिखा
"'जिप्सी' पर तो सब दीवाने हैं।"

क़िस्सा एक सुना, वह तुम्हें सुनाता हूं... – सम्राट आगस्
ने रोम के ओविडी कवि को काले सागर के तटों पर निर्वासित
दिया था। उसके जीवन के बारे में बेस्साराबिया में दन्तकथाए प्रचलि
हैं (पृ० ५४)

...जहां रूसियों ने तुर्कों को लोहा मनवाया और किया था विस
अपनी सीमा का आंचल – बेस्साराबिया बहुत समय तक रूसी-तु
युद्धों का क्षेत्र बना रहा। १८१२ में वहां रूस और तुर्की के बीच स
निर्धारित की गयी। (पृ० ७३)

तांबे का घुड़सवार (पृ० ७५)

१८३३ में लिखा गया यह खण्ड-काव्य पुश्किन की एक सबसे
साहसपूर्ण और कलात्मक दृष्टि से परिमार्जित रचना है। इस
काव्य में सामान्यीकृत बिम्बात्मक रूप में एक-दूसरी की [illegible]

"क्या रखता है अर्थ तुम्हारे लिये नाम मेरा?" (पृ॰

पुश्किन ने यह कविता प्रसिद्ध पोलैंडी सुन्दरी कारोलीना
के एलबम में लिखी थी। पुश्किन की १८२१ में कीयेव में
पहचान हुई थी और बाद को ओदेस्सा और पीटर्सबर्ग में
मिले।

'मेरी प्यारी, वह क्षण आया, चैन चाहता मेरा मन..."

पत्नी को सम्बोधित करके लिखी गयी इस कविता में
स बात की तीव्राभिलाषा व्यक्त की है कि वह सेवानिवृत्त
टर्सबर्ग, राजदरबार और ऊंचे समाज से अपने को अलग
जा बसे और वहां स्वतन्त्र सृजनात्मक जीवन व्यतीत करे।

निर्मित किया स्मारक अपना, नहीं रचा, पर हाथों से..." (
यह प्राक्कथा प्राचीन रोम के होरात्सिओ कवि की 'मे
प्रति' कविता से लिया गया है।
पुश्किन ने कवित्वपूर्ण सम्बोधन में अपने सृजन का सार नि

विजय-मीनार सिकन्दर की – ग्रेनाइट के उस स्तम्भ
रा है, जो पीटर्सबर्ग के प्रासाद-चौक में सम्राट अलेक्सान्द्र
ति में खड़ा किया गया।

सी (पृ॰ ४७)

पुश्किन का अन्तिम रोमानी खण्ड-काव्य। १८२४ में
रोमानी प्रवृत्ति वाले अपने निर्वासित नायक को, जो सभ्य
जहां शारीरिक और नैतिक दासता का बोलबाला है, मुक्ति

---

* मेल्पोमेना – यूनानी पौराणिक साहित्य की कला-देवियों
– स॰

"क्या रखता है अर्थ तुम्हारे लिये नाम मेरा?" (पृ० ३१)

पुश्किन ने यह कविता प्रसिद्ध पोलैंडी सुन्दरी कारोलीना सोबान्स्का के एलबम में लिखी थी। पुश्किन की १८२१ में कीयेव में उससे जा पहचान हुई थी और बाद को ओदेस्सा और पीटर्सबर्ग में भी वे उस मिले।

"मेरी प्यारी, वह क्षण आया, चैन चाहता मेरा मन ..." (पृ० ४१

पत्नी को सम्बोधित करके लिखी गयी इस कविता में पुश्किन ने इस बात की तीव्राभिलाषा व्यक्त की है कि वह सेवानिवृत्त हो जाये, पीटर्सबर्ग, राजदरबार और ऊंचे समाज से अपने को अलग करके गांव जा बसे और वहां स्वतन्त्र सृजनात्मक जीवन व्यतीत करे।

निर्मित किया स्मारक अपना, नहीं रचा, पर हाथों से ..." (पृ० ४३)

यह प्राक्कथा प्राचीन रोम के होरात्सिओ कवि की 'मेल्पोमेना* प्रति' कविता से लिया गया है।

पुश्किन ने कवित्वपूर्ण सम्बोधन में अपने सृजन का सार निकाला है।

विजय-मीनार सिकन्दर की – ग्रेनाइट के उस स्तम्भ की तरफ़ ारा है, जो पीटर्सबर्ग के प्रासाद-चौक में सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम की ति में खड़ा किया गया।

सी (पृ० ४७)

पुश्किन का अन्तिम रोमानी खण्ड-काव्य। १८२४ में रचित। रोमानी प्रकृति वाले अपने निर्वासित नायक को, जो सभ्य समाज जहां शारीरिक और नैतिक दासता का बोलबाला है, मुक्ति पाने

---

* मेल्पोमेना – यूनानी पौराणिक साहित्य की कला-देवियों में से । – सं०

और सालेरी (पृ० १४३)

काव्य-नाटिका १८३० में लिखी गयी, किन्तु इसका विचार मस्तिष्क में १८२६ में आया था। यह नाटिका १८३१ में न हुई।

पुश्किन ने इस अफवाह को इस विषयवस्तु का आधार बनाया वियेना के स्वरकार सालेरी ने ईर्ष्यावश साथी मोजार्ट को देकर मार डाला। मोजार्ट की १७९१ में पैंतीस वर्ष की आयु मृत्यु हुई और उसे इस बात का पूरा विश्वास था कि जहर देकर मारा गया है। सालेरी (वह मोजार्ट से छः वर्ष बड़ा था) तो बूढ़ा होने तक जीता रहा (१८२५ में मरा)। जीवन के अन्तिम दिनों में मानसिक रोग से बहुत खिन्न रहा और इस बात के लिये उसने अनेक बार पश्चात्ताप प्रकट किया कि मोजार्ट को जहर दिया। इस के बावजूद कि उन्हीं दिनों में इन दोनों स्वरकारों के कुछ परिचितों और बाद में संगीत इतिहासकारों तथा मोजार्ट के जीवनी-लेखकों ने इस अपराध का निर्णायक रूप से खण्डन किया, यह प्रश्न अभी तक पूरी तरह से तय नहीं हुआ है।

मोजार्ट को उसके मित्र सालेरी द्वारा जहर देने से सम्बन्धित तथ्य को पुश्किन ऐसा मानते थे जिसकी पुष्टि हो चुकी है और मनो-वैज्ञानिक दृष्टि से जो सर्वथा सम्भव है। सालेरी के बारे में अपनी टिप्पणी में पुश्किन ने लिखा है :

"'डॉन जुआन' के प्रथम प्रस्तुतीकरण के समय, जब विभिन्न संगीत-पारखियों से खचाखच भरा हुआ थियेटर चुपचाप मोजार्ट के सम्पूर्ण संगीत का रसपान कर रहा था, किसी ने जोर से सीटी बजायी। सभी ने गुस्से से उस तरफ देखा और विख्यात सालेरी ईर्ष्या से जला-भुना हुआ पागल की तरह हॉल से बाहर चला गया... कुछ जर्मन पत्र-पत्रिकाओं ने लिखा है कि मृत्यु-शय्या पर मानो उसने महान मोजार्ट

शक्तियां सम्मुख खडी है। एक शक्ति तो पीटर प्रथम* के रूप
राज्य सत्ता का प्रतिनिधित्व करती है (जो बाद में 'तांबे के घुड़सवार
के रूप में प्रतीकात्मक रूप में सजीव है) और दूसरी शक्ति के रू
में है अपने निजी हितों और दुख-दर्दों के साथ मानव। पीटर प्रथम
की चर्चा करते हुए पुश्किन किसी भी तरह के अगर-मगर के बिना
उसके महान राजकीय कार्य और उसके द्वारा निर्मित भव्य नगर की
प्रशंसा करते हैं। किन्तु यही राजकीय सूझ-बूझ एक सीधे-सादे,
साधारण और निर्दोष व्यक्ति यानी येव्गेनी की बरबादी का कारण
बनती है।

'तांबे का घुड़सवार' खण्ड-काव्य पुश्किन के जीवनकाल में नहीं
छपा था, क्योंकि ज़ार निकोलाई प्रथम ने कवि से इसमें ऐसे परिवर्तन
करने की मांग की जो उन्होंने नहीं करने चाहे। पुश्किन की मृत्यु के
बाद कवि वसीली जूकोव्स्की ने इसे ठीक-ठाक करके प्रकाशित कर-
वाया।

इस लम्बी कविता में जिस बाढ़ का वर्णन है, वह ७ नवम्बर
१८२४ को पीटर्सबर्ग में आई थी, बहुत ही भयानक थी और उसने
ड़ी तबाही हुई थी। पुश्किन उस समय मिखाइलोव्स्कोये में रह रहे
, उन्होंने बाढ़ की सभी तफ़सीलों में बड़ी दिलचस्पी ली और उसके
कार होनेवालों के प्रति हार्दिक सहानुभूति अनुभव की। "यह बाढ़
झे पागल किये दे रही है", उन्होंने ४ दिसम्बर १८२४ के पत्र में
पने भाई को यह मानते हुए कि सरकार द्वारा उठाये गये क़दम पर्याप्त
हीं हैं, लिखा तथा इतना और जोड़ दिया – "अगर तुम किसी बदकि-
त की मदद करना चाहो, तो ओनेगिन की रक़म (अर्थात 'येव्गेनी
नेगिन' के पहले अध्याय के प्रकाशन से प्राप्त) से मदद करो।
तु किसी भी तरह का ज़बानी या लिखित रूप में ढोल पीटे
।"

---

* पीटर प्रथम (१६७२–१७२५) रूसी ज़ार, महान राजकीय
र्ता। – सं०

पाषाणी अतिथि (पृ० १६६)

यह काव्य-नाटिका पुश्किन ने १८३० की पतझर में बोल्दीनो में समाप्त की थी, यद्यपि इसका कथानक उन्होंने कई वर्ष पहले सोच लिया था। पुश्किन के जीवनकाल में यह प्रकाशित नहीं हुई थी।

यह नाटिका मानवीय चित्तवृत्ति के विश्लेषण को समर्पित है - इसमें प्रेम-सम्बन्धी भावावेश या मनोवृत्ति को ऐसे व्यक्ति के भाग्य को केन्द्र-बिन्दु बनाया गया है, जिसने प्रेमावेश को अपने जीवन का मुख्य सार बना लिया था। पुश्किन की इस रचना में डोन जुआन का बिम्ब विश्व-साहित्य में उसके पूर्वगामियों के समान नहीं है। यह निश्छल व्यक्ति है, निस्स्वार्थ भाव से मोह में फंसनेवाला, दृढ़-संकल्पी, साहसी और साथ ही काव्यमय है। नारियों के प्रति उसका रवैया भावनाहीन लम्पट, औरतों को अपने चंगुल में फांसनेवाले का नहीं है, बल्कि उसमें हमेशा सच्चा और आवेशपूर्ण लगाव रहता है। डोना आन्न उसका अन्तिम और वास्तविक प्रेम है। किन्तु उनका सूत्रबद्ध होना सम्भव नहीं। पुश्किन की नाटिका में कमांडर का बुत वह निठुर और अटल "भाग्य" है जो डोन जुआन को उस समय नष्ट कर देता है जब वह अपने सुख-सौभाग्य के निकट होता है। डोना आन्ना के प्यार के प्रभाव से डोन जुआन का चाहे कितना भी "पुनर्जन्म" क्यों न हुआ, फिर भी उसके अतीत, उसके चंचल, मस्त-फक्कड़ जीवन उसके द्वारा की गयी बुराई को नष्ट नहीं किया जा सकता, पत्थर के बुत की तरह वह अभेद्य है।

पुश्किन ने इसकी प्राक्कथा मोत्सार्ट के 'डोन जुआन' ऑपेरा के लिये डा पोन्टे द्वारा लिखे गये काव्य-पाठ से ली है।

जलपरी (पृ० २२१)

पुश्किन ने १८२९ और १८३२ में इस नाटिका को लिखा, किन्तु पूरा नहीं किया। पुश्किन की मृत्यु के बाद 'सोव्रेमेन्निक' (समकालीन) पत्रिका में इसे १८३७ में प्रकाशित किया गया। प्रथम प्रकाशन के समय सम्पादक मण्डल ने इसको 'जलपरी' शीर्षक दिया।

जहर देने के इस भयानक अपराध को स्वीकार किया था। ईर्ष्या
...लेरी यदि 'डोन जुआन' को सुनते हुए सीटी बजा सकता था, तो वह
...के रचयिता को ज़हर भी दे सकता था।"

इस त्रासदी का मुख्य विषय तो आवेश के रूप में ईर्ष्या को बता
...ना है जो इसका शिकार होनेवाले व्यक्ति को भयानक अपराध
...सीमा तक ले जा सकता है। किन्तु मोत्सार्ट के प्रति सालेरी का
...भाव केवल ईर्ष्या के कारण ही नहीं है। मोत्सार्ट की हत्या करने
...बात को वह कला के सम्मुख अपना कर्तव्य मानता है। कला और
...न के प्रति मोत्सार्ट की धारणा के कला के लिये हानिकारक होने
...गलत विचार सालेरी से अपराध करवाता है, किन्तु उसकी विजय
...होती। मोत्सार्ट अनजाने ही एक विचार को व्यक्त करता है, किन्तु
...विचार महान है "प्रतिभा और नीचता दोनों संग न रहतीं" –
...सुनकर सालेरी की चेतना में बिजली-सी दौड़ जाती है, पर अपराध
...जा चुका था

'मोत्सार्ट और सालेरी' ही पुश्किन की एकमात्र नाटिका है जो
...के जीवनकाल में रंगमंच पर प्रस्तुत की गयी (पीटर्सबर्ग के
...ाई थियेटर में २७ जनवरी और १ फरवरी १८३२ को मंचित)।

'इफीगेनी' – जर्मन स्वरकार ग्लूक के एक ऑपेरा से अभिप्राय
– पृष्ठ १५०

voi che sapete – मोत्सार्ट के 'फिगारो की शादी' ऑपेरा
...र्केरूबीनो के प्रेम-गीत की ओर संकेत है। – पृष्ठ १५१

[illegible] – बोमार्शे के पत्र पर सालेरी का ऑपेरा। – पृष्ठ १५२

[illegible] – [illegible], उस बोमार्शे की? ... कि [illegible]
[illegible] से वह [illegible] – उस [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] – पृष्ठ १५३

पाषाणी अतिथि (पृ० १६६)

यह काव्य-नाटिका पुश्किन ने १८३० की पतझर मे बोल्दीनो में समाप्त की थी, यद्यपि इसका कथानक उन्होने कई वर्ष पहले सोच लिया था। पुश्किन के जीवनकाल मे यह प्रकाशित नही हुई थी।

यह नाटिका मानवीय चित्तवृत्ति के विश्लेषण को समर्पित है–इसमे प्रेम-सम्बन्धी भावावेश या मनोवृत्ति को ऐसे व्यक्ति के भाग्य को केन्द्र-बिन्दु बनाया गया है, जिसने प्रेमावेश को अपने जीवन का मुख्य सार बना लिया था। पुश्किन की इस रचना मे डोन जुआन का बिम्ब विश्व-साहित्य मे उसके पूर्वगामियो के समान नही है। यह निश्छल व्यक्ति है, निस्स्वार्थ भाव से मोह मे फसनेवाला, दृढ़-सकल्पी, साहसी और साथ ही काव्यमय है। नारियो के प्रति उसका रवैया भावनाहीन लम्पट, औरतो को अपने चगुल मे फासनेवाले का नही है, बल्कि उसमे हमेशा सच्चा और आवेशपूर्ण लगाव रहता है। डोना आन्ना उसका अन्तिम और वास्तविक प्रेम है। किन्तु उनका सूत्रबद्ध होना सम्भव नही। पुश्किन की नाटिका मे कमाडर का बुत वह निठुर और अटल "भाग्य" है जो डोन जुआन को उस समय नष्ट कर देता है जब वह अपने सुख-सौभाग्य के निकट होता है। डोना आन्ना के प्यार के प्रभाव से डोन जुआन का चाहे कितना भी "पुनर्जन्म" क्यो न हुआ, फिर भी उसके अतीत, उसके चचल, मस्त-फक्कड जीवन, उसके द्वारा की गयी बुराई को नष्ट नही किया जा सकता, पत्थर के बुत की तरह वह अभेद्य है।

पुश्किन ने इसकी प्राक्कथा मोजार्ट के 'डोन जुआन' ऑपेरा के लिये दा पोन्टे द्वारा लिखे गये काव्य-पाठ से ली है।

जलपरी (पृ० २२१)

पुश्किन ने १८२६ और १८३२ में इस नाटिका को लिखा किन्तु पूरा नही किया। पुश्किन की मृत्यु के बाद 'सोव्रेमेन्निक' (समकालीन) पत्रिका में इसे १८३७ मे प्रकाशित किया गया। प्रथम प्रकाशन के समय सम्पादक मण्डल ने इसको 'जलपरी' शीर्षक दिया।

अन्य दुखान्ती नाटिकाओ की तुलना मे 'जलपरी' अपने रूसी
-स्वरूप की दृष्टि से निराली है। इसकी विषय-वस्तु, पात्रो के
त्रो, नाटिका की साधारण घटनाओ और भाषा मे इस लोक-स्वरूप
अनुभूति होती है। पुश्किन ने जलपरियो के बारे मे विस्तृत रूप से
लित इस उपाख्यान को आधार बनाया है जिसके अनुसार तबाह कर
गयी और डूब जानेवाली लडकियां मृत्यु के बाद जलपरिया बन
ी हैं।

पाठकों से

प्रगति प्रकाशन इस पुस्तक के अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त करके भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी।

हमारा पता है

प्रगति प्रकाशन १७, जूबोव्स्की बुलवार
मास्को, सोवियत संघ।